ANNUAL REPORT

ON THE

SEARCH FOR HINDI MANUSCRIPTS

FOR THE YEAR)1903

ĹΨ

SYAMSUNDAR DAS, B.A.,

Honorary Secretary, Nagari Pracharini Saliha; Member, Asiatic Society of Bengal;
Second Master, Central Hindu Collegiate School; &c., &c.

Published under the authority of the Government of the United Province



ALLAHABAD:

Printed at the United Provinces Government Press.

1 9 0 5.

CONTENTS.

Report	•••			page -	1 to 2
Notices of Hindi	Manuscrip	ts	1-1-0		3 to 85
Appendix I	•••	•••	***	•••	87 to 90
Index I, Names o	f authors	•••	***	• 3 •	91 to 94
Index II, Names	of manuser	ipts noticed		•••	95 to 96



REPORT.

This is my fourth Annual Report on the Search for Hindi Manuscripts. The greater portion of the year 1903 was devoted to the examining of the library of the Mahárájá of Benares and in all 186 manuscripts were noticed there. Notices of 8 other books (Nos. 1 to 8) were kindly sent to me by Pandit Chandradhara Śarmá, B.A. (Jaipur). So that in all 194 manuscripts were noticed. Of these complete notices of 135 are given in this Report and a tabular statement of the rest (59) is given in Appendix 1. Out of the manuscripts noticed in the library of the Mahárájá of Benares, 14 books have 2 or 3 copies. (1) Consequently 177 books have in all been noticed.

In the appendix I have given information about such of the manuscripts as did not appear to me to be of any great importance and as had been noticed in the previous years. I propose to follow this procedure in all future reports of mine on this subject.

Out of 135 manuscripts of which complete notices are given, 129(2) have been found to be the work of 71 authors, whose ages are as follows.—

14th cent	ury		***	•••		1
16th ditt	to	'		• • •		3
17th ditt		***		***		18
18th dia	to					26
19th ditt	to		***		• • •	23

The dates of the remaining six authors could not be ascertained. (3)

The statement in appendix I contains information about 59 manuscripts, 46(4) out of which have been ascribed to 35 authors, the dates of 19 of whom are as follows:—

```
3
16th century
                                                                                    7
17tb
      ditto
                                                  . . .
                                    ...
                                                               ...
18th
        ditto
                                                                                    4
                      . .
                                    ...
                                                  ...
                                                                •••
19th
        ditto
```

The dates of the remaining 16(5) authors could not be fixed.

Among the authors whose work have been fully noticed and those whose work are mentioned in Appendix I, the following eight names are common:—

```
Chintámani (17th century).

Deva (17th century).

Gokulanátha (19th century).

Manohara Dása (!).

Saradára (19th century).

Sundara (17th century).

Tulasí Dása (17th century).

Viswanátha Singha (19th century).
```

Most of the manuscripts noticed are in verse, but there are some which are in prose also, and that of course in its Braja dialect. The majority of these manuscripts were copied out in the 18th and 19th centuries. (6) Only 6 were copied out in the 17th century.

⁽⁴⁾ See Nos. 19, 21, 55, 65, 79, 104, 108, 133-34, 138-39, 145-46-47, 153-54, 155-56, 158-59, 167-68-69.

⁽²⁾ Sec Nos. 2, 3, 8, 10, 69, 76.

⁽³⁾ Sec Nos. 6, 12, 27, 83-84, 93, 94.

⁽⁴⁾ See Nos. 171 to 186.

⁽⁵⁾ See Nos. 128, 129, 130, 131, 132, 136, 143, 148, 149, 151, 152, 157, 160, 161, 166, 171.

^{(6) 18}th century-143, 19th century-153.

? REPORT.

The character in which these manuscripts are written is mostly Devanagari, only in a few cases it is Kaithi.

In my report for 1900 I wrote that from the beginning of the 18th century to the present day, India could only produce commentators and second-rate poets, who were more or less the imitators of the great illustrious masters who , had flourished during the two preceding centuries. In continuation of these remarks it may be stated that during the 18th and 19th centuries, there were four different centres of literary activity in Upper India, in so far, of course as Hindi is concerned. These centres were Bundelkhand, Baghelkhand, Oudh and It is difficult to add anything to what has already been written by several eminent authors about the literary history of the first three centres. I am sure that the examination of the library of His Highness the Mahárájá of Benares alone, when completed, will throw a flood of light on the history of the fourth centre. I, therefore, postpone my general remarks about the works noticed this year to 1904, by which time I hope to be able to finish the examination of the Mahárájá's library and then to be in a position to say something definitely about the poets of Benares and their patrons.

Lahori Tola, Benares:

The 4th of April 1904.

SYAM SUNDAR DAS.



Notices of Bindi Manuscripts.

Amareia Vilása—Translation of 108 slokas of Amaru Šaṭaka made by the poet Nílakantha in Vikrama Samvaṭ 1698 (1641 A.D.). This Nílakantha was probably the brother of the great poet Chintámaṇi, Bhúṣaṇa and Maṭi Ráma. The manuscript is dated Samvaṭ 1808 (1751 A.D.).

Beginning.—डों मी, गयोशाय नम: ॥ ऋष ॥ ऋमरेश विलास लिख्यते ॥ ता मुक्त तिहु भवन सारि वाहन जमु जान्ये। । तेग त्याग वड भाग जामु गुन गुनिन बषान्ये। ॥ वीर वीर मितः धीर उद्धि गंभीर धुरंधर । जगजीत सेचि नीत परम हिन्द पुनीत वर ॥ महिपाल मिलि नव मुकुट मिण दुख भंजन दुर्जन दंवन । किंव नीलकंठ इमि उपजिह मुवीरल ऋषिन ऋषिनी रवन ॥ १ ॥ विरचि नेग कर गहे रारि संहिन सुन मंडे ॥ देशि दुऋन दलमले मस्तग्त कुंभ विहेंडे ॥

. End.— सबैगा ॥ काम के प्यास तें कामिनि के जबिह तें पिर अधरा सधरा में । जीन सुधारस हूं ते अनुषम या विधि और कही रस कामें । कंठ कहें तबतें बहुती विधि दुगुन आम बढ़ी फिरि वामे । ताकी अवंभी कहा करिर हैं। जीप बलीन लनाई है तामें । १०० इति श्रीमन्मिह्यालमीलिमुकुटविंतामी श्री महाराजाधिराज श्री अमरसिंह देव विलासाख्यो नीलकंठ कृत समाप्र: शुभमस्तु। वरप से सारह ठानवें सातें सावन मास। नीलकंठ कि उद्यरिय श्री अमरेस विलास। संबत् १००० चैचे मासे कृष्ण पर्व रिव वासरे प्रतिपदा तिथा हरिपुर नगर वसते जालंधर चेचे वाण गंगा महिमां लियतं प्रीहित मनसाराम जी श्री जालपाय नम: शुभं भूगात्॥

Subject.—श्रमस्थातक के १०८ श्लोकों का श्रमुवाद ।

Note.—ग्रन्थ अन्तिम दोहे के अनुसार संवत् १६६८ श्रावण की सप्रमी के। किव ने वनाग्रा है तथा जिस प्रति की ग्रह ने। टिस है वह हरिपुर में संवत १८०८ चेत्र कृष्ण १ को। पुरोहित मनसाराम ने लिखी थी। ग्रन्थकार ने ग्रद्याप श्रादि के रूपयों में "वीरसिंह" राजा की स्तृति की है किन्तु छठें श्रीर सातवे छप्पय में "राम" "श्रमरेश" की स्तृति से मिल जाने से यह ऐतिहासिक तागा कच्चा मालूम देता है। कदाचित भूषण प्रभृति चार भाइयों में से ग्रह नीलकण्ठ हो।

No. 2.—বৃহ্বানেক স্থাব ঘাসুক মাস Verse. Substance — country-made paper. Leaves—9. Size—4 x 8 inches. Lines—11 on a page. Extent—185 slokas. Appearance—ordinary. Complete. Generally incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Bhatta Divákar Ráya, Gulera, district Kángrá.

Vrihajátáka and Rájamúka Prašna—A book on Hindu Astrology. The name of the author is not given. The manuscript is dated Samvat 1744 (1687 A.D.).

Beginning.—डों स्वस्ति मी गयोशायनमः। म्रय वृह्ह ज्ञातक ॥ दोहरा ॥ जवि मुविन्दु पितु गर्भ मेा नृस्त जठर मधि होइ ॥ पूछे प्रश्न विचारि के मादि मन्त कहु से ई ॥ ९ ॥ नारि प्रमुती कालि कें। विय भागमनि धन धाम । सभ प्रकार विधि लिखित हो वृहजातक धरि नाम ॥ २ ॥ श्रथ गर्भ निर्मित विन्द समे कहत हैं। । दे हिरा ॥ जन्म लग्न तिथि तीसरी दिन भी तीसरी जानु ॥ मांस चवत्था लीजिया पंचम लग्न प्रधानु ॥ ३ ॥ विन्दु निर्मिया गर्भ मा मात तात निज दे । ॥ वैकुंठ प्रश्न विन्दहि कह्यो जानहु निश्चय सिर्ह ॥ ४ ॥

End.—पहानु २६ कटु पुहप कुल कहत है। वामु बिना पुष देषु सिधा पुष फर्गो में निन्दी यो येतक कीतुक मानि २० कपूर वासना गुरु विषे चीत्रा चन्द्र पिषंत वटणा बुध पश्चानीयो वैकुंठ कहत सित वात २८ चन्द्रन रित्र गुरु दृष्टि हुई भृगु ऋंग निल भाषु हटा तल शिश लीव गुनु प्रश्न सुचित धरी राषु २६ सेंदुर ऋगर रंधन सुगुह्र स्वेत काष्ट्र भृगुकेतु यही मूक सम लानियो वैकुंठ प्रश्न किर हेतु ८० इति श्री राजमूक प्रश्न समाप्त ॥ शुभं ॥ सं० १०४४ फान्गुन विद २ बुधे लिखतं॥

Subject.—फलित च्यातिष का यन्थ है।

Note.—- ग्रन्थकर्ता का तथा उसके समय का पता नहीं। जिस प्रति से यह नेटिस की गई है वह संवत् १०४४ की लिखी है।

No. 3.—ungu Verse. Substance—country-made paper. Leaves—3. Size — $8 \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines—19 on a page. Extent—59 slokas. Appearance—new. Incomplete. Incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Bhatta Divákara Ráya, Gulera, district Kángrá.

Prána Sukha—A book on Vaidyaka, written by a Muhammedan author in the reign of S'áhajahán in 1711 (1654 A.D.). The book is incomplete.

Beginning.—डों स्विम्ति श्री गणेशायनम: श्रथ प्राण्णुष लिख्यते ॥ चौपाई ॥ जब धरवेश हकीम प्रकाने राज तब गड कैलास भा श्री राज गड कैलास की ऐसी गतीया बेलि साँचे भूठ न रतीया पंडत वैद अनेक कवीसर मुनिजन साथ महा जोगेसर इसा सब जंबी अस अग अथारी टुक नाटक लूप अस पवन श्रहारी इक लिए तवीत चबीरे भूज इक बय रेकिर दिपलाई भूत इक हाफिज़ का ताव दानिसबंद इक नानिक वाणी कहत मसंद हस्ती टुस्तर लावा रमाली बहुं जानत तामे केती चाली इक जे।तक वाच प्रकाने मन की इक अति विराल नवूकत तन की इक करे रसायन साथे थात वह साच न बेलि आथी बात इक सुश्राली अस सेप कहावे पथ र सेती जो कल गावे पेग्यो का संबत्॥ दोहा ॥ संवत पेग्यो इसका लिख्या कही गुनी जहगीर वारे साहजहान के हाकम जू सब मीर ॥ दोहा ॥ इक हजार अस पेंड्मठा सब नवों का पाइ मतरा से अर ग्यारवां संवत विक्रम राइ चाली इसके पाछे बैदक बोली कहत न भूठो साची तोली जिस सिर निवही वारह चक्र चोहाम भवन विषम भुपति नरपति साहजहां बलवंत ॥ ४॥

End.—दोहा ॥ जिस रोगी का बल घटे रंच ना छुध्या हे। इतिस रोगी परि पंडितो सिरिह उठावो रोइ ॥ १६ ॥ दोहा ॥ मुष पीला स्वामु उजलामिच मिलाना हेत तिस रोगी ते बहद के। तारा करीयो चेत ॥ १० दोहा.....

Subject.—वैदाक का यन्य है। इन तीन पर्चा में केवल "रितु परीचा" "कर्म लच्चण" ब्रीर "क्वर परीचा" लिखी है॥

Note.—शाहजहां के समय में हिजरी सन् १०६५ में, विक्रम सं⁰ १०११ (?) में यह यन्य लिखा गया ॥

No. 4.— प्रशासक Verse. Substance—country-made paper. Leaves—75. Size—5¼ × 4 inches. Lines—13 on a page. Extent—602 ślokus. Appearance—new. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Bhatta Divákara Ráya's Library, Gulera, district Kángrá.

Astávakra.—Dealing with some of the principles of Vedántism by one Mohana, who lived at Mathura and composed this book in Samvat 1667 (1610 A.D.) when Jahángíra was on the throne of Delhi. The manuscript is dated Samvat 1714 (1657 A.D.).

Beginning.—स्वस्ति भी गयेशाय नमः ॥ ऋष्टावक्र मोहन कृत लिष्यते ॥ चेषाई ॥ नमा आत्मा सहज सनेही ॥ ॥ परमानंद प्रगट घर देही ॥ श्रापा एक श्रनेक दिषाया ॥ ठीर ठेर ले मनु विरमाया ॥ श्रापे रंकु श्राप भूपाला ॥ श्रापे तहन विरय भए बाला ॥ श्रापे पुरष श्राप हो नारी ॥ श्राप माहि मिल कोन्ह चिन्हारी ॥

End.—दोहा " जा यह बाचे जा सुने उपने श्रीमत तरङ्ग " मोहन भेटे भावता सहज सनेही संग " २०० " चैपाई " सेलहसे सतसठा सुनाहा । सावन पड़वा बुध दिन राहा " जहांगीर श्रादित कर राजू । श्रक्वर तन साहन सिरताजू " राइ रंक की निष्टं समताई " राज सुजस थिर सदा रहाई " श्राप श्राप मग जा जिहि भावे । कीउ काहू की नहीं चलावे " सभे पंथ मतही कर तारा " जो सरता निधि मिलिह श्रपारा " देस सक राजे जो देही " जो मथुरा पुर कीर सनेही " सदा नगर स्थो गुन हद नाचा " पिल श्रमिति मिह एके सांचा " २०० " दोहा " मोहन मथुरा मिह बसे कीनी कथा बनाइ श्राप इत पुरन सकल समें सहज सुभाइ " २०० " इति श्री सहज सनेही श्रपावक्र मेहन कृत संपूर्ण " "रघुनाथ " संवृत् १००४ श्रस्वन बदी ० सनि वासरे लिखितं मिश्र जगत राइ विधीचन्द पाठगार्थ लेपक पाठकयो शुभं "

Subject.—तत्व विचार का अद्वेत वेदान्त, माया वाद प्रभृति के अनुकूल ग्रन्थ है।

Note.—जहांगीर के समय में मथुग में रह कर "मोहन" ने (जिनका उपनाम सहज
सनेही प्रतीत होता है) मंबत् १६६० में श्रावन की एड़वा के। यह ग्रन्थ बनाया।

यह प्रति सं १९१४ आधिवन बदी २ की लिखी गई थी।

No. 5.—বারৌ বাঁবি Verse. Substance—country-made paper. Leaves —66. Size—8½ × 5⅓ inches. Lines—15 on a page. Extent—928 ślokas. Appearance—new. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Bhatta Divákara Ráya's Library, Gulera, district Kángrá.

Chandt Charitra. — Translation of the Durgá Pátha by Gurú Gobinda Singha (Born 1666), the tenth and the last gurú (Padas'áha) of the Sikhas. He was a great soldier and composed good verses in Braja bhásá. The manuscript is dated Samvat 1880 (1823 A.D.). This book is divided into two parts called Chandi Charitra ukta vilás and Chandi Charitra Nátaka.

Beginning.— डॉ श्री गणेशायनमः ॥ डॉ मंगलं भगवान विष्ण मंगलं गरुष्टवन ॥ मंगलं पुंडरीकान मंगलायतना हरी ॥ डॉ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रय चंडी चरित्र उक्त विलास लिख्यते ॥ भाषाकृत कवि श्री गुरुः गोविन्दसिंघ जी ॥ सवैया ॥ श्रादि श्रणार श्रलेप श्रनंत एकाल श्रभेष श्रलेष्य श्रनासा ॥ के शिव श्रकति दण स्तृति चारि रंजातम सन जिंह पुर वासा ॥ दिवस निसा सिस सूर के दीपक सृष्टि रंची पचि तन प्रकाशा ॥ वेर बढ़ाइ लराइ सुरासुर श्रापह्डि देखत श्राप तमाशा ॥ १ ॥

End.—सबै राग कोई ॥ तिसै सर्व पुन्छान कोर्ग न होइ ॥ १ ॥ दोहरा ॥ जे जे तुमरे ध्यान को नित उठि ध्येहें संत ॥ श्रंति लहेंगे मुकत फल पावहिंगे भगवंत ॥ २ ॥ इति श्री मारकंडे पुरायो श्री चंडी चरिष नाटक उस्तित वरननं नाम श्रष्टमा ध्याइ ॥ ६ ॥

सप्रस्तका संपूरणं ॥ संवत् ॥ १८८० ॥ फालगुण शुदी ॥ सप्रमी ॥ रविवार संक्राता ॥ २० ॥ लिखतं राजाराम पंडित कश्मीरी ॥ पठनाणं देवीदन ब्रह्मभट जात गाकलान ॥ भादद्वाजीगाच ॥ शुभंमस्तु ॥ श्री राम ॥ राम जी ॥

Subject.— वास्तव में ये दो यन्थ हैं— "चंडी चरिच उक्त विलाए" ग्रीर "चंडी चरिच नाटक"। यन्थकार एकही प्रतीत होता है। नाटक का ग्रादि यें है। नराज कन्द। महिष्य देत पूर्य वढ्यो मुलाह पूर्य। मुदेवराज जीतयं॥ चिलाकराजकीतयं॥ भजे मुदेवता तब ॥ इकच होइ के मुबे॥ … ॥ यहां भी ग्रध्यायों का क्रम ग्रीर नाम वैसाही है॥

Note.—यन्थ बनने के समय का पता नहीं लगता, किन्तु गुरु गोविन्दिसिंह जी इसके रचियता है जिनका जन्म सन् १६६६ में हुन्ना था॥ यह प्रति संवत् १८८० फाल्गुण सुदो सप्रमी रविवार की लिखी गई थी॥

No. 6.— सिंहाधनबतीसो Verse. Substance — country-made paper. Leaves—124. Size — $8 \times 5\frac{1}{3}$ inches. Lines—20 on a page. Extent — 2,822 slokas. Appearance — new. Incomplete. Generally correct. Character—Devanágarí. Place of deposít—Bhatta Divákara Ráya's Library, Gulera, district Kángrá.

Sinhásana Battest.—Thirty-two stories told to Bhoja. The name of the author appears to be one Gangá Ráma.

Beginning.—डों श्री गगोशायनमः ॥ डों ऋष सिंहासनवनीसी लिपते ॥ दोहा ॥ डों शिव मुत के। प्रनिवा सदा करहूं सीस निवाई ॥ सिवा श्राटि देवी जेपों सब वरदानी माई ॥ तिहि प्रसाद कथनीं करें। हुर्प चिन उपजाई ॥ नोलकंठ पिय हर्ष मुत विक्रम के। जस गाई ॥ चै। पर्वे ॥ दिवा देश देश देश देश नेनो नगरी ॥

End.— नेपर्र ॥ मुनहु भोज इह विक्रम कीने। ॥ पर कारज के। इह ब्रत लीने। ॥ तब विक्रम अपने यह गये। ॥ द्विज अपने यह मुख से। भये। ॥ धंन धंन राजा पर उपकारी ॥ सत वृत्त के। देही धारी ॥ विक्रम सम जे। करणी कोजे ॥ तबह सिंहासन पर पगु दोजे ॥ तेइसवा पृतरी बेल मुनाये। ॥ गंगा राम प्रगट जमु गाये। ॥ इति विक्रम संबंधनी चयीसवीं कथा संपूर्णम् ॥ शुभम् ॥

Subject. - पुतिलियों द्वारा कही गई ३२ कथा में की मुप्रसिद्ध सिंहासन बनीसी का मनुवाद ॥

Note. - कुछ पता नहीं चलता। यन्यकार का नाम गंगाराम प्रतीत होता है ॥

No. 7.—क नक मञ्जरो Verse. Substance—country-made paper. Leaves—21. Size— $7\frac{3}{4} \times 5$ inches. Lines—21 on a page. Extent—484 slokas. Appearance—old. Complete. Generally incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit.—Bhatta Divákara Ráya's Library, Gulera, district Kángrá.

Kanaka Manjari.—The story of Kanaka Manjari, wife of Dhana Dhira, a merchant of Ratnapura. It is a love story describing the unsuccessful attempts of Rajakumara to seduce her in the absence of her husband. The name of the author is Kasi Rama who wrote it for Rajkumara Laksmi Chanda. The exact date of the composition of the book is not given, but it must have been composed between 1623 and 1777 A.D. as the poet makes mention of Tulsi Dasa; who

died in 1623 A.D., and as the date of manuscript is Samvat 1834 (1777 A.D.). Probably he is the same Kási Ráma whom Dr. Grierson mentions to have been born in 1658 A. D. and to have attended the court of Nízámat Khán, Subedár of Aurangazeb.

Beginning. -- श्री गयोशायनमः ॥ अध्य कनक मंजरी कथा कि कासी राम कृत लिखिलें उग्र सागुड़ा। दोहा। गनपित गेविन्द गुरु चरन सेई मुखित उपजाई ॥ भजन ॥ भरेसे शक्ती के किवता रिचत बनाई ॥ १ ॥ इस्पे ॥ विदित वीर पृथीराज राज दिल्ली धिर धस्यो ॥ रोवहान अधकाइ बंदी वर चन्द समंस्यो ॥ श्राठ अधक सत एक संग सामंत सजत नर । सुभट जीत रनधीर विमल कोरत मुकरि श्रंवर। संवहु चक आन चोहान कुलु तेज भान तुत्रः । गयो। मृगया विनोद चहू केाद जस वसु वितरन मुप भुगयो ॥ २ ॥ दोहा ॥ विधि वसिंद (ल्ली १) तथत तिज संभरप पत जगाई। कोयो राज राजी कीय उत्तम वरन बनाई ॥ २ ॥ उमराई राई निजि हो रही रनाई राजि ॥ ३ ॥ खुद्र दमन छोनी इसी छिति इति जिन्हें सुहाई ॥ ४ ॥ किवनु ॥ राजा होत जब तक जानिय रजाई बडी राई भय राई ही की कीरत पढ़ित है ॥ राजा होत जानिय रनाई समझ्प के। न भूपर अनूप जिह महिमा पढ़ित है ॥ दे दे उमराई दिलिपत दिल जोई करे सहाई श्राम उर में बढ़ित है ॥ (पृष्ट २) जाहि जाहि पदवी को चढ़े। चहुश्चान अब काहि ताहि पदवी सु आपही बढ़ातु है ॥ ३ ॥

• End.—दोहरा। मुक सारिक सब सुष रहे साह जीर कर कंज। नय चूमें निजु नारि के लागे उर अनुगंज। हिलि मिलि विद्या विरह की मेटी ॥ भुज भर कनक मंजरी भेटी। करी केल बहु बिधि मन भाई ॥ निरख लजात काम रित राई ॥ उतम चरिच कथा भुनो कुअर सु लद्धमीचंद ॥ कविता कासीराम की कीनी च्ह्यमद ॥ वाजिराज सिर पाउ दे आदर सहित समान। वरणसन बहु भूमि दे विस एकही सनमान ॥ इति श्री महाराज कुमार लद्धमीचन्द विरचितं कवि कासिराम उतम चिरित कनक मंजरी कथा समाग्रं शुभं ॥ लोयतं उग्र सागुड़ा समीगी प्रसाद कवि अद्धे प्रति ॥ समत नृपति १८३४ ॥ •

Subject.—रतन पुर में धनधीर साह की कनकमंत्री स्त्री थी। जब साह समुद्र याचा की गया ते। यक ताता त्रीर सारिका उसकी बहलाते थे। यक वेर स्नान करती वेर काक उसका हार ले उड़ा। उसे देख कर राजकुमार प्राप्तक हो गया त्रीर कई चतुर दूतियों में से यक चतुर त्रत्र दूती उसे ढूंढने चली। वह भिन्ना मांगने त्राई त्रीर दु: खिनी से भोख न लेने के मिस उसके पति के प्रवास का हाल कनक मंत्ररी से जान गई। दूसरे दिन पान मिठाई बांटने लगी। कनक मंत्ररी के पुक्रने पर उसने चिन्ताहर की पूजा करनेवाली एक तपस्विनो का प्रसाद बताया त्रीर उसे चिन्ताहर की पूजा से प्यारे से मिलने का भरेखा दिया। सारिका ने रोका किन्तु फटकारी गई। दूसरे दिन यक त्रीर दूती की तपस्विनो बनाकर पूजा की ले जाने का बिचार किया। सारिका सलाह देते पीटी गई, भूठे चांख फीड़ने का मिस किया। पूजा के। तयार होने पर ते।ते ने महावर डाल दिया त्रीर कनक मंत्ररी की रजस्वला बताकर पांच दिन ठहराया। पांचवं दिन—

चिन्ता हर मठ में नाई बसे। भजन भावना के संग लसे॥

पीया गए न द्वारका, बदरी गए न कवीर।

भजन भावना से मिले, तुलसी से रघुवीर ॥ कह कर घर में पूजा कराई। तिति ने अपनी व्याध तथा विद्वान के घर रहने की कथा कह कर कुसंगित और जल्दवाजी का बुरा परिणाम बताया। फिर जब अनूप आई तो "चिन्ताहर घटमाहीं" कहने वाली

कनक मंजरी से बहुस में हार कर राजकुमार की सलाह से एक नाथ बनवा लाई। सारिका ने अपने दृष्टान्त से उस पर चढ़ने से रीका। फिर सिंहलपुर की फीज ले जाने की डींडी राजकुमार ने पिटवाई। अनूप ने कनक की पित के पास जाने की तयार किया किन्तु जाती बेर सारिका ने छींक मार कर रोक दिया। साहूकार के आने की ख़बर उड़ते ही राजकुमार ने हार की गवाही से कनक की कर्लाङ्कित करने की धमकी दो किन्तु तीता हार की ले उड़ आया। दूती के नाक कान काटे गए। प्रेमिक प्रेमिका मिले।

Note.— यह प्रति सं⁰ १८३४ में लिखी गई है। काशीराम ने राजकुमार लद्मीचंद को लिये यह बनाई थी, श्रीर उन्होंसे इसका पुरस्कार पाया था। भाषा कुछ पुरानी है। देहिं। की ठाल भी पुरानी है। सम्भव है कि इस कथा के 'राजकुमार' श्रीर पृथ्वीराज के बंश के "मृगया विनेद" राजा श्रीर लद्मी वन्द में केई सम्बन्ध हो। कई शब्दों के लिहाज़ से यह किव इस देश का भी है। सकता है॥

No. 8.—ปักสุริย Veres. Substance—country-made paper. Leaves—24. Size—5½ × 4 inches. Lines—13 on a page. Extent—253 ślokas. Appearance—new. Complete. Incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Bhatta Divákara Ráya's Library, Gulera, district Kángrá.

Yoga Vasista.—An abstract translation of Yoga Vasista. The name of the author is not given. The date of the manuscript is probably Samvat 1714 (1657 A.D.), as it is bound in the same volume which contains other manuscripts written in that year.

Beginning.—स्वस्ति भी गणेशायनमः ॥ येगा वसिष्ट लिप्यते ॥ दसे दिसा वैकाल निरंतर प्रभु वसे पूर्ण ब्रह्म प्रकास घट घट माहि है ॥ ऋषे ही से ऋष ऋष सुहावणा । नम्सकार करि तांकों सोसु निवावणा ॥ १ ॥ ही वध्य कैसे मुक्त ही दूसरा नाहि संयोगु ॥ ना ऋति मूर्ष ना चतुर यह सास्त्रु निहियोगु ॥ २ ॥

End.—काष्ट्र महि जो पूतरी सदा निरंतर वासु ॥ त्यों जग सदा श्रव्यक्त तें सने सने परकासु ॥ ३० ॥ जैसें सागर ते लहिर लहिरों होई न नासु ॥ तैसे सभ जगु सून ते सूने माहि समाइ ॥ ३९ ॥ इति श्रो योग वसिष्ठ की भाषा दसम प्रकरण समाप्त ॥ १० ॥

Subject.—रामचन्द्र श्रीर वसिष्ठ के सम्बाद रूप से जगत् की तन्त्र विवेचना के यन्त्र योगवासिष्ठ का संचिप्त अनुवाद १० प्रकरणों में है।

Note.— ग्रन्थकार का नाम नहीं मिलता। न समयही है। यदापि ग्रन्थान्त में प्रति को तारीख नहीं दी है तथापि उसी ग्रन्थ में 'श्रष्टावक्र गीता' है से संवत् १०१४ की लिखी हुई है॥

No. 9.— THING Verse. Substance—English-made paper. Leaves—253. Size—13½ × 5½ inches. Lines—9 on a page. Extent—4,705 ślokas. Appearance—new. Complete. Generally incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—The Library of the Mahárájá of Benares.

Rámáyana.— The story of Ramachandra by Gomați Dása Vairági of Avadha. The book was written in Samvaț 1915 (1858 A.D.) and the manuscript copy was made in Samvaț 1921-22 (1864-65 A.D.).

Beginning.—बालकांड आरम्भ ॥ या मते रामानुजायनमः ॥ सेरिटा ॥ गन नायक एक गुन सदन ॥ बुद्धि रास पुभ खानि ॥ यब तुम देव चनादि हो ॥ सास्त्र करत परमान ॥ • • । त्रीपाई ॥ यंकर पुत सब की पुष दाता ॥ गबर तनग्र कीरति विष्याता ॥ से। श्वब कृषा बरी लघुजानि ॥ सीतापित कीरति मन मानि ॥ संकर सरीस श्वीर हित नाहि ॥ उमा जो सहित बसी उर माहि ॥ सब प्रकार अपनी मेहि जाने। ॥ रग्नुपित चरित मेह मन माने। ॥ से। श्वब प्रभु की। बात जनाई उं ॥ राम चरन फिर फिर सिर नाई उं ॥ ब्रह्मादिक सनकादिक गाये ॥ से। सुनि के सुष संतन पाये ॥ जा सुनि चित्र मेह श्वब लाग्ये। ॥ को लिये कृषा ते। हो हु सभाग्ये। ॥ सेस सरदा हो हु दयाला ॥ नारद सहित करो। प्रतिपाला ॥ पूर्णि जो। सबे रिधिन सिर नाज ॥ सोतापित कीरति अब गार्ज ॥ गुर अब दयाल सबे हितकारी ॥ रग्नुपित चरन कीया अधिकारी ॥ दोहां ॥ सोतापित मन में बसे लपन लाल हित जानि ॥ इनुमत अब अनुकूल है । से। में करत बपानि ॥ ३ ॥ संबत उनई स से पंचदस। श्वावन चितिया जानि ॥ श्रुक्त पक्त गुरवार के। राम चिरत करी। गान ॥ ४ ॥ सरजू सुरग की सिढि है ॥ श्रवधि नित्य सुष धाम ॥ गोमतीदास विचारि के ॥ कीने। जहां विसराम ॥ १ ॥

. End.—सेारठा ॥ गोमतीदास विचार ॥ रघुपति जस गावत भये ॥ उत्तर केा है सार ॥ जाने। ऋति कल्यान मे ॥ ऋभ्यागत ऋब जानि ॥ रहते सर्जू निकट मे ॥ संतन कीन प्रमान ॥ दीन जानि ऋपने। करो ॥ मीतो सावन वदी ॥ १२ ॥ संवत ॥ १६९२ ॥

Subject. - श्री रामचन्द्र का इतिहास ॥

ं Note.— ग्रन्थकर्ता ग्रेमतीदास वैग्गी ऋवधवासी। निर्माण काल संवत् १६९५ ग्रावण भूक ३ गुरुवार। लिपिकाल संवत् १६२२ सावन वदी १२।

No. 10.—रामचरित मानस मृकावली Prose. Substance — country-made paper. Leaves—488. Size—14×7 inches. Lincs—15 on a page. Extent—27,020 ślokas. Appearance—somewhat old. Incomplete. Generally correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—The Library of the Mahárájá of Benares.

Rámacharita mánasa Muktáralt.— Annotations on the Rámacharitamánasa of Tulsi Dása by some disciple of S'ivalala Páthaka. The manuscript copy was made by several persons. The first book was written in 1890 (1833 A.D.) and the other books were written in 1915 (1858 A.D.).

Beginning.—बालकोड मंगलाचरण ॥ श्री जानकी बल्लभायनमः ॥ श्री गुरुचरण कमलेभ्या नमः ॥ श्री मुमिचा नंदना जयित ॥ ची० ॥ श्री गुरु चरण परोज प्रणामा ॥ श्रीमन्मत फल दायक श्रीमरामा ॥ जो जग एकल मुकृत कर टीका ॥ जेहि कीन्हे एव हो कर नीका ॥ ९ ॥ (इसी प्रकार दी पचे तक है तीसरे पचे में कुछ ध्याख्या पहित गोसांई जी के खेलाक वर्णानामार्थ इत्यादि, फिर चतुर्थ पचे में गोसांई जी के सेरिट की टीका है) येहिं मुमिरत सिधि होइ—इत्यादि ॥ ९ ॥ श्री रामायनमः टीका ॥ येह सुमिरत सिधि होइ ॥ येहि देवता के सुमिरत माच सिद्धि होति है ॥ गन नायक जो श्रापु पेश्वर्थ से गन नायक कहै ॥ किर वर बदन फेरि श्राप स्वरूप से किर वर बदन है ॥ बुद्धि रासि ॥ फेरि जो श्रापु स्वभाव से। बुद्धि के रासि हैं ॥

End.—केशिल्या सुत यव देव सदसी दोव्यद्वितेनीदीत: ॥ कींतुस्वीचीत रूप सील सुभगेकन्यधने साधने ॥ सीमोबात्तरताथ सबु समनंश्वेतिपिसे पुजीता ॥ सानीकाजन के स्वरेण सहित: साकेतनाथापिस: ॥ ३॥ नितरिमतमहीमने वेद दुर्गेय सीम्ने सेव क्वांत सरीमने केसिलन्द्रात्मचाया ॥ अनिद्वनमधि राषं केटिसेनंतसा वा मम बचन

मनेभ्यामस्तु कायेन चापि ॥ ४ ॥ संवत् ॥ १६९४ ॥ पुस मासे कृष्ण पत्ने द्वीतीयां बुध वासरे लीखित समाप्रम् ॥ र्यातम पृष्ट भी पोधी उत्तर कांड समाप्र संपूर्ण भइल दुनी के रोज बुध के सन् १२६६ साल माह ।

Subject.—श्री तुलसीकृत रामचरित मानस पर टीका।

- े Note:—टीकाकार अपने नाम के विषय में सर्वत्र यही लिखते हैं कि "श्री जानकी रमगाचरगपरार्थमा जित्रलाल पाउक के किसी जिप्य कृत्"। सत्र कांड एक व्यक्ति के लिखे नहीं जान पड़ते, पहिला कांड संवत् १८२० का लिखा है ग्रीर शेष कांड १८१५ के लिखे हैं॥
 - No. 11.—मृक्तियों मंगल Verse. Substance—country-made paper. Leaves
 —8. Size $9\frac{3}{4} \times 6\frac{1}{4}$ inches. Lines 21 on a page. Extent 190 ślokas.

 Appearance—old. Complete. Correct. Character—Kaithi. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rukmint mangala.—The story of the marriage of Rukmint with Krisna by Narahari Bháta. He is probably the same Narahari (1550 A.D.) who attended the Court of Akbar, and who, according to tradition, was instrumental in inducing Akbar to put a stop to cow-killing in his Ráj.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ प्रथमहि लीजे नाम परम सिधि पाइये ॥ गनपन्ति गीरि मनाइ मे। मंगल गाइये ॥ लै सारद के। नाम से। विधिहि मनाइये ॥ सुर नर मुनि गनदेव ते। जगपति पाइये ॥ भूपति भीपम राउ से। कुंदन पुर वसे ॥ ताकी कन्या स्कु मिनि मेहि तिरदशे ॥

End.—ह्रन्द ॥ तारे जो कुलु सब भांति ऋपने कहे मुने जो गायई ॥ कन्यान काल विवाह मंगल सर्वटा मुख पार्वई ॥ इह कथा परम पुनीत समुक्षत रत नर करि चित लाइऋ। ॥ नग्हरि महा 'जो पातु सब बिधि परम पद सो पाइऋ। ॥ शुभमस्तु इति श्री रक्कुमिनी मंगल नरहरि भाट विरचित समाप्तं शुभमस्तु रम्तु ॥

Subject.-- श्री रुक्तिग्री कृष्ण विवाह वर्णन ।

Note. - ग्रंथकर्ता कवि नरहरि भाट है। इनका विशेष कुछ पता नहीं है।

No. 12.—बालमञ्जून्द लोला Verse. Substance — country-made paper. Leaves—107. Size—10×4 hinches. Lines—9 on a page. Extent—2,250 slokas. Appearance—ordinary. Incomplete. Generally correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Bálamukunda Lílá.—The translation of the first half of the tenth canto of Bhágavat dealing with the life of Kriṣṇa Chandra by one Bhísama Kavi.

Beginning.—श्री रामायनमः ॥ श्री गयोशायनमः श्लोकाः । हेरंबं प्राण्यत्य मूर्धि शततं वृद्धिप्रदं प्रस्फुटं विद्यध्वंसकरं गलेन्द्रवदनं लंबोदरं 'सुन्दरं ॥ वहयेशं यदुनंदनस्य चिरतं चित्रयदाकयेगात्सवेसं सुष्माप्रवंति नितरां तद्भासयातन्वते ॥ १ ॥ (इसो प्रकार दो पचें। में मंगलाचरण के १२ श्लोक है इन्हों में कुछ महाराज बोरवंडसिंह का भी वर्णन है उसके पीछे भाषा कविता है) कवित्त ॥ दंडक ॥ थे।दे थलकत भलकत बाल बिधु भाल सेंदुर लसत मानां बाना बोर बेस को ॥ मद जल भरत लसत श्रलिवृन्द सुंड कुंडली करत मन हरत महेस को ॥ भीषम भनत ऐसे। ध्यान जो धरत नर लेसु न रहत उर कुमित कलेस को ॥ संकरे सहायक सकल सिद्धि दायक समत्य सुभ सत्य पग पुजिये गनेस को ॥ १३ ॥

Subject.—पूर्वार्द्ध दशम भागवत से भी कृष्ण लीला।
Note.—यंथकती कवि भीषमंहै।

No. 13.—arg सर्वाम Verse. Substance—country-made paper. Leaves—22. Size— $7 \times 3\frac{1}{2}$ inches. Lines—7 on a page. Extent—208 slokas. Appearance—ordinary. Complete. Incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Bāhusarvánga.—Praises of the monkey god Hanumána by the celebrated Ţulsi Dāsa (Died 1623 A.D.) The manuscript is dated Samvat 1882 (1825 A.D.).

Beginning.—भी गयेशायनमः भ्रष्य वाहु पर्वाग गात पिर मे। चेना ॥ दोहा ॥ भी रंघुत्रीर मनाम करि सहित लघन हनुमान ॥ राषि हिंदै त्रिस्वास दिक पुनि पुनि करीं प्रनाम ॥ १ ॥ भीमवार श्रादिक पक्षे जा नर सहित सनेह ॥ रूज संकट व्यापे निहं बाढ़े सुष घन गेह ॥ २ ॥ सुचि सनेह पठिह नर निरुज गात बलवान ॥ होइ है रत तुलसी पद जस पह है सब ठाम ॥ ३ ॥ कबित ॥ भी राम कृपालु विराजत मध्य महा कवि धाम गहे धनुवाना ॥ वाम दिसा महिना सुठि सुन्दरि दिचन श्रोर लघन बलवाना ॥ वामर पान लिये प्रभु के ठीग वाये तने हनुमाना ॥ तुलसी हिंदै धरु ध्यान सदा भ्रम संस्य त्यागि कहीं परिमाना ॥ ४ ॥

End.—राम नाम पितु बंधु एजन गुरु पुज्य परमहित ॥ साहेब सवा सुजान नेह नाते पुनीत थित ॥ देस कोस परि कर धरिन धन धाम धरम गित ॥ राज काज सब साज राजत समाज प्रति ॥ स्वारथ परमारथ सकल सुलभ राम ते प्रमित फल ॥ क्रह तुलसिदास प्रब सब दिनन्ह एक राम ते मार भल ॥ ५८ ॥ प्रथ मंच ॥ जों हरि मर्केट मर्केटाय स्वाहा ॥ इति मंच ॥ इति श्री बाहुसवाग तुलसीदास कृत हनुमान स्तोच संपूर्णम् ॥ संवत् १८८२ मिती वैशाय कृष्ण नेम्याम् ६ चन्द्र वासरे सुभमस्तु ॥ दसवत सोवरतन पांडे भूइली वास ॥

Subject.—हनुमान जी का स्ताच।

Note.—श्री गोस्वामी तुलसीद। स जो कृत हैं। लिपिकाल संवत् १८८२ वैशाख कृष्ण ह चन्द्रवार है॥

Kávyakaládhara.—A book on Hindi rhetoric by Raghunátha Bandíjana, who was the court poet of Mahárája Barivanda Singh of Banáras. He composed this book in Samvat 1802 (1745 A.D.). The manuscript is dated Samvat 1835 (1778 A.D.). (See No. 15.)

End.—मेट्टाइत लक्ष्मं ॥ दोहा ॥ सकु हियें गुर लेग की दरसन चाहै चिन ॥ प्रीत भीत संग वर्राज्यें हाव से। मेट्टाइत ॥ २९४ ॥ उदाहरने यथा ॥ चेरी हैं तेरी रहें।गी सदा श्रम्र तोहि हिंतू नक जपर लेपें। तेरी कहीं में करें।गो सदा श्रम्र ते। उपकार हिये श्रवरेषें। जातु रहीं न सुन्या जब से। रयुनाथ है। गेह के चासिन भेषें। तेउ उपाइ श्रली करिश्रे कक्षु मेरी गली हिर श्रावें में देपें। ॥ २९५ ॥ श्री किव रयुनाथ बंदीजन कासी निवासी विरचित काव्य कलाथरे विभाव श्रनुभाव संचारी श्रम्थाई नक्ष्म हाव वर्णनं नाम चतुर्दम मूर्यः ॥ ९४ ॥ सुभमस्तु संवत् १८३५ मितो श्रासनी मासे मुकुल पद्ये गुम् वारे के संपुरनः ॥ ॥

Subject .-- नाग्रिका भेद ऋलंकार ऋदि ॥

Note.—ग्रन्थकर्ता बंदोजन कवि रघुनाथ है। ये महाराज बरिवंडासंह के श्रामित थे। ग्रन्थ का निर्माणकाल कार्तिक संवत् १८०२ त्रीर लिपिकाल श्राध्विन शुक्त ४ गुरवार संवत् १८३५ है।

No. 15.—দ্মী বাঘা কুমা বিলাধ Verse. Substance — country-made paper. Leaves—120. Size—11×5½ inches. Lines—8 on a page. Extent—2,500 ślokas. Appearance—old. Incomplete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Śri Rádha Kriṣṇa Vilása.—A book on Hindi rhetoric with special reference to the description of the beauty of Rádha and Kriṣṇa. The name of the author is Gokulanáṭha (see No. 2 of 1900), who was the son of Raghunaṭha Bandijana. Gokulanáṭha was appointed Superintendent of the Charity Department by Mahárája Barivanda Singha, and when later on Mahárája Udiṭa Náráyaṇa Singha succeeded, he wrote this book in Samvaṭ 1858 (1801 A.D.) with his permission. The Banáras Ráj family is said to have been founded by one Manasá Ráma, who by his intelligence and craft succeeded in winning over the then Nawáb of Avadha. The manuscript is dated Samvaṭ 1860 (1803 A.D.).

End.—सेरठा—नीवी लेहु संभारि कीज किनारी की करत। श्रवहुं न निसि श्रंधियारि हरवराइ इतना चली ९६ मोट्टाइत लक्कनं। सकुच हिएं गुरुलाग को दरसन चाहत चित्र। ग्रीति

भीति संग बर्रानयं हात से माट्टाइन ६० यथा—नंद को लाल जसेदा की नंदन चंटन से सिगरी जगती की। दृष्टिनकंदन दंदन राषत देषतही जनके मनही की। गोकुलनाथ है साथ सखानकों कालिंदीपे चित चेरन ती.का। पाय परें चिल श्राय देषाय दे संवरे रंग की डांबरी नोको १४ सेरठा। री सिख मीहि देषाय वह नंदन नंदराय की। लपत जाहि चिल जाय लाज निगेड़ी चवनते ६९ इति श्री कवि गोकुलनाथ कासीनिवासी विरचिते राधाकृष्य विलासे हाव वर्ननं नाम द्वादसे विलास: १२ श्री: संवत् १८६० मिती श्रावय मासे कृष्य पर्दे पंचम्यां बुध वासरे श्री: सुभमस्तु कल्यानरस्तु यंथ श्लोक संख्या २५०० श्री विन्ध्याचलनिवार सिन्ये नम: डों नमा सूर्य नम: ॥

Subject.—मी राधा कृष्ण चरित्र संयुक्त नायिका हात्र भावादि वर्णन का काष्ययन्य ॥

Note.—यन्यकर्ना कवि गोकुलनाय काणी निवासी हैं—ये रघुनाय किन के पुत्र ये जी

महाराज काणीराज मंसारामजी के समय में यहां आए और उनके पान रहे। फिर महाराज
बरिवंडसिंह के समय में किन गोकुलनाय के। दानाध्यन्त का अधिकार मिला और फिर जब

महाराज उदितनरायणसिंह राजपदाधिकारी हुए तब उनकी माजा से यह यन्य उन्हेंनि
बनाया। निर्माण काल १९५६ चैत गुक्त १५ और लिपिकाल सं १९६० मान्यण कृष्ण ४ बुधवार है ॥

No. 16.— সাব্যরীয় Verse. Substance — Foolscap paper. Leaves — 7. Size—9 × 5 inches. Lines—9 on a page. Extent—125 ślokas. Appearance—old. Complete. Incorrect. Character — Devanagari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Gyána Pradtpa.—Praises of God by Gangá Ráma Tripáthí, who wrote this book in Samvat 1846 (1789 A.D.). The manuscript is dated Samvat 1857 (1800 A.D.).

Beginning.—श्री गर्णेशायनमः । कुंडलिया ॥ राजत मन मेहिन मृदित श्रीचन स्याम स्वरूप ॥ पीत वसन मृजुटी कसन सुंदर हंसन श्रनूप ॥ मुंदर हंसन श्रनूप रूप श्रीत उत्तम द्वांजे ॥ मनु तारागन गोपि मध्य मृख चंद्र विराजे ॥ सेवक मुलभ दयाल नाम कर्षणा निधि द्वांजत ॥ कृष्णाचंद जगदीश माधुरी मूरित राजत ॥ दोहा ॥ श्रो वृन्दाबन रवन प्रभु कृष्णाचंद नंद नन्द ॥ चरन कमल युग बंदि रज करो दूरि दुख दंद ॥

End.—कुंडलिया ॥ गंगाराम चिपाठि द्विच मालवीय विख्यात ॥ कीन्हो चानप्रदीप वर विमल यन्य अवदात ॥ विमल यन्य अवदात जहां हरि भजन निरंतर ॥ कीन्हो मित मित छंद नाम लीन्हो बिनु अंतर ॥ जाते कीनिहु भांति होय हरि भजन प्रसंगा ॥ ध्यायो से हरि चरन जहांते प्रमठी गंगा ॥ दोहा ॥ अष्टादश शत अह अधिक छालिए संवत् माह ॥ भया यन्य भादो सुदी चतुर्दसी गुरु काह ॥ इति भ्री गंगाराम कृत भाषा चानप्रदीप समाप्र॥ संवत् १८५० कातिक सुदी ६ चंद्र ॥

Subject.—भगवद्दान।

Note.—कर्ता गंगाराम विपाठी मालवीय हैं। निर्माणकाल संवत् १८४६ भादों सुदी १४ गुहवार स्नार लिपिकाल संवत् १८५० कार्तिक सुदी ६ चंद्रवार है।

No. 17.— সানহাক্ত্রিভি Verse. Substance — Sivarampur-made paper. Leaves—688. Size—17×5½ inches. Lines—10 on a page. Extent—28,350 slokas. Appearance—new. Complete. Generally correct. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Anandámbunidhi.— Translation of the Bhágavat Purána by Mahárája Raghurája Singha of Rewáh, who completed it in Samvat 1911 (1854 A. D.). He took four years in completing this translation.

Beginning.—श्री गयेशायनमः॥ श्रध सिद्ध श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजाबहादुर श्री क्रण्यचंद्र क्रपापाशिधकारी रघुराजसिंहजूदेव क्रत श्रानंद श्रुक्ति क्रियते। सेंरठा जय हरिपद श्ररविंद भक्त भृंग श्रानंद कर। श्रवतु सुजस मकरंद कुमित क्रूरता ताश हर १ क्रपें। भव भय भंजन करन पर मन काम जनन के। तोथास्पद विधि संभु वदा मृनि योग्य मनन के। प्रनतपाल भवसिंधु पोत जेहि सुर मृनि गावें। जाको सेवा छोड़ भक्तजन मृक्ति न ध्यावें। किल कुमित दरन श्रस्तन सरन भिक्त भरन सुख प्रद नरन। श्रजान क्ररम श्रापद हरम बंदों श्री जदुबर चरन १ दोहा। तिज सुर दुरलभ संपदा पितु सासन धरि सीए। जिन कीन्ह्यों बन को गमन जयित राम जगदीस १ कितत। भार ते पीड़ित भू को बिलोकि के जे प्रगटे मथुरा में मुरारी। लोला श्रनंत करी ब्रज में दुखदाई श्रनेकन मारि मुरारी। द्वारका श्री मथुरा में बसे प्रभु दासन की सब भांति सुधारी। ते जदुनंदन के पद बंदत है रघुराज सदे सुखकारी॥ १॥

End.—दोहा। यह मुष में किमि किह धर्कों पितु विभुनाथ प्रभाउ। जामु कृपातें मोहु सम रच्यो यन्य भरिवाउ ६ चौपाई। सुद्ध स्रमुद्ध भयो जो होई। सुमित सुधारि लिहा सब कोई। १ में भगवत श्रयं सब लोन्ह्यो। तेहि सनगुन भाषा किर दोन्ह्यो २ हिरबंसहु सह भारत श्रादी। स्रीरहु बहुत पुरान मरजादो ३ गर्ग संहिता श्रादिक केरी। कथा रुची जो जो मिति मीरी ४ कहुं कहुं तेहि सनबंध विचारो। में लिबि दियो सुमित स्रनुहारी ५ कृष्ण चिरित स्रित सुषद विचारो। सुनहु सुमित यह विनय हमारो ६ में श्रीत किरके मनहि ढिठाई। जो कछु बन्यो से दियो बनाई ० पे सस मन में स्रहे भरोसू। हिर जस गुनि कोउ करी न रोसू ८ सम्बन प्रीति सिहत मुद मोई। स्रानंद संबुधि यन्यहि जोई ६ पठे सुने जो प्रीति समेतू। भगवत दास समाज समेतू १० तिनको बहु हे मोर प्रनामा। मेगर क्रपा करिह मित धामा १९ देहि हिरिह यह बिनय सुनाई। रधुराजिह लोजे सपनाई १२ दोहा। जय रधुपित जदुपित जयित रघुनंदन जदुराज। में मन स्रपने बस करहु बिने करत रघुराज ० इति सिद्धि स्रीमन्महाराजा धिराज बांधवेस बिश्वनाथ सिंहात्मज सिद्धिश्री मन्महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा बहादुर श्री कृष्णचंद्र कृपापाचाधिकारि रघुराजिसह करते स्रानंदाम्बुनिधी समाप्र सुभमस्तु॥०॥

Subject. - प्रीमद्वागवत के द्वादश स्कन्धें का छन्दोबद्ध प्रनुवाद।

Note.—ग्रन्थकत्ती महाराज रघुराजसिंह रीवांधिपति हैं। जिसने इस पुस्तक की प्रादि में लिखा उसका नाम हनुमान है। ये महाराज के मंत्री के वंशव थे।

निर्माणकाल—संवत् श्रोनइस से मुण्हावन । साल सात को परम मुहावन ह कातिक मास श्रांमहि कीने। श्रानंद श्रंबुधि यन्य नवीने। ६ रचत बीतिगे बरणहि सारी। किया कपा किर पार मुरारी १० श्रोनइस से ग्यारह को साला । पूस मास गुरुवार विसाला ११ कृष्णपद्य दसमी मुखदाई। धन को जब संक्रांतिहि श्राई १२ श्रानंदशंबुनिधिहि सुभ यन्था। को संतन संतत सत पंथा १३ तब यह यन्थ समापत भया। मन बांहित पूरन है गया १४ दोहा। सत्य सत्य में कहत हैं। दोज हाथ उठाय । मेरी नहि करतृति यह सब कोन्ही जदुराय ४।

No. 18. - शोमद्वागवत माहात्म्य Verse. Substance—country-made paper. Leaves—69. Size—11×6 inches. Lines—12 on a page. Extent—200 ślokas. Appearance—new. Complete. Generally correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Śrimadbhágavat Máhátmya.—Translation of an extract from the Padma Purána dealing with the virtues of reciting the Bhágavat by Mahárája Raghurája Singha of Rewáh, who wrote it in Samvat 1911 (1854 A.D.).

Beginning.—श्रीगर्थेशाय नमः ॥ दोहा ॥ जेजे रघुकुल कमल रिव जे राध्यस्त कुल काल। जेजे भुव भारा हरन नवल नेष नदलाल १ जे बांनी दांनी सुमित जयित भवानी मंद । जेजे पितु विसुनाथ पद जे हिर गुरू मुकुंद १ जे सुक जा जनमृत समे यांन विद्यानिह पाय। चल्या कृष्ण ध्यावत मनिह लह्यो व्यास पिछ्नाय ३ पुत्र पुत्र कहि जाहि की गुहरावत मुनि जात । सब सथल व्यापित भया उत्तर तह दिय तात ४ से। सुक के जुग पद कमल मे धिर के निज माथ। श्री भागवत महात्म की बरनत ही मुद गाथ १ सुंदर पदुम पूरान के हैं श्रध्याय चीबीस। ताकी भाषा रिच सुपद पूर करी जगदीस ६ ची ० नीमपार छेजिह यक कला। बेठे सीनक बुद्धि विसाला १ किया सूत से। प्रव्य सुपारी। कृष्ण कथा की सुनन विदारी॥ १॥

' End.—दोहा। मुनत भागवत सात दिन होती मुक्ति विसेषि। यामे भूप परिकिते साची लोजे लेषि १ हरिमुष ते प्रटत भये। यह स्म रूप पुरान। पाठ करत जो जन
निते होत से। सम भगवान २ सब सिद्धांतन सार यह तुम सें किये। बषान। द्वोड़ि भागवत
जगत में मुक्ति उपाद न जान ३ ले प्रथमिह असकंघ ते अस द्वादस परजंत। पान करहु
रस भागवत हे सेनिक मितमंत ४ नारद सिष भागवत के ब्रह्म बीज मितवान। मिक्ति खंदहु ब्रहित जदुपित देव न आन ५ कीलक ग्यान विराग हे कृष्ण प्रीति विनियोग।
यही मंच पिंढ जात है यदुपित पुर सब लोग द यह भागवत महात्म को सुने पढे
चित लाय। तासु पाप जरि जात है अवसि परमपद जाय २ सद संड सिस संबत्ते अमा
सुर गुर वार। मास फाल्गुन भागवत भी महात्म अवतार ८ इति सिद्ध श्रीमन्महाराजा
धिराष बांघवेस विश्वनाथिसंहात्मज सिद्ध श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा बहादुर
श्री कृष्णचन्द्र कृपापाविस्तारि रधुराजिसहें जू देव कृते आनदांबुनिधे। पद्म पुरानीय
श्री भागवत माहात्मे चियाविस्तरंगः॥ २॥ श्रीभागवत महात्म संपूर्ण॥

Subject.—पद्मपुरायोद्धत श्रीमद्वागवत माहात्म्य का कविता में भाषानुवाद ॥

Note.—यह यन्य महाराज रघुराजिंद रीविधिपति कृत है। निर्माय-काल सं १६९९ फाल्गुय कृष्य ३० शुक्र वार है॥

No. 19.— रामाञ्चमिर्ध Verse. Substance—country-made paper. Leaves—194. Size—12½×6 inches. Lines—12 on a page. Extent—6,000 ślokas. Appearance—old. Complete. Incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rámáswamedha.—Translation of the Pátála Khanda of Padma Purána, dealing with the Horse sacrifice by Ráma Chandra, king of Ajudhyá. The name of the author is Hari Saháya Giri of Mirzapur, who composed the book in Samvat 1859 (1802 A.D.). The date of the manuscript is Samvat 1860 (1803 A.D.). The author gives a detailed account of himself in the beginning of the book which has been quoted in full in the "beginning." There are two copies of this book in this Library. The second copy has 158 leaves and is $13\frac{1}{2} \times 7\frac{1}{4}$ inches in size.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गुरु चरन कमलेभ्यानमः ॥ श्री धीता रामाय मयः ॥ श्री खिवाय नमः ॥ श्री देख्ये नमः ॥ श्री इनुमत्देवाय नमः ॥ श्लोका लिध्यते ॥ सक्तलमनेरियदाचीधाची जगतासुरसुराराध्या ॥ विलक्षत्रात्यक्षकला वरदा विन्ध्येश्वरी जन

यति ॥ १ ॥ श्रोमद्राम शिरोरस्रं तत्समीपे विराजते ॥ मिरिजापुरनामाद्य पूर्वे तु गिरिजा पुरं ॥ २ गंगा तटेति विमलं शोभितं जनसंकुलं ॥ समग्रेश्वर्यसंपन्नं सर्वेलाकमनाहरं ॥ ६ यच सन्यासिः सिद्धा वसन्ति शिवपूजकाः ॥ ज्ञानिना निर्मलाः शान्ता दान्ता भेदविवर्जिताः॥ ४ । साधवा निर्मला शान्ता यव सन्ति विरागियः । शिव शक्ति रमारामभेद्वानाभिवा-रका । । वैष्णवाश्वापि शैराश्व शाका गाशिका तथा । महात्माना महाधारा श्रद्धेगरः परस्परं ॥ ४ ॥ ब्रह्मणाः परिडता यत्र गुनवन्तश्च भूरिषाः ॥ श्री मद्राम प्रसादादाः शब्द ब्रष्ट्यनिकृषियाः ॥ ६ ॥ बहुना किमिहोक्तेन वर्णा आयमियारतया । यच सर्वे यथान्यायं स्वक-मेंग्या चरन्ति हि । १ ॥ तचेदियगिरे: शिष्यो वष्तावर गिरः स्पृतः ॥ भेलागिरिस्तु तिच्छ-ष्यंस्तस्य शिष्यो महामितः ॥ ८ ॥ श्री मुगीविगिरः स्यातः सर्वेषद्भुगमंडितः ॥ यस्य कीर्ति-मेहाबुद्धे: शेर्मिते वितिमंडले ॥६॥ रामाश्वमेधिक कथा कथिता पुरा या वात्स्यायना यहि सहस्र मुखाहि नाहं ॥ तिच्छव्य शिष्य इह विचमुदे निवद्धां तां भाषया हरिसहाय गिरि: करोमि॥ १० ॥ यत्पूर्वे मुनिना कृतं मुकविना व्यामेन ॥ शेषेन यत्संप्रीतं हयमेधक प्रभु-कृतं वात्स्याना याद्भुतं ॥ तद्भक्तया वितने।ति रामचरितं सद्वापया भाषितं । श्री मद्राम प्रसादता हरिसहायादी गिरिवन्मुदे.॥ ११ ॥ भाषा प्राकृत संस्कृत संदर्भाः सन्तिनिर्मिताः प्राढि: ॥ ममतु शिथा: श्रममेतं दृष्टा तुष्यन्तु सञ्जनाः सरलाः ॥ १२ ॥ यदि दास्यतीह देापं तदिष खला मेधिकं मुहद्भविला । यस्मात्मदोष वस्तुनिदोषं नामे कदापि संघते ॥ १३॥ सेारठा ॥ बुध बिहारि भुन चारि ॥ गन नायक गन वर बदन ॥ सिद्धि कारि भय हारि ॥ बंदी शिष्य मुत बिघहर ॥ १ ॥ बंदी पद नद नंद गोपपति कष्तनाई तन ॥ विश्व कुमुद मुप चंद वेद उत्रास्त्री मीन हुँ ॥ २ ॥ बंदी दसरथ नंद मीतापति रायन दुषद ॥ कूमे रूप' मुष्कंद्र भूमि धस्त्रो निष्ठ पीठ पर ॥ इ ॥

End.— छंद हरिगीता । फल चारि लहिहें नारि नर सियराम कृत गुन गाय के ॥ तिडूं काल कुपल बिपाल जप रहिंहें छमा पर छाइ के ॥ कहिंहें जा यह रघुवर कथा पुनि है जो काउ मन लाइ कै ॥ भव बिभव भाग विलास करि बसिहें ते हिर पुर जाइ के ॥ १ ॥ श्लोक ॥ नवशराष्ट्रमहोमितवत्सरे सविजयास्त्रिनसदृशमी तिथी ॥ हरिसहाय गिरिर्ह्यमेधनां व्यिवितुरामकयां नरभाषया ॥ १ ॥ इति श्री पद्मपुराने पातालखंडे चेणवातस्यानसंवादे हरिसहायगिरिकृते रामचंद्र श्रश्वमेथ संपूर्न सुभंगस्तु श्रियमस्तु संवत् ॥ १८ ॥ दद ॥ मीती भादे वदी ॥ १ ॥ वार सुभ ॥ श्री: सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम । ६६० ॥ दोहा सुमार ॥ श्लोक गिष्ट ६००० ॥ श्री सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम ॥

Subject.—श्री रामचन्द्र के अश्वमेध ग्रज्ञ का वर्णन । पदापुराख पाताल ग्डंड से रुद्धत श्रीर श्रनुवादित ॥

Note.—यन्थकर्ता हरिसहायगिरि मिरजापुर वासी है। इन्होंने श्रपना विशेष हाल मादि के श्लोकों में लिखा है। इसी लिये वे उद्भुत कर दिए गए हैं। निर्माण काल संवतः १८५६ माधिवन मुझ विजया १० म्रीर लिपिकाल संवत १८६६ भादे। बदो ९ मंगलवार है।

Rámabhaktiprakásiká.—Annotations on the Ráma Chandriká of Kesava Dása by Jánakí Prasáda, who wrote the book in Samvat 1872 (1815 A.D.). The

manuscript is dated Samvat 1874 (1817 A.D.).

Prose and Verse. Substance—country-made No. 20.—रामभिक्तप्रकाशिका paper. Leaves 141. Size - 14 x 6 inches. Lines - 8 on a page. Extent-600 ślokas. Appearance - ordinary. Complete. Correct. Character - Deva-Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

End.—मूल ॥ ह्रपाक्रांता छंद ॥ ऋषिय पुन्य पाप के कलाप श्रापने बहाइ ॥ विदेह राजण्यो सदेह भक्त राम की कहाइ ॥ लहें सा मृक्ति लोक लोक खंतमृक्ति होइ ताहि ॥ कहें पठें गुने जो रामचंद्र चंद्रिकाहि ॥ ४० ॥ इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकेरिचंतामिण श्रीराम्चंद्र चंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरिचतायां कुशलव समागमा नामैकीनचत्व। रिशत् प्रकाशः ॥ ३६ ॥ श्री ॥ श्री

टीका ॥ कलाप समूह ॥ पुन्य पाप के नाश सें। मुक्ति होति है यह वेदांत के। मत है ॥ अधवा इन के धारन से प्राप्त जो यज्ञादि के। अधेप संपूर्ण पुन्य है तासें। पाप के कलाप बहाइ के ॥ ४० ॥ कवित्व ॥ केथी सुभ सागर विराजमान जामें पैठि पायइत परम पदारथ को राशिका ॥ कंठ में करत सेभ धरत सभा के मध्य केथी। से है माल उर विमल उज्ञासिका ॥ सेवहीं जाको लहें सुमन प्रवीनताई जानकी प्रसाद केथी। भारती हुलासिका ॥ ज्ञान की प्रकासिका मुकुतिप्रद काशिका है सेइय मुज्ञान राम भगित प्रकासिका ॥ ९ ॥ देखा । राम भक्ति डर आनि के राम भक्त जन हेतु ॥ रामचंदिका सिंधु मे रच्या तिलक मय सेतु ॥ ९ ॥ जो सुपंथ तिज्ञ सेतु को भुलहिं और मग जार ॥ रामचंदिका सिंधु के। लहिं कीन विधि और ॥ ३ ॥ इति श्रीमञ्जगञ्जनि जनक जानको जानको जानि प्रसादाय जन जानको प्रसाद निर्मितायां रामभक्ति प्रकासिकायामेकोन्नचत्वारिंशत् प्रकाशः ॥ ३६ ॥ संवत्सरे १८०४ चेच मासि श्रुक्त पत्ने तिथी नवस्यां गुरु वासरे पुस्तकमिदं समाप्रिमगमत् ॥ संवत्सरे १८०४ चेच मासि श्रुक्त पत्ने तिथी नवस्यां गुरु वासरे पुस्तकमिदं समाप्रिमगमत् ॥

Subject. - केशवदाश कृत रामचंद्रचंद्रिका पर तिलक ॥

Note.—ग्रन्थकर्ता तो रामचित्रका के केशवदास है। टीका के श्रन्तमें टोकाकार श्रमना नाम " जानकीप्रसाद निर्मितायां" ऐसा लिखते हैं। टीकाकार ने श्रादि में ग्रह भी लिखा है कि विस्तार भग्न से मैंने केवल कठिन शब्दों के श्रार्थ किए हैं। टीका संवत १८०२ की लिखी है श्रीर ग्रन्थ का लिपिकाल संवत १८०४ है।

No. 21.—श्रोगमचंद्रचंदिका Verse. Substance—country-made paper. Leaves—185. Size—12×7 inches. Extent—3,410 ślokas. Appearance—new. Complete. Generally correct. Character — Devanágarí. Place of deposit — Library of the Mahárája of Banáras.

Śri Rámachandra Chandriká.—The story of Ráma Chandra's life by the poet Kesava Dása, who composed it in Samvat 1658 (1601 A.D.). There are three manuscripts of this book in the Library of the Mahárája of Banáras. The second manuscript has 231 leaves, is $11 \times 6\frac{3}{4}$ inches in size and is dated Samvat 1882 (1825 A.D.). The third manuscript has 100 leaves, is $13\frac{1}{2} \times 6$ inches in size and is dated Samvat 1888 (1831 A.D.). No date is, however, given of the manuscript under notice.

Beginning.—भी गयोशायनमः ॥ भी रामचंद्रचंदिका लिष्यते ॥ दंडक ॥ बालक मृनालिन ज्यों ते दि उद्देश काल कठिन कराल वे श्रकाल दोहु दुष को ॥ विषय हरत हिंठ पिद्मानी के पात सम पंक ज्यों पताल पेलि पठवे कलुष को ॥ दूरि के कलंक श्रंक भव सीस सिस सम रापत है के सोदास दरस के वपुष को ॥ सांकर को सांकरिन सनमुष होतहीं तो दसमुष मुष ने ने गनमुष मुष को ॥ १॥

End — विमला ॥ त्रशेष पुन्य पाप के कलाप त्रापने बहार विदेश राज न्यां सदेह भक्त राम के। कहार । लहे सुभिक्त लेक लेक त्रंत मुक्तिं होइ ताहि पढे गुने कहे सुने जुरामचंद्र चंद्रिकाहि ३६ इति श्रीमत्पकलले। चनचके। रचितामिन श्रीरामचंद्रचंद्रिकायां केसवरार विरिचितायां जग्य पूर्न वर्ननं नाम जनचत्वारिंशः प्रकाश ॥ ३६ ॥ समाप्र ॥ सुभमस्तु ॥ रामनाम ॥ रामनाम ॥

Subject.—रामचरित ॥

Note.—यन्यकरी केशवदास है। ये जाति के सनाटा ब्राह्मण थे। इनके पूर्वज कृष्णदत्त मित्र थे। उनके पुत्र गणेश, उनके काशीनाथ, श्रीर उनके केशवदास हुए जिन्होंने इस यन्य की बनाया है। इसका निर्माण काल सं० १६५८ कार्तिक मुदी बुद्धवार है। इस यन्य की दी श्रीर प्रतियां इस पुस्तकालय में हैं जिनमें से एक संवत १८८२ श्रीर दूसरी संवत १८८८ की लिखी है।

No. 22.—प्रमुख पर प्रदर्शनी टोका Prose and Verse. Substance—country-made paper. Leaves—319. Size—12½ × 9½ inches. Lines—24 on a page. Extent—9,165 slokas. Appearance—ordinary. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Anubhara para pradaršaní tíká.—Annotations on the 12 books of Kabíra Dása by Mahárája Viswanátha Singha of Rewáh (1834 A.D.). The manuscript copy was made in Samvat 1905 (1848 A.D.).

Beginning.—श्री गयेशायनमः दोहा। श्री हरि गुम श्रिय दास ने मन वच पर ने राम ॥ ने हनुमत ने सिव सिवा ने सरपुति श्रिमराम १ श्री कवीर ने साधु सब ने नानत गुम भेद ॥ वोजक की टीका करत विस्वनाथ हर बेद २ कथनी श्रकथ पणंड पंडनी यहि की नाई बिचारी ॥ भनन क्रिया ने लियो करिह नो से परधाम सिधारी ३ श्रनुभव पर प्रदरसनि नामा टीका मुनिह नो गेहै। विस्त्रनाथ परतम परेंस प्रभु तेहि सब टीर दिवेहे ४ नेतने भर कबीर नो के यंथ है ते भर यही वोजक की मत ने के बने हे याते यह वीजक सब यन्थ कर वीजक है याते याको वीजक नाउ है श्रीर सार सब्द बरनन किया है याते या वोजक सब यन्थन की सार है तामे प्रमान क्रवीर नो की--चीदह श्रव ज्ञान हम भाषा सार सब्द करि जपर राश—सार सब्द ने रामनाम है ताको वोज नाम मंच सास्त्रन में बरनन है ताहो वीज की ज्ञान यामें बरनन है याते याको वीजक कहे हैं श्री प्रथम की उत्पत्य यामे है याते व्याद मंगल ने है कबीरजो को से यही वीजक को मंगलाचरन है यह नानि के श्रादि मंगल यह वीन में लियि दिया है ॥

पिद्धि श्री महारानाधिरान श्री महारान श्री राजाबहादुर सीता रामचंद्र कृपापाना-

धिकारी विस्वनार्थासंघ चू देव कृत पाषंड षंडनी टीका समाप्त सुभमस्तु ॥ श्लोक ॥ पाषंड षंडनी नाम टीकेयं परमात्मा प्रेरणात् विस्वनाथेन विस्वनाथः प्रकासिता। देखि। वीजक यन्य ककोर को कहरा साथी जान। गूढ़ मूल लिंध तिलक किया श्री विसुनाथ सुजान। लिंह विसुनाथ रजाय सुभ रामनाथ परधान। लिंध्यो श्रापने हाथ ते सांधी सब्द महान ॥ इति सापी संपूर्न मिती असाढ़ सुदी ६ सुक्रों का संवत ५६०५ के साल ॥

Subject.—काबीरदास के निम्न लिखित बारह यन्थें की टीका है। म्रार्थात् (५) मादिमंगल वा बीजक (२) स्मेनी (३) शब्द (४) ककहरा (५) वसंत (६) चीतीसी (०) विश्वतीसी (८) वेलि (६) चाचरि (५०) हिडोल (५१) विरहली (१२) साथी।

Note.—टीकाकार महाराज जिस्वनायसिंह जी भूतपूर्व रीवांधिपति हैं। निर्माग काल नहीं दिया है। लिपिकाल संवत १६०५ श्राषाक शुक्र ६ शुक्रवार है।

No. 23.—भी भोताराम गुणायेष रामायण समकांड Verse. Substance — country-made paper. Leaves—352. Size—11×7 inches. Lines — 15 on a page. Extent—4,950 blokas. Appearance—ordinary. Complete. Generally correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Śrí Sitáráma Gunárnava, Rámáyana Sapta Kánda.—Translation of the Adhyátma Rámáyana by Gokula Nátha Bandíjana. (See No. 15). The manuscript is dated Samvat 1906 (1849 A.D.).

Beginning.—श्रो गयेशायनमः श्रो सोता रामायनमः ॥ दोहा चरना ॥ यक रदन गजबदन विनायक लंबोदर सिंस भाल ॥ विधन हरन भरताभरत गारी नंद विसाल ॥ ९ ॥
हरी भूमि की भार वर सागर बांधो सेत ॥ देत चारि फल राम से। चरन चित्त में लेत ॥ २ ॥
जनत जननि श्री जानकी जास राम हिय धाम ॥ सेवहु तास सरोज पद पूर्ण करिहि मन
काम ॥ इ ॥ रामगीती ॥ फिरत नारद लोक में सब करि श्रनुग्रह पर्मे ॥ सत्य लोकहि गय
क्रम ते सत्यपूरित धर्म ॥ तहां देख्या मूर्ति धारें वेद सेवत जाहि ॥ बालकि केसी प्रभा
पूरित समासद नहि चाहि ॥ करत श्रस्तुति मारकंडे श्रादि मूनि मित धाम ॥ वाकदेवी
सरस्वती से। पास श्रीत श्रीभराम ॥ जगत कर्ता चतुर्मुख को तहां लिख सुखटान ॥ दंडवत
परनाम करि मुनि कियो सुस्तव गान ॥ ९ ॥ प्रसंन हुके कह्यो ब्रह्मा बचन नारद पास ॥
कहा ब्रुक्ती चहत है। से। कहहु मुनि मित रास ॥

Subject — अध्यात्म रामायण का अनुवाद जान पड़ता है क्योंकि कवि कई जगह

Note.—यन्धकर्ता कवि रघुनाच बन्दीजन हैं। लिपिकाल मिती त्राषाक कृष्ण २ मुद्द बार संवत् १६०६ सन् १९५६ फसलो है।

No. 24.—वाल्मोकि रामायण क्लोकार्थ प्रकाश Verse. Substance — country-made paper. Leaves—222. Size — 131×71 Inches. Lines — 9 on a page.

Extent_3,960 ślokas. Appearance—new. Complete. Correct. Character—Devanágarí. 'Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Válmíki Rámáyana Slokártha Prakása.—Translation of the first book and five chapters of the fourth book of Válmíki's Rámáyana by Ganesa Kavi, son of Gulába Kavi. He flourished in 1800 A.D.

बालकांड ॥

Beginning.—श्रीगणेशयनमः ॥ श्री रामायनमः ॥ गिरजा मुत गिरजा महित बंदि कालिका हेश ॥ हन्मान मुनि यंथ कृत वरिन राम जगदीश ॥ ९ ॥ कविन ॥ वृद्धि के निधान जे प्रधान काह्य कारज में दीजे वरदान ऐसे वरण हमेस के ॥ दुषण ते दूरि भूरि भूषण ते पूरि गूरि भूषण समेत हेतु नवी रस वेश के ॥ भनत गनेश छन्द छन्द में ललाम रूप भूष मन मोहें मोहें पंडित मुदेश के ॥ यंथ परि पूरण के कारण करिण हार दीजिए निवाहि नेम नंदन महेश के ॥ ९ ॥

संदरकांड ॥

End.—चिन्ह जैसे वाण त्रण को घात्र करि उत्पन्न है ॥ लिष परत जैसे है नहीं मोइ वाय करि श्रित भग्न है ॥ ऐसे तरह की जानुको हनुमान ताहि न देषियो ॥ जेहि विरह करि श्रित राम के चित होते कष्ट विसेषियो ॥ २० ॥ दोहा ॥ राम मनुज पित को प्रिया सिया न लिष हनुमंत ॥ किप ढूंढत बड़ बेर लिंग दुः जित भर श्रनंत ॥ २ ॥ इति श्री बाल्मीकीय रामायण श्लोकार्थ प्रकारो महाराजाधिराज उदित नारायण कारिते गणेश किव कृते बाल्मीकीय रामायणे सुंदर कांडे पंचम: सर्गः ॥ ॥ ॥

Subject.—बाल्मोिक रामायण के पूरे बालकांड श्रीर सुंदरकांड के ६ स्मा का श्रमुवाद ॥

Note.—लाल कवि के पीच गुलाब किव के पुच गणेश किव कृत। ये महाराज उदित
नारायण के श्राध्यत ये श्रीर उन्हीं की श्राचा से इन्हेंने यह श्रमुवाद किया था। निर्माणािद
काल का पता नहीं है ॥

No. 25.— ताशलपथ Verse. Substance—country-made paper. Leaves —236. Size—13×6½ inches. Lines — 11 on a page. Extent—5,310 ślokas. Appearance — old. Incomplete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Kościła Patha.—Translation of a Sanskrit book called Kola Kalpa (?), describing in details the scenes from Ráma Chandra's life as described in the second book of Válamíki's Rámáyana. The name of the author is Rudrapratápa Singha, who composed this book in Samvat 1877 (1820 A.D.) at village Mándavya on the banks of the river Ganges.

Beginning.—.....रवहु मुकुमारू । कार्य सकल मंत्री सिर राषी । श्रापुन श्रंतःपुर श्रमिलापी । प्रथमहि केकेइ गृह श्राये । दीप पानि भृत्या श्रधिकाये । करत प्रसंस
सचिव गण भूरो । बोलत प्रतिहारिन पुर दूरो । मध्य कक्क ते मंत्री येते । गये माम मंदिर
कह तेते । केकेई प्रतिहारिण श्राई । गृहण रानि का पालइ लाई । ८ । देाहा । काप सदन
सुनि कम्पु किमि लिमि करि सिंह निहारि । केदली ताल सवेद तह मानहु बाता चारि । २ ।

End.—दोहा ॥ गृहते निहं हिंसिक परम पशुते बुद्धि न थार ॥ पृश्चल निहं गियाका सिरिस सिरास अवामिल भार ॥ ६ ॥ ची० ॥ यक यक गृण चारिउ माहा ॥ हो चारिउ गृण युत नरनाहा ॥ ताते जाणित होहु दयाला ॥ को कलुणी मा सिरस विशाला ॥ महा भार निहं पात विरावू ॥ नेहि. वाहन कह यक जहावू ॥ पलाह।रि वहु मृग समुदाई ॥ केवल

हिर मतंग धरि खाई ॥ मा अघ शैल उठाविन हारी ॥ केवल शिश तुम अवधिवहारी ॥ ताते सकल अमर तिंच भारे ॥ भचंड तुमहि अध खग्ड निहारे ॥ दोन जानि लिष आपन आसा ॥ मेट हु मार धार बहु आसा ॥ गक सहस वसु सत नग साता ॥ विक्रमांक संवत् विख्याता ॥ १६ ॥ दो० ॥ भरत खग्ड महि द्वीप वर जम्बु श्रुति विख्यात । दुहियावर्त सुमूमि के करी कथा गह जात ॥ दे।० ॥ केाल कल्प केशव कथा करी से। के।शत पंथ ॥ हिर भूरि कल्पित नहीं श्रुति द्विजात सत ग्रंथ ॥ से।० ॥ हिंद वश्य गहि काल गुंड शूर प्रख्यात महि ॥ किंग रास महिपाल ॥ पालत मेदिनि मनु सिरस ॥ दे।० ॥ तीरथ अमर नदो सुबद काल्क रूप किल राम ॥ यूच्य देव किल चिष्डका मनु गक रघुवर नाम ॥ कृन्द ॥ निज मित विहित हिर नाम गान पुग्य मत से।हो करी ॥ जिमि भाष पूर्विह भग बुभेड हेतु सादर शंकरी ॥ रघुवीर किंकर मृत्य किंकर केर अनुग कहावउं ॥ यावत रहे। महिमाह तावत नाम तब नित गावउं ॥ दोहा ॥ दिवा दास कुल ख्यात महि नृप पेश्चर्य विशाल ॥ सद्रप्रताप सु तस्य सुत वर्येंड चिरत कृपाल ॥ ६ ॥ हित श्री स्वसिद्धान्तात्मे रामखग्डे श्री सद्रप्रताप्रसिंह विरचित काशलपथे देश भूमि पुर महात्म वर्योंना नाम समचत्वारिंगा विश्वाम: ॥ १६ ॥ ६ ॥ ९ ॥ ९ ॥

Subject. - रामायण श्रयोध्याकांड का सविस्तर चरित्र।

Note.—यम्थकर्ता रुद्रप्रतापिसंह हैं। इन्हेंनि इस यम्थ की विध्याचल के निकट गंगा के दिचिय तीर पर मांडव्ययाम में रचा या ब्रीर स्यात् यह राजा भी कहलाते थे—संवत् १८०० के विक्रम साल में यह यम्थ बना है—यह कोई संस्कृत यम्थ कीलकल्प नाम के यम्थ का श्रनुवाद है।

No. 26.—नविश्व केशवदास कृत Verse. Substance—country-made paper. Leaves—16. Size—6\\ \times 5\\ \frac{1}{4}\) inches. Lines—21 on a page. Extent—300 \(\text{slokas}\). Appearance — old. Complete. Correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Nakhasikha Kesara Dása Krita.—Description of the different parts of the body by the celebrated Kesava Dása (1600 A.D.). The manuscript is dated Samvat 1853 (1796 A.D.).

Beginning.—श्रीगणेशायनमः ॥ श्रथ केसीदास कृत नप सिष लिष्यते ॥ देा ॥ सिव-ता के परताप च्यों बरने कितता श्रंग। कहे यथा मित बरिन त्यों विनता के प्रत्यंग ९ कही जु पूरन पंडितिन जाकी जितनो जानि । तितनो श्रव ती श्रङ्ग को उपमा कहाँ वर्षान २ नष ते सिष ला बरिनये देवी दीपित देपि । सिपते नप ला मानुषी केसवदास विसेषि ॥ ॥

End.—ग्रन्यच्च : छप्पै : कः ॥ महि मोहन मेहिनो रूप महिमा रुचि रूरी मद्रन मंच को। सिद्ध पेम को। पद्धित पूरी जीवन मूरि विविच किया जगजीव मिच को। किया चित्त को वृत्ति भित्त ग्राभिलाष चित्त को केसव परमानंद को। ग्रानंद सकित किया बरिन ग्राधार रूप भव धरन को राधा बज बाधा हरन को ६५ इति श्री केसवदास कृत नष्मिष लियते संपूर्न कासी जो मध्ये रूपचंद गाँड संवत् १८५३ मिती ग्रासाठ शुद्ध ४ वृधवासरे॥

[१३ पच में यह समाप्त होगया आगे इसके ३ पच में और भी केशवदासही का कुछ कविता का संयह है। प्रायः कवित हैं]।

Subject. - नख से शिखा पर्यन्त प्रत्यंग की शाभा का वर्णन ॥

Note. — प्रसिद्ध कवि केशवदास कृत—लिपिकाल संघत् १८४३ मि॰ श्रासाङ शुद्ध १४ बुधवार है।

No. 27.—1) राधा नवाचित्र Verse. Substance — country-made paper. Leaves—16. Size—6½ × 5 inches. Lines—17 on a page. Extent—280 ślokas Appearance — old. Complete. Correct. Character — Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Śri Rādhá Nakha Sikha.—Description of the different parts of the body of Rádhá by the poet Dwija. The manuscript is dated Samvat 1855 (1798 A.D.). This poet is not the Dwija alias Manna Lal of Benares.

Beginning.—श्री गयोशायनमः ॥ दोहा ॥ श्रो राधां मेहिन प्रिया बंदाबन मुखधाम ॥ दिल कवि तुव वरनन करें नष सिष कवि श्रीभरामं॥ १ ॥ चरन वः ॥ वधुक वरन मान हरन ल्पा के केथे। पाने बिंबरोचन रुचिर सुधरत हैं। जावक समेत श्रनुराग के निकेत केथें। रजेगुन के कवि हेत विहरत हैं। कहै दिज कि मध्मलते मृदुल नोके याहो सेच विदुम कठीरता धरत हैं। जोबन दिनेस की मूय्यन परिस तेरे पद तामरस तामरस निदरत हैं २॥

End.—श्रमल कमल रंभ खंभ से उलंटि धरे गुरन जुगल देषि केहरी नसत है।
सुधारस पैरकारो लर मध्तूल डारी सीफल मृनाल कंब्रु सीभा सरसत है। सुमन गुलांब बिंब
मदन मुकर कोर खंजन कमान उपमान परसत है। द्विज कवि जान कही राधिका सुजान कवि
मेरे जान चंद ढिग नागिन लसत है ६२ इति श्रो द्विज कवि कृत लिध्यते समाप्त श्रो कासा
मधे कृपचंद गाँड संवत् १८५५ मो० वैसाष सु० २ सीम ॥

Subject.—नख से शिखा पर्यन्त शाभा वर्षन ॥

Note.—द्विच कविकृत । लिपिकाल संवत् १८४५ वैशाख शुक्त २ सेामवार है ।

No. 28.—प्रेम तरंग चिन्द्रका Verse. Substance — country-made paper. Leaves—37. Size — $6\frac{1}{2} \times 4\frac{3}{4}$ inches. Lines — 13 on a page. Extent—600 slokas. Appearance — old. Complete. Correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Prema Țaranga Chandriká.—The description of the different kinds of affection by the poet Deva (1620 A.D.). The manuscript is dated Samvat 1857 (1800 A.D.).

Beginning.—श्री गयोशायनमः ॥ ऋष देवकवि कृत प्रेमतरंगचिदका लिध्यते ॥ मंगला चरण सवद्या ॥ ऋषित ऋषि लगाएं रहे मुनिये धुनि कानन को मुखकारी ॥ देव रही हिय में घरकें न एके निसरे विसरें न विसारी ॥ फल मेशा मु ज्यो मूल मुवास को है फल फूलि रही फुलबारी ॥ प्यारी उंज्यारी हिये भिरपूरि मुदूरि न जोवन मूरि हमारी ॥ ९ ॥

End.—देशि ॥ भिक्त भाव आमिक हूं नेह काम अनुराग ॥ वैर सला वात्मल्य हूं हरि हि मिलत बड़ भाग ॥ ६२ ॥ देव दीनवंधु दयासिंधुरादि के सहाई हूँ अवंधु को मरंधता गुभाई है ॥ जां हिरण्यकिषण विदार्यो नरिंस्ह हूँ उबाब्धो ग्रह्लाद सेना सच्च को खुभाई है ॥ रांवन को राम हूँ पठाया दिव्य धाम हुँके बामन पताल गित बिल को सुभाई है ॥ को करे प्रसंसा घनस्याम नदु नदु अंधालय कंसादिक बेरो वोर वंसागिन बुभाई है ॥ ६३ ॥ श्री राधा हरि चरन न्तुग देव देव अधिदेव ॥ दु:ख हरों सेवकिन के गुरु चरनन की सेव ॥ ६४ ॥ इति श्री देवनी कृत प्रेमतरंगचन्द्रिकायां चतुर्थ प्रकास: ॥ ४ ॥ लिखितं ईश्वरीप्रसाद गांड ब्राह्मण काशी की मध्ये श्रमने पठनाथें। श्री संवत् १८५० मिती वेशाख शुक्त ॥ ९ ॥ प्रतिषदा वार गुरु श्रमं भूमात् ॥

Subject.—प्रेम का स्वरूप, प्रेम की ना त्रीर कितनी प्रकार का होता है—इत्यादि का वर्णन ॥

Note.—प्रसिद्ध कवि देवदल कृत—लिपिकाल संवत् १८५० वेशाख शुक्ष प्रतिपदा गुरु

No. 29.— after Verse. Substance—count: y-made paper. Leaves—74. Size—7½ × 4½ inches. Lines—10 on a page. Extent—1,310 slokas. Appearance—old. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Maharaja of Banáras.

Kalki Charitra.—The story of the Kalki (24th) incarnation of Viṣṇu, which is yet to take place, by Praṇanatha Trivedi, who composed it in Samvat 1765 (1708 A.D.). The manuscript is dated Samvat 1849 (1792 A.D.).

Beginning.—डों सिद्धि ची गयेशायनमः ॥ दोहा ॥ यक रटन करिवर इदन सिद्धि सदन शिवलाल ॥ विश्व विनाशन विरद्ध सिर मूसासन गुन माल ॥ १ ॥ वारक वारन वदन किहि यूक्तत चान विकाल ॥ जैसे दीयक देहली भोतर चितर सकाल ॥ २ ॥ नाराच ॥ भवा- नि विंध्यवासिनी चांडंड जे प्रकासिनी उटंड पाप नासिनी सुंबुद्धि सिद्धि की भरे ॥ करे महीप रंक ते प्रमाण मेरु पंक ते हरे किनाक संक ते कटाच नेकड्स ढरे ॥ जपै निसंक नाम की बढे विनोद धाम की पुने समस्त काम की चांचि सिंधु उद्धरे ॥ महा गुमान गंजिनी विशाल मोक भंजिनी नमामि प्राण रंजिनी कृपालि पाहि किंकरे ॥ ३ ॥

End.—दोहा ॥ केंद्र विधि कलको कथा परे जु प्यवनि माहि ॥ श्रीता वक्ता भगत जन भवि कर नरक न जाहि ॥ इति श्री श्रो कलको चिर्च भगनी भविष्यते कथन मलेळान विध्वंपने उत्तर कांद्र प्रमम प्रेगपनः ॥ ० ॥ ॥ ॥ ॥ पुरप्ति जु के उत्तर दिपि केंगिन तोनि मुद्रित ॥ मेरध्यको नगरी बहु वरनि में। भिर पृति ॥ वरनि में। भिरपूरि परम अभिराम मुपाविन ॥ देव दनुज नर नाग पकल मुनि जन मन भाविन ॥ वुध वैदिक जहं वसत लसत मानहु सब हर हिति । निज निज मन लिज रहत लहत क्रोज निहं मुरप्ति ॥ सेरठा ॥ तेही पुर मितमंद बसन भगनी शर्म द्विज ॥ तेन लिपित मुखकंद परम मुभग कलकी कथा ॥ सेरठा ॥ मोहि न अवर ज्ञान ताते पंडित जन मुधी ॥ सेथब मित अनुमान अपनी श्रोर विचारिके ॥ संवत्सर नव ६ वेद ४ धृति १८ चेच कृष्ण रिवार ॥ किथि दशमो गुभ लिखि भई कथा सकल मुखसार ॥ संवत् १८४३ चेच मासि कृष्ण पर्वे दशम्यां रिवासरे । लिखि दशमो मुभ लिखि भई कथा सकल मुखसार ॥ संवत् १८४३ चेच मासि कृष्ण पर्वे दशम्यां रिवासरे । लिखितिमंदं पुस्तकं भगनी असदिकेन ॥ मंगल लेखकानांच पाठकानांच मंगलम् ॥ मंगनं सर्व साधूनां भूयो भूपित मंगलम् ॥ १ ॥ श्री गुम्भ्या नमः ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

Subject.-क्रिक अवतार की भविष्य कथा।

Note.— ग्रंथकर्ता कवि प्राननाथ चित्रेदी हैं। निर्माणकाल का सातवां देशा इस प्रकार है ॥ संवत् सचह से प्रगट पंस्ठि मक्षर सुमास ॥ वृधवासर श्री पंचमी कलकी कथा प्रकास ॥ ॥ लिपिकाल संवत् १८४६ चेच कृष्ण १० रविवार है ॥

No. 30.— वृहस्पति कांड Verse. Substance—country-made paper. Leaves—26. Size—8 × 41 inches. Lines—8 on a page. Extent—300 slokas. Appearance—old. Complete. Correct. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Vrihaspaii Kanda. — The effects of the planet Jupiter in the twelve Zodiacs on the human body by the celebrated Tulasi Dasa. (Died 1623 A.D.)

Beginning.—मो गगोशायनमः ॥ दोहा ॥ जे जे मो रघुवंश मिन दोनदयाल कृपाल ॥ मस कहि प्रभु गोरिस्वर बोले बचन रसाल ॥ ९ ॥ चेापाई ॥ सुनहु उमा मित रुचिर प्रसंगू ॥ सुमित जिलास सकल अस संगू ॥ सुरः गुरु दशा केर फल जेसा ॥ द्वादश राशि बणाना तैसा ॥

End.—सारठा ॥ टेहि सपांद भगवंत बारहि बार वेद कह ॥ बसहि हृदय श्रीकंत मुष्मा सिंधु कृपायतन ॥ इति श्री तुलसीदास कृतं वृहस्पति कांड समाप्रम् ॥ शुभ ॥

9	त्रय मेध्यस पर जब गुरु रहहीं	43	तुला रावि पर जब गुरु रहहीं
3	मुर गुन् जब वृषराचि मुयाना	qy	वृश्चिक रासि श्रमर गुरु श्रावहि
	मिथुन राप्ति पर मुर गुरु जबहों	90	वस धन रासि कहुहि जग पावन
ø	कर्क रासि सक्रे ^{ड्} य बसेराः	39	मुर कुल पु∍य मकर कृत बासा
3	मुर गुप्र जबहि सिंड ऋम्याना	₹Q	कुंभरांचि कर जीव बसेरा
44	रिव पंचम जब कन्या रामे:	48	मुर गुरु मोन गमि जब रहही

Subject.—वृह्हस्पति को बारहां राशियां की दशा का फल ॥

Note.—श्री गोस्थामी तुलसीदास जी कृत । काल इसमें काई नहीं है ॥

No. 31.—द्वार्णेंच Verse, Substance—country-made paper. Leaves—97. Size—104 × 64 inches. Lines—15 on a page. Extent—1,450 slokas. Appearance—ordinary. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Chhandárnava. — Hindi prosody by Bhikhári Dása Káyastha, who wrote it in Samvat 1799 (1742 A.D.). Bhikhári Dása is considered to be one of the great masters of Hindi composition.

Beginning.---श्री गणेशायनमः ॥ कर बंदन मंडिवाज खंडित पूरन पंडित ग्यान परं। िरिनंदिनि नदन अमुर निकंदन कीर्ति कर ॥ भूषन मृग लक्षण जन पन रचन पीर विचचन पास धरं॥ जय जय गन नायक बलगन घायक टास सहायक विधुन हरं॥ ९॥

End.—देहा ॥ छंदनि देहिरो बैहिरो करि निज बुधि विवेक । मन रेक्कि तुक श्रानिके दंडक रचा अनेक ॥ १ ॥ रागनि के वस की जिए ताहि प्रवंध वणिनि । छन्द लिए मा पदा है गदा छन्द जिनु जानि ॥ २ ॥ ग्यारह ते छबी स लिंग वन दुपद तुक रेक । सी सिर दे वहु छन्द दल धरे प्रवंध जिवेक ॥ ३ ॥ भेद छन्द दगडकानि का दोज पारावार । बरनत पन्य वताइ में दीन्हें मित अनुसार ॥ ४ ॥ स्वह सै निनानवे मधु वदि नवें कविंद । दास वक्यों छंदारनी सुमिरि सांबरे इन्द्र ॥ ५ ॥ इति श्री भिषारीदास कायस्य कृते छन्दानेवे दण्डक भेद वर्नन नाम पंचदसम तरंग: ॥ ५५ ॥ यन्य संपूर्न ॥ सुभंमम्तु ॥ सिद्धिरस्तु ।

Subject.—पिंगल॥

Nate.—कर्ता कवि भिषारीदास कायस्य । निर्माणकाल संवत् १९६६ चेष वदी ६ ॥

No. 32.— ইব্যালয় Prose and Verse. Substance—country-made paper. Leaves—5. Size—103×63 inches. Lines—15 on a page. Extent—75 ślokas. Appearance—ordinary. Incomplete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Chhandaprakása. — Hindi prosody in prose by Bhíkhári Dása. (See No. 31.)

Beginning.—श्रोगणेशाय नमः ॥ श्रय छंदप्रकास पोष्टी लिष्यते ॥ दोहा ॥ गनपति
गीरो शंभु का पग बंदी यह जाइ ॥ जासु श्रनुगह श्रगम ते मृगम बुद्धि को होइ ॥ १ ॥ श्री महाराजिन मुकुटमिन डिदितनरायन भूप ॥ संभुपुरी कासी मुखल ताका राज श्रनूप ॥ २ ॥ सेगठा ॥ रहत जासु दरबार सात दीप के श्रविन पिति ॥ रच्या ताहि करतार तिन मिथ डिदित दिनेस से। ॥ ३ ॥ दोहा ॥ रज सत दाया दान मे रस मे राजित बोर ॥ जग पालक यालक खलिन महाराज रनयीर ॥ ४ ॥ सेरठा ॥ सुकवि भिखारोदास किया यन्य छन्दारने। ॥ तिन छन्दिन परकास भी महराज पसंद हित ॥ ४ ॥

End.—संध्या प्रसार वर्षके ॥ वृत्ति ॥ ५६२६४३६४५३४२५३९० ॥ छन्द ॥ १२८॥ संध्या माचा वा वर्न प्रस्तारके ॥ वृत्ति ॥ ५६२६५००३३१६३३५६ ॥ छन्द ॥ ३६१ ॥ (आगे इति आदि कुछ नहीं है ॥)

Subject. -- कविता के प्रस्तार, वृत्ति कीर कुन्द संख्या का कथन ।

Note. -इस यन्य के कर्ता कवि भिषारीदास कायस्य हैं। ये काशिराज महाराज उदितनारायणसिंह के श्रामित थे॥

No. 33.— भारतम केल Verse. Substance—country-made paper. Leaves—57. Size—10½ × 5½ inches. Lines—11 on a page. Extent—1,350 slokas. Appearance—old. Complete. Generally correct. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Alama Keli.—An account of Rádhá and Krisna by the poet Alama, who was a Brahman by birth, but on falling in love with a Muhammadan woman he embraced Muhammadanism and remained for a long time in the service of Muazzam S'áha, son of Aurangzeb, and afterwards of Bahádur S'áha (1707—1712). Dr. Grierson says that he was born in 1700 A.D., but this date does not seem to be correct, as it only makes a child of 7 or 8 years an admired poet of his time. Besides, this manuscript copy of the Keli was made in Samvat 1753 (1696 A.D.), or 4 years earlier than the year of his birth as given by Dr. Grierson. In my opinion the poet must be 30 or 40 years old before he could write such elegant poetry. He must have, therefore, been born about 1660 A.D.

Beginning.—श्री मेथीशायनमः ॥ त्राय जालमकृत कियते लिष्यते ॥ त्राय बाललीला । धनाछरी छंद ॥ पलन षेलत नंद ललन छलन वल गांट लैने ललना करित माद गान है ॥ भालम मुक्ति पल पल मेया पावे भुष पोषित पियूष मुक्तरित प्रय पान है ॥ नंद मेा कहत नंदरानी हो महर मुत चंद की सी कलन बक्तु मेरे जान है ॥ त्राइ देपि न्यानंद से प्रारे कान्ह न्यानन में न्यान दिन न्यान घरो न्यान छिब न्यान है ॥ १॥

End.—सेन मुषासन होम होर पटचीर विविध वर । निर्धि निर्धि मन मृदित होतः निन्नु मुष संपति पर ॥ श्रालम के किव जु श्रापृ बने बिनता बनाइ विलसत विलास श्रीत ॥ नि रन्छ्य नगदीस सेानु भूल्योज श्रलप मित ॥ श्रजहूं संभारि श्रालम मुक्कि जोलां श्रीतक. निहं यस्यो ॥ पग खगमगात हेरत हसत पुविरह भुश्रंगम के। उस्यो ॥ ४०२ ॥ इति श्रो श्रालम कृत कवित्व श्रालम केलि समार्थ ॥ श्रुभमस्तु ॥ संवत् १०५३ समये श्रासन वदी श्रूष्टमी वार शुक्र ॥

Subject. - श्री राधा कृष्ण की लीला के कविता ॥ :

Note.—ग्रह यन्य कवि श्रालम कृत है। निर्माण काल नहीं मिला। लिपि काल. संवत् १०५३ पाश्विन कृष्ण प्राक्षकार है।

No. 34.—117 1913 Verse. Substance—Foolscap paper. Leaves—42. Size—9 × 5 inches. Lines—8 on a page. Extent—656 slokas. Appearance—old. Complete. Incorrect. Character — Devansgari. Place of deposit — Library of the Maharaja of Banaras.

Gyána Samudra.—A philosophical treatise dealing with Vedantism by the proct Sundara Dása of Gwalior. He attended the court of S'áhajahán. He wrote this book in Samvat 1710 (1653 A.D.). The manuscript is dated Samvat 1857 (1800 A.D.).

Beginning.—ची परमात्मने नमः ॥ अध जानसमुद्र लिख्यते ॥ मंगनाचरण छपी छंद, ॥ प्रधम बंदि परम्म परम जानंड स्वरूपं ॥ दुतिय बंदि गुरुदेव दियो निष्टि जान चनूपं ॥ तृतिय बंदि सब संत नेगिर कर तिनके चागिय ॥ मन बच काम प्रणाम कर्ने भय भ्रम सब भाग्य ॥ इहि भारति मंगलाचरण करि सुंदर यंथ बणाणिये ॥ तहं विद्य न के जि छपन्य यह निश्चय करि मानियें ॥ १ ॥

Subject.—वेदाना ॥

Note:—कर्ना ग्वालिया के मुंद्रदास है बीर यह दादूर्पथी जान पड़ते हैं। इस यंश्व का निर्माण काल संवत् १०१० भादें। मुद्रो १९ गुन्त्रार बीर लिपि काल संवत् १०४० चैक कृष्ण १४ रविवार है।

No. 35.—4 and Verse. Substance—country-made paper. Leaves — 30. Size — 11 × 6½ inches. Lines — 8 on a page. Extent — 360 ślokas. Appearance—old. Complete. Correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Kavimukha mandana. — Hindi rhetoric written by Gokula Natha of Banáras (See No. 15). The manuscript copy was made in Samvat 1870 (1813 A.D.).

Beginning.—मी गयोशायनमः ॥ सीता रामाभ्यांनमः ॥ भी गयापति से चरन भच्छ वारि · · · से म्हिंभ राम ॥ देत चारि फल चाहतें कल कमला के धाम ॥ १ ॥ (भागे ब्रह्मा से काशिराज तक की वंसावली टी है)

End.—हेतु लहनं ॥ हेतु मात सह हेतु जहं नही हेतु न सुषदान ॥ जीव जात सुर पुर चले चढ़े स्वर्ग सीपान ॥ २४८ ॥ जाप ॥ २४८ ॥ ताम । इति माद्र सुष ॥ वार चंद्र वासरे यन्य समाग्रं ॥ संवत् १८०० ॥

Subject.—ग्रलंकार

Note.—कानी कवि गोकुलनाथ है। यह पुम्नक कवि ने महाराज दिश्वंडिंस की आशा से २९ दिन में बनाई थी। इसके बनने का समय नहीं दिया है। लिपि काल संवत् १८०० भादपद शुक्त ४ चन्द्रवार है।

No. 36.— Tine Verse. Substance—country-made paper. Leaves—34. Size—9½ × 5 inches. Lines—9 on a page. Extent—630 ślokas. Appearance—ordinary. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Pingala. — Hindi prosody, written by Chintámani Tripáthi (Fl. 1650 A. D.), the eldest brother of the celebrated Bhúsana and Mati Ráma. He attended the court of Makaranda S'áha of Nágpur. The manuscript is dated Samvat 1956 (1899 A.D.).

Beginning.—म्री गणेशायनमः ॥ ऋष चिंतामणि कृत पिंगल लिप्यते ॥ दोहरा ॥ गजमुख जनने जनक के पगिन नाइ निज सीस ॥ चिंतामिन किंव साहि की देत बनाइ
म्रासीस ॥ १ ॥ ऋष्पय ॥ मुकुत माल उत मंग इतिह वर मंग गंग गित । उत सित चंदन माडु
इतिह निस्किर ललाट मीन । उतिह भाल मिण लाल इतिह दृग ऋनल विराजत । उत कपूर
तन लेप भस्म इत ऋति ऋबि छाजत । किंह चिंतामणि सम भेष धरि ऋति ऋतूप सोभा
सिहत । जय साजहु मुरजा साहि कहं गिरिजा हर ऋरधंग नित ॥ १ ॥ दोहा ॥ सूरज बंसो
भोसिला लसत साहि मकरंद । महाराज दिगपाल जिमि मंगल मुद जसु चंद ॥ ३ ॥

End.—ह्रप घनाइरी छंद लक्कनं दोहा ॥ सेरह सेरह पर जहां विरित्त श्रंत लघु होइ से । । ह्रप घन श्रक्षरो विलिस श्रक्कर जोइ ०२ यद्या । सिर शिश पर धर गैरि श्ररधंग धर जटा जूट गंग धर गरे मुंड माल घर । विपित विनास कर दोह दिसि वासकर पलिन उर सूल डर डमर श्रम्ल कर । सेवत श्रमर वर पगा सुर नर वर देत हरवर चितामिन को श्रमय वर । देह लसे विषधर मदन को गरब हर निज जन दुःख हर जे जे देव हर हर २०३ इति श्री मन्महाराजाधिराज सिंह मकरंद कारि श्री चिंतामिन कृते छंदे। विचार वृत्तानि निवृत्तानि समामं श्रुमं संवत् १६१६ मितो कातिक सुदो २ वार बुधवार के लिय गया । साकेन पियरी श्री श्री वल दुमन की वाल की ॥

Subject.—पिंगल, कविता बनाने के नियमादि ॥

Note.—ग्रंथकर्ता कवि चितामिण हैं। ग्रह मकरंद छाहि राजा के श्राधित थे बीर उन्हों की श्राचा से इन्होंने ग्रह ग्रंथ रचा। इस ग्रंथ का लिपि काल संवत् १६५६ कातिक सुदी २ ब्रुधवार है ॥

No. 37.—ਗਜ਼ਰ ਸ਼ੁਰੂਸ਼ Verse. Substance — country-made paper. Leaves—21. Size— $8\frac{1}{4} \times 4\frac{3}{4}$ inches. Lines—15 on a page. Extent—206 slokas. Appearance — old. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Ananda Anubhava.—A book dealing with spiritual principles and the worship of God by the poet, Ananda of Banáras. He wrote this book in Samvat 1842 (1765 A.D.).

Beginning.—श्री कृष्णायनमः ॥ श्रानंदोवाच ॥ सेरठा ॥ श्रादो करें परणाम । परम श्रातमा कृष्ण को ॥ इष्ट श्रान के श्याम । सर्व व्यापी विष्णु को ॥ दोहा ॥ सुने। मीत चित लाय को यह श्रध्यात्म विचार ॥ जो याको गावे सुने निश्चय हो भव पार ॥ उत्तम याको राखियो श्रानट अनुभय नाम ॥ या कों जो जन समुभिष्टें लोडें मृत्ति पर धाम ॥ मृत्ति होच काशोपुरी सब को इकरस जाय ॥ श्रानंद श्रनुभव यंथ यष्ट पूर्ण भये। तहं से।यः ॥ परब्रह्म परमात्मा श्रीकृष्ण भगवान ॥ यह सब श्रानंद द्वार हो श्राह्म कीनी जान ॥

End.—दोहा ॥ संवत महा पुनीत है ठारह से व्यालीस ॥ श्रानंद श्रनुभव पूर्ण कर हिरिहं निवायत सीस ॥ श्रानंद बन काशीपुरी तहां बस के श्रानंद ॥ गुण गाण गोपाल के दया करी गोविंद ॥ इति श्री श्रानंद श्रनुभव श्रानंद कृत भाषायां संपूर्ण समाप्रं॥ • ॥ श्री ॥ दोहा ॥ श्रानंद बन काशोपुरी राजमंदिर निज धाम ॥ लिखी ज्यातिषी विप्र ने नाम बुला की राम ॥ ९ ॥ श्री हरये नमः ॥

Subject.--उपापना युक्त ऋत्मज्ञान।

Note.—यह यन्य ग्रानंद कवि कृत हैं। यह कोई काशीवासी कृष्ण भक्त थे। निर्माण काल संवत् ५८४२ है।

No. 38.—भारत जिलास Verse. Substance—country-made paper. Leaves —232. Size—10½ × 7 inches. Lines—17 on a page. Extent — 4,400 slokas. Appearance — old. Complete. Generally correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Bhárata Vilása—The story of the Mahábhárata by the poet Diggaja, who wrote it in Samvat 1766 (1709 A.D.) under the patronage of Diwan Prithvi Singha, son of Udyota Singha. It is not clear who this Prithvi Singha was.

Beginning.— श्रीगणेशायनमः ॥ गुरुभ्यानमः । टंडक छन्द ॥ सुंदर वदन एक रदन विराजे ताहि मधुप प्रसंग सुंडादंड लपटावहीं ॥ दिग्गज सकल मिथिही का भुजदण्ड किथी मग्कत मिन पंड बलय बनावहीं ॥ बदन के बीच सुभ्र सेहित मयंक माना सुजस का श्रंकु विधि विष्णु से न पावहीं ॥ जानि एक ईस निज सीश विशे बीश याते गुरिन के गुरु श्रो गणेशज की गावहीं ॥ १ ॥

End.—दोहा ॥ जो विलास भारत ग्रहे पठे मुने चित लाइ ॥ ताको पुन्न कलच सब देइ चतुर्भुज ग्राइ ॥ ४३ ॥ सुष संपति दिनदिन घनी दान जुधु सत नीति ॥ त्रष्ट्र सिद्धि दाता ग्रहे भारत पारण प्रीति ॥ ४४ ॥ कृष्ण पराग्रन ग्रवन सुनि द्विज भीजन बहुदान । ऋतं कार भूषण वसन ग्रथासिक सनमान ॥ ४५ ॥ सेरठा ॥ भारत हरि गुन गूळ । जानहि सब्जन बिमल मित ॥ जे जढ़ता वस मूळ । ते जानहिं किम कृष्ण गुण् ॥ ४६ ॥ इति श्रो मन्महाराज उद्यातसिंहात्मज श्री दिवान प्रथ्वोसिंह विरचिते भारत विलासे इन्द्रासन जुधि-छिर गवनं नाम पंचिंचेशिध्याय ॥ ४॥ ३५ ॥ संपूर्ण ॥ गुणमस्तु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

Subject -- महाभारत की कथा॥

Note. —इस यन्य के कर्ना दिग्गज कवि हैं। इन्होंने पृथ्वीसिंह की श्राचा से यह यन्य बनाया श्रीर उन्हों के नाम से प्रकाशित किया। निर्माणकाल इसका संवत् १७६६ चैत्र शुक्र ४ गुम्बार है ॥

No. 39.—सञ्जन विलास Verse. Substance—country-made paper. Leaves—97. Size — 8 × 6 inches. Lines — 16 on a page. Extent — 1,940 slokas. Appearance — old. Complete. Correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Sajjana Vilása.—A book on rhetoric by the poet Datta, who lived under the patronage of Kunar Fatch Sinha of Tikári, District Gayá. He composed this book in Samvat 1801 (1747 A.D.). The manuscript is dated Samvat 1849 (1792 A.D.).

Beginning.—श्री गयोशायनमः ॥ कवित्त ॥ बंदे पुर मुनि गंधर्ष यह्छ नाग नर, कामद लिपानिधि सकल सिद्धि की है घर ॥ श्रमर सिरत की सरीज सुंड श्रांत से है चारयो भुज धरें पास श्रंकुस स्रभयवर ॥ सिंदुर भसुंड गज तुंड वक्र एक दन्त लंबोदर भने दन सकल कलुष हर ॥ गयापित ध्यारे। जी दुलारे। गिरिजा जू की सी सुमिरत देत सुष संपति की निकर ॥ १ ॥

End.—म्बो फतेसकुमार जग भेग भोज अवतार ॥ मंडित पंडित कविन सें रहत सदा दिखार ॥ १६५ ॥ राज समाज प्रजानि जुत पुत्र कलत्र सभृद्धि ॥ म्बो फतेस जगने लही सुजस सुधर्म सुवृद्धि ॥ १३६ ॥ जोलिंग गयापित गिरिपित फनपति सिर भुत्रभार ॥ चिरंजोव तबने रही म्बो फत्तंस सुकुमार ॥ १३० ॥ इति म्बोमिनमहाराज्युभार माग्येंद्र म्बी बाबू फतेसिंह कारिते किव दन कते सजन विलासे विवेग मंगर भेद वर्ननं नाम सम्मो विलास: ॥ ० ॥ समत्यं समामं ॥ म्बोरस्तु गुभंभूयात् ॥ कासो जो मधे लिष्यतं ब्राह्मन गें। इ ह्रप्चन्द मिती वैशाष वदी ५४ रवड संवत् १८४६ ॥ ॥ म्बो ॥ म्बो ॥ म्बो ॥ म्बो ॥ ॥ म्बो

Subject.—नायिका भेद ॥

Note.—यन्यकर्मा कविद्रत है। ये राजा टिकारी ज़िला गया के शासित थे। इनकी कुमार फतेसिंह ने श्राचा की, उसी पर इन्होंने यह यंथ। बनाया यन्थ बनाने का संवत् इस प्रकार लिखा है—संवत् ठारह से बरप चारि चैत सुदि चार ॥ नेमी बुध दिन की भया नया यन्थ अवतार । इसका लिक्काल संवत १८५६ है॥

No. 40.—जहांगीर चन्द्रिका Verse. Substance — country-made paper, Leaves —30. Size—5 × 5 inches. Lines—15 on a page. Extent—450 ślokas. Appearance—very old. Complete. Incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Jahángira Chandriká.—The praises of the Emperor Jahángira (1605—1627) by the poet Kesava Misra, who wrote this book in Samvat 1669 (1612 A.D.). The manuscript is dated Samvat 1848 (1791 A.D.).

Beginning. - श्री गोपोजनथल्लभाग्र नमः ॥ श्रथ जहांगीर चिन्द्रका कवि केसवदास कृत लिष्यते ॥ सुनहु गमेस दिनेस देस परदेस छेम कर ॥ श्रम्बरेस फानेत सेस नप तेस पेसवर ॥ पन्नेपेस प्रेतेस मुद्धसिद्धेस देखि श्रव ॥ बिहंगेस स्याहेस देव देवेस खेस सब ॥ प्रमु पर्वतेस सेकिम मिलिकलि कलेस के सब हरहु ॥ जग जहांगीर सक साहि कें पल पल ही रच्छा करहु ॥ ५ ॥ देविहा ॥ सेरह सं उनहनरा माहा मास विवाह ॥ जहांगीर सक साहि को करी चिन्द्रका चाह ॥ २ ॥

End.—दे। हा ॥ जहांगीर जू जगतपति दें पिगरो पुष पाजु ॥ केपवराई जहान में किया यहोते राजु ॥ १६० ॥ इति श्री सकल रब भूमंडला पडलेम्बर सकल साहि सिरोमिन श्री जहांगीर साहि यशचंदिका केपव मिश्र विरचिता समाग्रा ॥ संवत् १८४८ मोतो श्राषाक शुद्ध १२ मंगलवार लिख्यते हृपचंद ब्राह्मण गाड़ वाराणसी मध्ये मुभवतु श्रीरस्तु ॥

Subject.—जहागोर शाह का यश वर्णन ॥

Note. — कर्ना कवि केशव मित्र है। निर्माण काल संवत् १६:६ माघ मास है। लिपिकाल संवत १८४६ श्राणक शुद्ध १९ मंगलवार है।

No. 41.— भावविलास Verse. Substance—country-made paper. Leaves
— 66. Size — 6½ x 4¾ inches. Lines — 12 on a page. Extent — 980 slokas

Appearance—very old. Incomplete. Correct. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Bháva Vilása.—A treatise on rhetoric by the celebrated poet Deva. (Born 1604 A.D.). The manuscript is dated Samvat 1857 (1800 A.D.).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ भावविलास लिप्यते (इसके आगे प्रथम पच सब सादा पड़ा है जोर दीमक का खाया भी है फिर १२ पच तक चतुर्थाश पचे दीमक ने भर्ती भांति चाट लिये हैं दूसरा पच इस प्रकार से आरम्भ है)

End.—दोहा ॥ अलंकार ए मुण्य हैं इनके भेद अनंत ॥ आन गण्य के मितन ते जानि जाहु मितमंद ॥ ६० ॥ अपनी बुद्धि समान में कहाँ। ककू निरधार ॥ तातें मेपर किर कृपा लेहें सुमित सुधार ॥ ६० ॥ या साहित समुद्र के। बड़ेनु न पायो पार ॥ हम से ब्रेग्छे किवन के। तहां कहां आकार ॥ ६० ॥ के। सिरा किव देव के। नगर इटाणं वासु ॥ जीवन नवल सुभाव वर कीना भाव विलासु ॥ ६० ॥ यदसी पुस्तकं द्रष्टा तादसी लिषतं मया यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दे। यो न दीयते ॥ ६० ॥ दित श्री किव देवदत्त विर्वित भावविलासे अलंकार निरूपने पंचमा विलासः ॥ ४ ॥ समामं ॥ सुभमस्तु ॥ श्री संवत् १८५० मिती पेषि मासे शुक्ते पचे रिववासरे लिषितं श्री काशी जी मधे ईश्वग्रीमसद गोड़ ब्राह्मन अपने पठनाय श्री दुगा देव्ये नमः ॥ श्रीरस्तु सुभं भूयात् श्रीऽ॥—

Subject.—काव्ययन्य-नायिका भलंकारादि वर्णन ॥

Note.—ग्रह ग्रन्थ प्रसिद्ध कवि देव कृत है। लिपिकाल संवत् १८५० पेष शुक्र ६ रिवयार है॥

No. 42:— एट्रीप काञ्च Verse. Substance—country-made paper. Leaves—63. Size—11 × 7 inches. Lines 15 on a page. Extent—925 ślokas. Appearance—old. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rasadipa Kárya.—A book on Hindi rhetoric by Rájá Guru Daţţa Singha of Amethi (?). He composed this book in Samvaţ 1799 (1742 A.D.).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ श्री रामाधनमः ॥ ग्रंथ परिषुरण के तूरण विधनहारी मूकता के चूरण जवाहिर जुबान के ॥ परा श्रपरा के वैषरी के मध्यगा के प्रतिमा के भेद संधी श्रनुबंधी कवितान के ॥ भनत कविन्द्र प्रति पद नये नये कढे न्यारे न्यारे प्यारे नहू रस के विधान के ॥ वाणो के वरण युग परे ते चतुरमुख होत है चतुरमुख बानी के समान के ॥ ९ ॥

End.— अय दर्शनं निरूप्यते ॥ तल्लचग्रम् ॥ दोहा ॥ दर्शन तीनि प्रकार के भाषे हैं किवि एका होत दुविध एंगार में चित्र स्वप्न पर्रातच ॥ ९ ॥ अय दर्शन तृत्यमिय यथा ॥ किवल ॥ पीतम की पट में लिप्यो चित्र निहारि छकी मन मीद बढाएं ॥ लागतर्ही पलता पल में सपने सुष भी अपनी पिय पाणं ॥ भूप भने बढियो औनंद वाल के सापरतीक यें। लाल के आएं ॥ च्यां एक बार सितासित में बढि जात बिहार निधार के व्हाएं ॥ २ ॥ दीहा ॥

दंपित नेह सनेह युत अनुभव दसा समीप ॥ जाति युक्ति से यह रूथे। सुवरन मय रसदीप ॥ ३ ॥ इति श्री भूपित गुरद्त्तिसंह विरचिते रस दीपाख्ये काव्ये दर्शनाभिधाना नाम द्वादशः प्रकाशः ॥ १९ ॥ शुभमस्तु ॥ श्री ॥ रामायनमः ॥ श्री ॥ श्री ॥

Subject.—नायिका भेदादि रस काव्य ॥

Note.—ग्रंथकर्ता राजा गुरुद्रतसिंह अमेठी के राजा थे। ऐसा जान पड़ता है कि इन्होंने इस ग्रंथ की संवत् १०६६ कार्तिक शुक्त लिलत तृतिया जुधवार की आरंभ कियां जैसा कि इस दोहे से प्रगट होता है ॥ सबह सतक निन्यानवे कार्तिक सुदि जुधवार ॥ ल॰ लित तृतीया में भया रसदोपक अवतार ॥ ८ ॥

No. 43.— कविकृत काउमारा Verse. Substance — country-made paper. Leaves—19. Size—11 × 7 inches. Lines—15 on a page. Extent—285 slokas. Appearance—old. Complete. Correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

• Kavikula Kanthábharana.—A treatise on Hindi rhetoric by the celebrated poet Dúlaha, a great authority on Hindi composition. He flourished about 1750 A.D. He was the grandson of Kálí Dása Trivedí and son of Udaya Nátha Trivedí, both celebrated authors of their time.

Beginning.—श्री गयोशायनमः ॥ श्री हनुमतेनमः ॥ त्रय त्रालंकार की ग्रंथ कवि दूर लंह कृत कंठाभरन लिष्यते । दोहा ॥ पारवती सिव चरन मै किव दूलह करि पीति ॥ थेरि क्रम क्रम तें कहें। त्रालंकार की रीति ॥ ९ ॥ चरन बरन लचन लिति रिव रिक्यो करतार ॥ बिन भूषन निह भूषहों किवता बनिता चार ॥ २ ॥ दीरघ मत सत किवन के ऋरथा से लघु तने ॥ किव दूलह यातें कहें। किवकुल कंठाभने ॥ ३ ॥

Subject.—ग्रलंकार काव्य ॥

Note.—ग्रंथकर्ता प्रसिद्ध कवि दूलह हैं जा संवत् १८०० के लगभग हुए थे॥

No. 44.—रसमालिका यन्य Verse. Substance — country-made paper. Leaves — 44. Size — 9 × 5 inches. Lines — 9 on a page. Extent—675 ślokas. Appearance — ordinary. Complete. Generally incorrect. Character — Devanágarí—Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rasamaliká Grantha.—A book dealing with subjects like spiritual knowledge, wordly renunciation, love of God, good company, etc. The author is one Rámacharana, who composed it in Samvat 1844 (1787 A.D.). The manuscript is dated Samvat 1854 (1797 A.D.).

Beginning.—श्री मीतारामाय नमः ॥ वसंत तिलक छन्द ॥ यस्योरमालतुलमी हिस्मिन्दिरेन भालं धनुवीय भुजांकितस्य ॥ भिक्तश्व ज्ञानमिभूषणभूषितांगं ते वैष्णवाः वर्ण रामचर्णा नमस्ते ॥ १ ॥ श्रीशद्गुरीर्वचन मिहनिसंधताएडी चितं ममर्मिल जलजातक संपुटायडा ॥ ज्ञानापिभारचर श्रवर शब्दत्यन्का दृश्यं स्वद्भूष सतसंग नमा नमस्ते ॥ २ ॥

काव्य छन्द ॥ श्री गर्गेश श्री शंभु ब्रष्टा श्री सरस्वती श्री ॥ श्री सुरसिर श्री गैरिचंद श्री सूर्य जती श्री ॥ श्री दुगपित श्री श्रिगिन पवन श्री वेदवरण श्री ॥ श्री समेत सब देव संदि पद रामचरण श्री ॥ ३ ॥

End.—हिरगित छन्द ॥ तप नेम पूजा पाठ जप जागादि क्रम डिलिम घना ॥
मोचादि सब निहं तुलिह जो पल एक सत्तमंगित बना ॥ जेहि संग पाय कुवेर में भिष्यान मिलु केंग्टिन गना ॥ तिज सकल कमीकमें गित सत्तसंग कर परि मम मना ॥ ४ ॥ दोहा॥
रामचरण सतसंग बिनु त्रंग भंग निहं हे। ॥ ग्रंग भंग बिनु कमें जड़ घरे रहत सब के। इ
॥ ५॥ तीन उपर त्राठ हुत ईसर त्रवकास किबात ॥ पे। लि कहब जिन पिय बरस त्रपर करब
विष्यात ॥ ६ ॥ पर भाषा के। काि के त्रपने जसिंह बढ़ाइ ॥ रामचरण ते स्वान किव कबहुं
न येट त्रचाइ ॥ ० ॥ ग्रुति गिरि कंदर में रहत कहत त्रनुठी बात ॥ रामचरण ते सिंह किव
नव गयंद नित खात ॥ ८ ॥ काव्य धर्म पूर्वापरिंह त्रधे त्रास निहं जान ॥ ते सिसु दूषन
देत हैं बिनु सतगुर के जान ॥ ६ ॥ संवत सत त्राष्टादसो चीत्रालिस दिन पूर ॥ सरद विजे
दसमी विमल रस गरंग्र भा पूर ॥ ९० ॥ इति श्री रसमालिकाबोध सास्त्रे संवादास्थले सद्
गुरेश्चिंदबोधे वर्णना नाम पंचदसोवकासः ॥ ९५ ॥ त्रियोध्यास्थले ॥ वैसाव बिद सुकल पर्च
दसम्यां संपूरणं समाप्रम्॥ लिपितं सन्नूपसद वैप्णव ॥ श्री महाराजनू के स्थले ॥ संवत ॥ ९८ ॥ ४४॥

Subject. - ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, सत्संगादि ॥

Note.—इसके यन्यकर्ता कोई रामचरण जान पड़ते हैं। संवंत् १८४४ शरद चहतु म्राश्विन शुक्र १० रविवार के। यह यन्य पूरा हुन्ना। लिपिकाल वैशाख शुक्र १० संवत् १८५४ है।

No. 45.— THE Verse. Substance—country-made paper. Leaves—48. Size—10\(^3\) \times 6\(^3\) inches. Lines 18 on a page. Extent—1,065 slokas. Appearance—old. Complete. Generally correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rasa Sára.—A book on Hindi composition dealing specially with the different kinds of heroines and styles, etc. The name of the author is not clearly given but in some places the word Dása occurs which may only be his nom-deplume. This book was written in Samvat 1791 (1734 A.D.).

Beginning.—श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा ॥ प्रथम मंगलाचरन को तीनि श्रातमक जानि ॥ नमस्कार त्रक ध्यान पुनि त्राधिरवाद वर्खानि ॥ नमस्कार त्रातमक मंगलाचरन ॥ कदन त्रनेकन विधुन को एक रदन गन राउ ॥ बंदन जुत बंदन करें। पुह्रकर पुह्रकर पाउ ॥ २ ॥ ध्यान त्रातमक मंगलाचरन ॥ ऋषे ॥ वक्रतुंड कुंडलित सुंड नग बलित पांडु रद ॥ त्राधि घुमंड मंडवित दान मंडित सुगंध मद ॥ बाहु दंड उदंड दुष मुंडिन त्रमुंड कर ॥ विधुन पंड कर पंडवोज सत मारतंड वर ॥ श्री पंड परस नंदन दास चंड चंडी तनय ॥ श्रभिलाषु लाष लाहन समुक्ति राषु त्रापु बाहन हृदय ॥ ३ ॥ श्रासिरवाद श्रातमक मंगलाचरन ॥ सेरठा ॥ करो चंद त्रीतंस मे। मन को श्रगमी सुगम ॥ काटो रस सारंस सुमित मधानी मधनु करि ॥ ४ ॥

End.—दोहा ॥ सबह से स्क्रानवे नभ सुदि क्ठ बुधवार ॥ श्रर-श्रवर देस प्रताप गढ़ भया ग्रंथ श्रवतार ॥ १८६ ॥ कुमित कुदूषन लाइहे बिगस्यो बरन बिगारि ॥ सुमित समुक्ति सुख पाइहे बिगस्यो बरन सुधारि ॥ १८० ॥ इति श्रो रससार संपुरन लिष्यते ॥ सुभ- मस्तु । जो देष सा लिषा मम देष न दीयते ॥

Subject.—काच्य नायिकाभेद रस मादि ॥

Note.—ग्रंथकती का नाम दो तीन कवितीं में 'दाय' कवि मिलता है—निर्माण काल ग्रंत के देखि में १९६१ है ॥ ये दास कवि कीन थे से पता नर्ही लगता ॥

No. 46.—unitati Verse. Substance—country-made paper. Leaves—46. Size—10\(^3\times\) 6\(^3\) inches. Lines—18 on a page. Extent—825 slokas. Appearance—old. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Śringára Nirnaya.—A treatise on Hindi composition dealing with the different parts of that subject. The name of the author is Bhikhari Dása, who was born in 1723 A.D.

Beginning.—श्री गयोशायनमः ॥ लियते पोथी सिंगार निर्नय ॥ कवित ॥ मूस मृगेस बल वृष बाह्रन किंकर कीन्हीं करोरि तैतीस कें। ॥ हाथिन में फरसा करवाल चिमूल धरे यल बाह्रवो षोस कें। ॥ जगत गुरू जग की जननी जगदीस भरे सुष्देत ऋसीस कें। ॥ दास प्रनाम करें कर जेरि गनाधिप कें। गिरिजा की गिरीस कें। ॥ १॥

End.—मरन दसा ॥ मरन दसा सब भांति सें है निरास मरिजाइ ॥ जीवन मत करि बरिनय तहं रस भंग बराई ॥ यथा ॥ नारी न हाथ रही उहि नारी के मारिनी मिहि मिनाज महाकी ॥ जीवन ढंग कहांते रही । परजंक में श्रंग रही मिलि जाकी ॥ बात को बोलिबो गात को डोलिबो हैरै को दास उसास उथा को ॥ सीरी हूँ श्राई तताई सिधाई कहीं मिब में कहा रह्यों बाकी ॥ २२४ ॥ इति श्रो पोथो सिंगार निर्नेग्र भिषारीदास कृते संपूर्न सुभमस्तु सिद्धिरस्तु । जो देण से लिल मम दोषों न दीग्रते ॥

Subject. -- नायक, नायिका, उनके श्रंग, लचग, शामा, श्रृंगारादि, हाव, भाव, दसी दसादि का वर्णन ॥

Note.—ग्रंथकती भिषारीदास हैं, यह श्रपना नाम कविता में दास रखते हैं ॥

No. 47.—মাবার্থবন্ধিনা Verse. Substance — country-made paper. Leaves—18. Size—5 × 4½ inches. Lines—10 on a page. Extent 210 ślokas. Appearance — new. Complete. Generally incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Bhávártha Chandriká.—Translation of the mahimna stotra or the praises of Siva. The translator is Maniyára Singha, son of Syáma Singha, of Banáras. The translation was made in Samvat 1843 (1786 A.D.) and the manuscript is dated Samvat 1856 (1799 A.D.).

Beginning.—श्रीगणेशायनमः ॥ श्रय सदाशिव महिन्तस्य पद भावार्थचंद्रिका टीका भाषा किवत निवंधने लिध्यते ॥ श्रासैमंगलार्थं गणपितं प्रार्थयामि कः । सिंधुर बदन सिद्धिसदन रदन यक राजे भुजवारि चारों सिंवां बलवेस के । जंचा जर उदद समूचा जाति रासि होत भासमान माना केटि उदय दिनेस के । सिंह मनियार लाल सिंदुर घटा में विद्वु क्रटा मिन रब स्वर्न भूषन श्रेसेस के । विविध विनोद रिच मीदक ले बेलें गणपित गांद गिरिजा महेस के ॥ ९ ॥ राम राम ।

End.—होत्रे का श्रनुक्वल धराधर से कड्जल श्री जलिंध से बासन प्रयासनते बिनिजाए। कलिंवट डारे लेघनी सुधारे पुदुमी से एच सरवच से वितानिजाए। ग्रार कहें ऐसे शाचारज ठाट ठठे विधि रटे यते कल्प केते गन सी नगन जाए। विरद विशाल लिखा सारदा सकल काल तदिए कृपाल गुज तेरी न बिने जाए॥ ३२°॥

संवत के श्रंकरं श्रद्ध वेद वसुचन्द्र पूरो चंद्र प्रांश चंद्र मास सरद वरद धर्म धन को।
चाकर अपंडित श्वारामचंद्र पेडित को मुख्य सिध्य कवि कृष्णलाल के चरन के। मनियार नाम
स्यामसिंह की तनय भी उदयहाँ वंस का · · · · पुष्यदंत महिमन को ३३
इति श्री मनियारसिंह विरचितं सदाशिव महिम्मस्य टीका भाषा कवित्व निवंधेन संपूर्ण। संवत्
पट्ध मि चैच शुक्र ९३ भृगु वासरे प्रत्यं लिषतं॥

. Subject.—श्रीमहादेव जी की स्तुति। महिन्त का कविनों में भाषानुवाद समूल।

Note,—ग्रंथकर्ना स्थामसिंह के पुष मिन्धारसिंह छ्वी हैं जी काशीवासी श्रारामचन्द्र
पंडित के सेवक तथा कृष्ण किव के मुख्य शिष्य थे। निर्माण काल संवत् १८४३ श्राश्विन शुक्र
१५ श्रीर लिपिकाल संवत् १८५६ मि॰ चैव शुक्र ९३ भृंगुवार है।

No. 48.— राम विके Verse. Substance — country-made paper. Leaves — 15. Size—7 × 5 inches. Lines—18 on a page. Extent—1,300 ślokas. Appearance—very old. Complete. Generally incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rága Viveka.—A book on the art of music by the poet Purașoțțama, who wrote it in Samvaț 1715 (1658 A.D.) for one Fațeha Chanda Káyástha, son of Pancholi Bhága Chanda. The manuscript is dated Samvaț 1744 (1687 A.D.).

Beginning.—श्रीगयोशायनमः॥ पूजीं श्राट्र भाव करि प्रथम · · · · · पाइ॥ मनसा वाचा कहत पुरुसेत्मम सिरनाइ॥ १॥ सिवर धरन विधुन हरन · · · हेरंब॥ पुरुसेतम की · · · को होहु सदा श्रवलंब॥ २॥ सारद चंद मुणी सद र · · · सम काइ॥ निगम · महोदिधि पारदा भजीं सारदा · · · ॥ ३॥ श्रित उज्जल कायस्थ कुल ताके भेद श्रनेक॥ तहां · · · मी नाम धर कहित हैं कुल एक॥ ४॥ प्रगट भए तिहि वंस में जग में लद्मी दास ॥ फैलि रह्मों संसार में जाकी सुजस प्रकास ॥ ४ (पहिला पव कुछ फटा है इसलिये पढ़ा नहीं गया॥)

End.—संकर रागः ॥ फतेचंद्र की चाह पर कीना राग विवेक ॥ याकां नीके समुफिके जानहुराग अनिक ॥ २० ॥ जो किय राग विवेक में कबहूं चूक्यो हो ह ॥ लीजें। सज्जन से धिके दूषा मित पल की ह ॥ २८ ॥ संवत् सबसे अधिक पंद्रह किय के रोज ॥ कीना राग विवेक तिथि पूना सुदि आसीज ॥ २८ जोलां गंगा गिरि सिसिर भी जोलां हिर अंग ॥ तेलां राग विवेक यह जग में रहें। अभंग ॥ १८० ॥ इति भी चतुर्दश विद्या निधानेत्यादि विवेक विरुद्द विराजमान कायस्थ कुल शेषर पंचाली भागचंद सुत भी फतेचंद्र कारते किय भी पुरसेतम कृते राग विवेक मेघराग परिवार स्वरूप कथनं नाम अष्टमः प्रकास संपूर्णीयं राग विवेक यंथ शुभ मस्तु ॥ इह इह ॥ संवत् १०४४ समय नाम पूस सुदी दुवादसी लीपीतं बंधुराम कायस्थ कासी मधे ॥ रामसहाई: ॥ इह ॥

Subject .-- संगीत ॥

Note.—यह यंथ पुरुषोत्तम कवि कृत है। ये किसी फतेचंद नामक कायस्य के श्राम्नित जान पड़ते हैं। उन्हों की श्राज्ञानुकूल यह यंथ रचा गया है। इसका निर्माण काल संवत १०१५ श्राध्विन सुदी १५ शुक्रवार श्रीर लिपिकाल संवत् १०४४ पूस सुदी १९ है।

No. 49.— दोषप्रकाश Verse. Substance—country-made paper. Leaves —32. Size—7½ × 4½ inches. Lines—17 on a page. Extent—420 slokas. Appearance—very old. Complete. Correct. Character—Devanagari. Place of deposit—Library of the Maharaja of Banaras.

Dipa Prakáša.—A book dealing with the different kinds of heroines by the poet Brahma Daţţa, who lived in the time of Maharaja Udiţa Narayana

Singha of Banáras. He wrote this book in Samvat 1866 (1809 A.D.) at the request of Babu Dípa Náráyana Singha, the younger brother of Mahárája Udita Náráyana Singha. The manuscript, which is dated Samvat 1860 (1803 A.D.), is in the author's own handwriting.

Beginning.—श्रीगविशायनमः ॥ कवितु ॥ सेदुर से भरा भाल विशाल उदै गिरि पें मने भानु उदै को ॥ दंत लसे मने द्वेज के। चंद विचारि के श्राया है मिन मिले को ॥ चंदन लीक ली चंद कला शिर चारि भुजा श्रहे दानि श्रभय के। ॥ केसे कलेश के। लेश रहे मन श्रानत ह्रय महेश तने के। ॥ १ ॥

End.—कवितु ॥ जीलों विश्व करके कमंडल में पानी चंद मंडल में मुनि की नि-सानी जीलो गाहियो ॥ जीलो यमरावती प्रखंडल प्रखंड नभ मंडल में यूर र्घायमंडल उमार्शियो ॥ कहे कवित्रंभ विरवंड बंसमीय तू है धनि तेरा जस नीहू खंडिन सर्राहियी ॥ जीलों फिसिंद फय मंडल में मही महीमंडल में तो लिंग प्रखंड तेरी साहियों ॥ स्था संपूर्वी गं पंथा ॥ दोहा ॥ प्रशादयशत प्रधिकषट पिष्ट वरष तप मास ॥ शुक्त पंचमी को किया दीप प्रकाश प्रकाश ॥ १ ॥ जीसे दीप प्रकाश से दुर्गिन परत सब सूर्षि ॥ तैसे दीप प्रकाश से वस्तु वरित सब व्यक्ति ॥ १ ॥ संवत् १८६६ फालगुय येथिमासी लिषा अष्टादस उपाध्याय दिवयी । शुम भी ॥

Subject.—नाधिका भेद ।

Note.—कती किन ब्रह्मदत हैं। ये काशिराज महाराज उदित नारायणिंह के समय के किन है बीर स्थात इन्हों के भामित भी थे। इन्होंने महाराज के मभोले भाई बाबू साहब दीपनाग्यणिंह की भाजा से यह यन्य बनाया। स्थका निर्माण काल संक्ष् १८६६ फागुन मुद्रो पंचमी कार लिकिकाल संवत् १८६६ फागुन मुद्रो १५ है।

No. 50.—— Verse. Substance—country-made paper. Leaves—10. Size—6½ × 5 inches. Lines—18 on a page. Extent—152 ślokas. Appearance—very old. Complete. Generally correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Nakha Śikha.—Description of the different parts of the body of a heroine by the poet Mirzá Abdur Rahmána, who wrote this book, while Farrukh a Siyar (1713-19 A.D.) was on the throne of Delhi. The manuscript is dated Samvat 1859 (1802 A.D.).

Beginning.—श्रीगयोशायन: ॥ श्रध नषशिष वर्णन ॥ मिरजा श्रबदुरहमान प्रेमी कृत लि॰ ॥ दोहा ॥ गुर गनेष सादेस कर रुचि से रचस्ससान। नषसिष मुन्दर सब किया कवि श्रवदुर रहमान ॥ ९ ॥ परकसेर मुलतान वर मुन्दर मुभट मुजान ॥ ताको मनसबदार मुम कवि श्रबदुर रहमान ॥ २ ॥ कवि श्रबदुर रहमान कृत नष सिष कंठ जे। होइ ॥ होइ सभा पंडित मुमर रिभी सब कवि लेख ॥ ३ ॥ जे। नर हिय विद्या धरे से विद्याधर मान ॥ गुंध धरे मंजूस में विद्याधान न जान ॥ ४ ॥ मन मंजूस मुधार के विद्या पुस्तक धार ॥ कीट लगे ना घुन लगे जीके करी विद्यार ॥ ५ ॥ श्रध पगनष व० ॥ तारे जातवारे दिन दिये निहारे जग लाग है प्यारे हुप मंगल की। लहे है ॥ केथी हे मुह्यग बीज जोबन के बीच केथी चनुराम बीजराज गुन बीज कहे है ॥ रहमान प्रेमी म्यारी मस्य भान की प्रधान काठ यग बत्लव वे राबे दुति सहे है ॥ रामना लाल है समन हीन धरी केथी भान की प्रधान काठ यग बत्लव वे राबे दुति सहे है ॥ रामना लाल है समन हीन धरी केथी भान के भास भन पाइ लाग रहे है ॥

End.—दीपन की लेख कापे दामिन की देह जापे सबला सी देव तापे जाने जब सब है । फूल मुस्कार गिरे बंबर से लारे करें चंद्रमा हू करें सेत अया मील दब है ॥ रह-मान ग्रेमी कहा। में तो चचरज लहा। ज्वाल की लपट लाने भाने जब तब है ॥ स्थारी के लषे उदात सबे लाम लीन होत एक जग जीत जात ऋबिली की ऋबि है ॥ ६८ ॥ देाहा ॥ व्यास गनेस मनाइ के नष सिष रच्यां संवार ॥ भूलि कहेया जा कळूक · · · लीजा मुक विसुधार ॥ ६६ ॥ इति भी प्रेमी कृत नषसिष · · · गंहि भी संवत् १८५६ मि · च्येष्ठ कृत · १ भीम वासरे लि · · · स्वरोप्रसाद गाड ब्राह्मण की कासी जी मध्ये ॥ शुभं भूय · · · · · ॥

Subject.—प्रत्यंग की शाभा का वर्णन ॥

Note: — यह यन्य कि मिक् श्रेष्ट्यर्रहमान प्रेमीकृत है, ये फर्रेख़ियर के समय के कि । वशेष निर्माण काल कुछ नहीं दिया ॥ लिपिकाल संवत् १८५६ जेठ बदी ९ मंगल वार श्रीर लेखक ईश्वरी प्रसाद गाड ब्राह्मण काशीवांसी है ॥

• No. 51—1918 Verse. Substance—country-made paper. Leaves—119. Size—10\(^3\times\) 6\(^3\) inches. Lines—15 on a page. Extent—1,785 slokas. Appearance—new. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rasa Rahasya.—A. book on rhetoric by Kulapati Miśra of Agra. He composed this book in Samvat 1727 (1670 A.D.) Dr. Grierson says that he was born in 1657 A.D. but there appears to be some mistake in this as Kulapati Miśra cannot be expected to write a book on Hindi rhetoric when he was only 13 years old

Beginning.—श्रोमते रामानुनाय नमः ॥ ऋष रसरहस्य लिष्यते ॥ सवैया ॥ श्रीसय कुंज बने क्वि पुंज रहे श्रील गुंजत या सुष लोजे ॥ नेन विसाल हिये बनमाल विलोकत रूप सुधारस पीजे ॥ नामिनि नाम को कीतुग तें जुग नात न नानिये न्या किन क्वोजें ॥ श्रानद या उमग्योई रहे पिय माहन की मुष देषिका कीजे ॥

End.—बसतु त्रागरे त्रागरे गुन तप सोल विलास ॥ विष्न मथुरिया मिष्न है हरि चरनन के दाग्न ॥ १४९ ॥ त्रभू मिश्न तिन बंस में परस राम जिमि राम ॥ तिनके सुत कुल-पित किया रस रहस्य सुषधाम ॥ १४९ ॥ जिते साज है कियत के मंमट कहे बणिन ॥ ते सब भाषा में कहे रस रहस्य में त्रानि ॥ १४३ ॥ संवतु सबह से बरष बोतो सताइस ॥ कातिक विद् यकादसी वार बरन बानीस ॥ १४४ ॥ इति श्री मिश्न कुलपित विरचिते रसरहस्ये त्राथालंकार निर्ह्णपनं नाम त्राष्टमा प्रतात ॥ ८ ॥ संपूर्न ॥ सुभंमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ श्रीराम ॥

Subject. -- काच्य प्रालंकारादि॥

Note.—निर्माणकर्ता कुलपित मिश्र हैं। निर्माण काल संवत् १०२० कार्तिक वदी १९ गुरुवार है ॥

No. 52.—5यंगार्थ के। मुद्दों Verse. Substance — country-made paper. Leaves—72. Size — $10\frac{3}{4} \times 6\frac{3}{4}$ inches. Lines — 15 on a page. Extent — 1,050 slokas. Appearance— new. Complete. Correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Vyangariha Kaumudi.—A book dealing with the different kinds of heroes and heroines with special reference to the sarcastic style of Hindi composition. The name of the poet is Pratápa, who attended the court of Vikrama Sáhi of Charakhári and wrote this book in Samvat 1882 (1825 A.D.). The author of the Siva Singh a Saroja is decidedly wrong, when he says that Partápa attended the court of Chhattrasala Bundelá (1649—1731 A.D.) for there is a difference of more than a century between these two persons.

Beginning.—श्रीगयोशायनमः ॥ रामायनमः ॥ श्रथ विंग्यार्थ कीमुदी लिप्यते॥ दोहा ॥ गनपति गिरा मनाइ के सुमिरि गुरन के पाइ ॥ कवित रीत ककु कहत है। विंगि श्रथं चितुलाइ ॥ १ ॥ बाचक लक्षक बिंजकी सहू तीन विधि मानि ॥ वाच्य लच्छ श्रह विंगि तहं श्रथं विविधि पहिचानि ॥ २ ॥ इनके लच्छन लच्छ बहु रस ग्रंथन ठहराइ ॥ ताते हरि बरने नही बढे ग्रंथ समुदाइ ॥ ३ ॥

End.—दोहा ॥ सिं दूती दरसन दसा हाव भाव बहु श्रीर ॥ याते निहं वर्नन करे बरने कि सब ठीर ॥ १२३ ॥ बिंगि श्ररथ श्रांतसे किंठन की किह पावे पार ॥ मंमट मत कहु समृिक चित कीना मित अनुसार ॥ १२४ ॥ यह विंग्यारथ कीमुदी पढे गुने चितु लाइ ॥ ताका मित साहित्य की कहुक श्रूथ दरसाइ ॥ १२४ ॥ संमतु सिंस वसु वसु सु द्वे गिन श्रवाढ की मास ॥ किय विंग्यारथ कीमुदी सुकवि प्रताप प्रकास ॥ १२६ ॥ बिगरी देत सुधार जे ते गिन सुकि सुजान ॥ बने। बिगारत जे मुक्ति प्रताप प्रकास ॥ १२६ ॥ बिगरी देत सुधार जे ते गिन सुकि सुजान ॥ बने। बिगारत जे मुक्ति ते कि श्रथम समान ॥ १२० ॥ इति श्री विद्वत कुल मनोत्साह कारिनो विंग्यार्थ कीमुदीया सुकि प्रताप विरचितायां नाइका नाइक वर्ननो। नाम संपूरन प्रकास ॥ छ छ छ छ ॥

Subject.—नायिका नायक चादि वर्णन।

Note. -- कर्ता मुकवि प्रताप हैं। निर्माणकाल मंवत् १८८२ त्राषाढ़ है ॥

• No. 53.—হনম কাত্যথকায় Prose and verse. Substance—country-made paper. Leaves—67. Size—11 × 6 inches. Lines—18 on a page. Extent—1,195 ślokas. Appearance—ordinary. Complete. Correct. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Uttama Kávya prakáša.—A book on Hindi composition with special reference to sarcastic style by Mahárája Viśwanátha Singha (1840) of Rewah. The manuscript is dated Samvat 1896 (1839 A.D.) in which year it appears that the book was also completed.

Beginning.—म्द्री गणेशायनमः ॥ श्रय उत्तम काष्यप्रकास लिप्यते । दोहा। हरि गुरु ष्री प्रिय दां ने ने सिंव सिंवा गनेस । सरस्वती सीता राम ने ने राधा राधेस ॥ १ ॥ गोपी मुकिया है सबै रिभवन हित बृजनाथ। कर्राह चरित कुल नाइकनि कहत सु कछु बिसुनाथ ॥ २ ॥ उत्तम काध्य प्रकास यहि नाम विचार श्रमान । सुर्काब सुमित गुन गनहिंगे या सम यंघ न श्रान ॥ ३ ॥ विक्त वे। धव्य काकु वाच्य श्रन्य संनिधि प्रस्ताव देस कालादिक श्रादि पद ते चेष्टा येतो वैशिष्ट है तिन में प्रथम या कवित में वैशिष्ट जन्म श्रर पति नायक है। आज अकेली आगारिही जाइ लई कली फूलन की मन भाई। देषत ही बन देबी तहां गिष्ठि के गई श्रापने श्रेन लिवाई। जावक दे किये व्याह सिंगार कही कछुवै रही ताहि डिराई। के हूं के च्या छुटी कानन व्हे छिग तेर ला आई पराइ में माई ॥ ४॥ विक्त है नाइका तामे विहार की वैशिष्ट है से कहै है देवी व्याहु के सिंगार किये से। कहि ब्रह्मा की सविधि के दिया जा विवाह से। गोपन किया की बनते भगी चली ऋहै। मैया कहि विवाह भये भये। जा विहार सा गापन किया या वस्तु व्यंजित भई विवाह ते पति नायक त्राया याते भी राधा जी की विवाह ते। भाइही गया है। गीपिन की वस्त्राहरन समे मे सब गोपाल बाल भये श्री कृष्णे ताही वर्ष में सब गोपिन की विवाह भये। कान्ह रूप गोप बालन से। ऋर गीता में लिये है की परा सिंत जीव है याते सर्व जीव मान श्री कृष्ण की सुकी या है अपर गोपो तीन प्रकार की है नित्या प्रेमा छाया इनका जानि के सुमित जे हम ते समाधान करि लेहरे तिनकी बेवरा ग्रंथ के विस्तार के भय ते नहीं लिप्यो ॥ ४॥

End.—सिद्धिः भी वांधव धनी राजाराम बंधेल। ताषु बंध राजा बसे रीवा भाष्ट्र नवेल ॥ १ ॥ ता कुल भी जग्रसिंह की विस्वनाय भूपाल। धुनि प्रकास कीना भला गांधा मा है ताल ॥ १ ॥ सिद्धि भी महाराजाधिराज ग्रीमहाराजा ग्रीराजा बहादुर सीता रामचंद्र कृपापाचिष्कारी विस्वनाग्रसिंह कू देव कृत उत्तम व्यंग काव्य यंग्र समाग्रं भवति। शुभं भूग्रात् मिती दुती जेठ सुदी ६ का संवत् १८६६ के (इसके बाद एक यंचाकार केष्ट्रवद्ध है जिसमें एक श्रीर १६ केष्ट्र श्रीर एक श्रीर ८ केष्ट्र है उनमें श्रीर भरे हैं उसके जगर "मध्य- करी" यह शीर्षक लिखा है ॥

Subject.—खंग काव्य ॥

Note. — कर्ना रीवाधिपति महाराज विश्वनाधिसंह है। इस ग्रंथ का लिपिकाल संवत् १९६६ है जो इसका निर्माण काल भी जान पड़ता है।

No. 54.—शांतशतक Prose and verse. Substance — country-made paper. Leaves—93. Size—10×6 inches. Lines—24 on a page. Extent—2,580 blokas. Appearance—ordinary. Complete. Generally correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Sánta Sataka.—A book dealing with spiritual subjects by Mahárája Viśvanátha Singha of Rewáh. The book is divided into three chapters, dealing with worldly renunciation, spiritual knowledge and final beatitude. The manuscript is dated Samvat 1895 (1838 A.D.) (See No. 53).

Beginning.—श्री गयोशायनमः ॥ श्रय शांत शतक लिष्यते ॥ दोहा।श्री रघुनंदन सरमुती गारि संभु गनंदेस ॥ हनुमान हरि गुरु प्रिया दास चरन धरि सीस ॥ ९ ॥ टीका मुक्ति प्रदीपका कहत श्रहे विसुनाथ ॥ गुरु मुष मुनि यहि बिधि करिहि शंच मुक्ति तेहि हाथ ॥ २ ॥ किवन ॥ नपनि नपत किट केहरी कपट उर भुजिन भुजंग वारों किसले करन में ॥ बदन में बिधु वारी नेनन निलन वारी मत चंचरीक वारी कुंचित कचन में ॥ नाथ विस्वनाथ के मसध्य राव रामचंद जगत के नाथ वारी श्राप गुन गन में ॥ काल रुद्र कुंधता में विधि वेद विज्ञता में वारी विष्णु बार बार करन सरन में ॥ ९ ॥

End.—बहुत ने हैं वेदांत तिनकी अभ्याप करिके थी बहत ने हैं संत तिनकी संग करि तिनके ने बहुत मत हैं तिनकी या संत सतक में बनायो है या में संतन के ने गुप्र गुप्र मावना है ये की कवित की अभ्यास करिके याकी रीति जी करि है सा या संस्थार समुद्र नी है ताकी सीयही गोपद सम उतिर नेहे ऋ ना या मांति कीऊ साधन न करि सकेगा थी याकी पाठी माच करेगा मूल तिनक की अर्थ समुक्ति के चित धरेगा ताकी वेसम्य, चान भक्ति होबही करेगी जीनी भांति सी थिरो बहुत अभ्यास करेगा ताते याकी परिचा करि लेब बहु उपदेस व्यंजित भया ३६॥

हित सिद्धि मी महाराजाधिराज मी महाराजा मी राजा बहादुर सीतारामचंद्रकृपा पाचाधिकारि विस्वनाथसिंहजूदेव कृत मुक्तिग्द संत सतक समाग्र । सुभमस्तु जेठ वदी ३ का संवत् १८१॥

Subject.—वेराग्य, चान श्रीर भक्ति इन तीन खंडी में मुस्तक विभक्त है ॥

Note.—संधवाली महाराज विश्वनार्थिएंड रीवांबिएति है। इसका निर्माण पश्चा लि॰ पिकाल गुस्तक के चंत में संवत् १०६४ चेठ बढ़ी है दिया है। No. 55.—लालित्यला Verse. Substance—country-made paper. Leaves—23. Size— $9 \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines—12 on a page. Extent—550 slokas. Appearance—old. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Lalitya Latá.—A book on Hindi rhetoric by the poet Deva Duțța of Jájamaû. He wrote this book in Samvaț 1791 (1734 A.D.). The manuscript is dated Samvaț 1805 (1748 A.D.). This Deva Duțța should not be confounded with the celebrated Deva Duțța of Mainapuri. There is another manuscript copy of this book dated Samvaț 1862 (1805 A.D.) in this library.

Beginning.—मी गणेशायनमः ॥ किवत ॥ बंदे मुर मुनि गंधरव यत्त नाग नर कामद कृपानिधि एकल सिद्धि की है घर । ग्रंमर एरित की एरोज सुंडग्रंथ से है चास्त्रो भुज धरे पाए ग्रंकुए ग्रम्भय वर ॥ सिंदुर भमुंड गज तुंड वक्ष एक दंत लंबोदर भने दत्त एकल कलुष हर । गणपित प्यारो जी दुलारा गिरिजा जू की से मुमिरत देत मुष संपत्तिन की निकर ॥ ९ ॥ एवेया ॥ ग्रंतर वेद पविच महा ग्रम्नी ग्रीर किनाज के मध्य विलास है । भागीरथी भवतारिन के तट देषत होत से पातक नाम है। देव सहूप एवे नर नारि दिनी दिन देषिय पुन्य प्रकास है। जज्ञ निनानवे कीने जिज्ञाति से जाजमक किव दत्त की वास है ॥ २ ॥

End.—दे10 ॥ सित सारी गारे श्रंगिन धीर फेन से श्रेन ॥ चली चांद्रनी में सुमिलि चंद्रमुषी लिखिन ॥ २५९ ॥ संकर ॥ चंद्र कला मुष चंद्र में नंदलला सुष षानि ॥ पोछी श्रंजन है
लग्या हैगुर से श्रधरानि ॥ २५२ ॥ संश्रष्टि ॥ संवत सम्बह से परे सकानवे प्रमान ॥ यह लालित्य
लता लिल रची पेष सुद्वान ॥ २५३ ॥ इति श्री कविदन कृत लालित्यलता संपूर्ण सुभ•
मस्तु ॥ दे10 ॥ वरष श्रठारह से श्रिधिक पांच पेष सुद्रि राम ॥ तिथि रविवासर की लिखी
भोषम लिलत ललाम ॥

Subject.—श्रलंकार ॥

Note.—कत्ती कविद्त जाजमऊनिवासी हैं। इस यन्य का निर्माण काल संवत् १०६१ जीर लिपिकाल संवत् १६०५ है।

No. 56.—ারিন্সান্তর Verse. Substance — country-made paper. Leaves — 74. Size — $11 \times 6\frac{3}{4}$ inches. Lines — 17 on a page. Extent — 1,550 ślokas. Appearance—ordinary. Complete. Generally correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rasika Mohana Kávya. — A book on Hindi composition by the poet Raghunátha Bandíjana (Fl. 1745 A.D.), who was the court poet of Mahárája Barivanda Singha of Banáras. The manuscript is dated Samvat 1862 (1805 A.D.).

Beginning.—श्रोगगोशायनमः श्री सरस्वत्येनमः । विचन हरन दुरमित दरन करन सकल कल्यान ॥ सिव सुत श्री गननाथ को सब सुख दायक ध्यान ॥ ९ ॥ श्री गुरदेव मुकुंद को लहिके क्रिया सहाइ ॥ करिवे को पायी सकति यंथिन को समुदाइ ॥ २ ॥ ब्रह्मा को सुत मानसिक गैतिम परम प्रसिद्धि ॥ ताके कुल कोटू मिसिर प्रगट भया तपनिद्धि ॥

End.—श्रापं ॥ पर श्रमंक लंकपित मेरी बिने मुने। पूर पारावार के। पहार्रान भरे। भयो। श्रावत बसंत न्यां त्यों बन उपबन सब रघुनाय हरे। भये। फूलि के फरे। भये। ॥ करिबे ने। है से। श्रव कीने मंच मंचित से। नगर बसैर्यन के बास के। डरो भये। ॥ तोइत

विपत्ति के हरैया राम राम ताके श्राग डबरायें ईछन विभोछन घरो भया ॥ ३२३ ॥ इति श्री किव रघुमाथ बंदीजन कामी बामी विर्वित काव्य रिमक मेरहने उपमादि श्रालंकार वर्ननं मुभमस्तु ॥ मंत्रत् १८६२ ॥ मकर मामे कृष्णपद्ये ॥ १५ ॥ श्री राम राम ॥

Subject .- अलंकार यन्य ॥

· Note.—ग्रन्थकर्ता कवि रघुनाथ बंदोजन काशीश्रासी हैं। ये महाराज बरिवंडसिंह के श्राश्रित थे। इन्होंने उनसे चारा ग्राम पाया था जा काशी से उत्तर ४ कास पर है श्रीर पंच क्रोशी से १ कीस दिनिय तरफ़ गंगा के समीप पड़ता हैं। इस ग्रन्थ का लिपिकाल संवत् १८६२ माध कृष्ण १५ है।

No. 57.—भी मुन्दर स्थामविलास Verse. Substance—country-made paper. Leaves—240. Size—9\frac{1}{4} \times 6 inches. Lines 18 on a page. Extent—5,370 slokas. Appearance—ordinary. Complete. Correct. Character—Devanagari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Śri Sundara Syáma Vilása.—Description of certain scenes from Kriṣṇa's life and the mention of certain Bhaktas. The name of the author is Sundara Dása. He was the son of Dúlha Rama, who was alive when Vazir Ali was defeated in Banáras. Sundara Dása wrote this book in Samvat 1867 (1810 A.D.).

Beginning.—मी राधा कृष्णायनमः ॥ चौषै ॥ हरि त्री गुर को प्रथम मनावों ॥ रिसक जनन के बिल बिल जावों ॥ हिर गुर को मन सें जो ध्यावें। ॥ पूरन काम धाम पद पावों। । रिच रिच रुचि हिर गुण गावों। । रिसक जनन पर रस बरणवों। । धूमि धूमि भूमि भुकि जावों।। भूमि भूमि पर सीक नचावों।। रोम रोम से मानंद पावों।। धूम धूम रस बरणि सिरावों।। म्रद्भारचना रचें रचावों।। भूमि भूमि मुख दे सुख पावों।।

End. — किर है श्री कामी में बाम ॥ धरें ध्यान दंगित की विलाम ॥ कृपा करो हिर हिर के मंत ॥ तिनकी कृपा पूरन भया गंध ॥ मंवत् ऋठारह में जानेगि ॥ मतसठ ता ऊपर मानेगि ॥ चित माम शुद्ध पच मगन मन ॥ नीमी श्री श्रीराम जनम दिन ॥ जो हित चित में पठे मुनेगी ॥ हिर चिर मन मांह गुनेगी ॥ में अवश्य हिर की पद पावे ॥ दोड अज्ञाते मुंदर गावे ॥ लिख्यों कहीं अपने निहं जान ॥ हिर प्रेरन में किया बषान ॥ केवल दंपित की करुणा में ॥ पूरन भया गन्ध यह तामें ॥ इति श्री मुंदर स्थाम विलाम समाप्रम् शुभ-मस्तु मिद्धरस्तु … दोहा ॥ मुंदर मुंदर ही जपा रटा यह मुंदर नाम ॥ यह रटना मब ते भली श्रीर न श्रावे काम ॥ मुंदर हिर के जनन में यह एक नित चाह ॥ मुंदर मुजम कहन की मन में रहे उमाह ॥

Subject. - कृप्णलीला तथा कुछ भक्तों का वर्णन ॥

Note.—यन्थकर्ता का नाम मुंदर जान पड़ता है और यह जाति के कायस्य काशी वासी थे। इन्हें ने इस यन्थ की संवत् १८६२ चैत सुदी है की पूर्ण किया। लिपिकाल नहीं है कदाचित् उन्हों के सामने की यह प्रति लिखी हो। सुंदरदास के पिता का नाम दूलहराम था जा वज़ीर अली को लड़ाई के समय काशी में विद्यमान थे।

No. 58.—স্বির্ভার্থন Verse. Substance—country-made paper. Leaves—58. Size—10\frac{3}{4} \times 6\frac{3}{4} \times inches. Lines—15 on a page. Extent—855 slokas. Appearance—new. Complete. Correct. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Sivarája Bhúsana.—A book on rhetoric in which the examples are almost all written in the heroic style by the celebrated poet Bhúsana, who composed this book in Samvat 1730 (1673 A.D.). Bhúsana's history is long and interesting. He remained at no less than 5 different court, viz., Aurangzeba, Chhattrasála, Śivájí and his son, Sambhájí. The date of Bhúsana's birth may be fixed between 1640 and 1650 A.D., as he is said to have been a young poet when he attended the court of Aurangzeba, prior to joining that of Śivájí, who was born in May 1672 A.D.

Beginning.—मी गयोशायनमः ॥ ऋष शिवराज भूषन लिघ्यते ॥ कवित ॥ विकट आपार भव पंथ के चले की म्यम हरन करन वीज नासे वरम्हाइये ॥ इहि लेकि पर लेकि सकल करन कीकनद से चरन हिये आनि के जुडाइये ॥ ऋलि कुल कलित कपोल ध्याइ लिलत मनंद हुए सहित में भूषन मन्हाइये ॥ पाय तनु भजन विध्यन गढ गंजन भगत मन रंजन दुरद मुष गाइये ॥ १ ॥

End.—संवतु सचह से तीस मुचि वाद तेरस भान। भूषन शिव भूषन किया पढ़ी सुनी सम्मान ॥ ३१६ ॥ विच कवित्व ॥ येक प्रभुता की धाम एके तीने वेद काम रहे पंचानन षड़ा-नन राजी सर्वदा ॥ साता वार चाठी जाम जाचिक निवाजे अवतार थिराजे कपान च्या हिर गृदा ॥ शिवराज भूषन अटल रहे तीली जासी चिदस भुवन सब गंग और नरमदा ॥ साहि तने साहसीक भीसला सरजा बंस दासरथी जा रसता सरजा विसरदा ॥ ३२० ॥ इति भी किव भूषन विरचिते शिवराज भूषन गृंथ प्रलंकारिन की संपूर्ण ॥ समामं ॥ * ॥ राम

Subject.—म्ब्रलंकार यन्य, वीर रस की कविता में ॥

Note.—यन्यकर्ता प्रसिद्ध कवि भूपन हैं । निर्माण काल संवत् १०३० है ॥

No. 59.— रिविजास Verse. Substance—country-made paper. Leaves—63. Size—9 × 6½ inches. Lines—13 on a page. Extent—700 ślokas. Appearance—very old. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rasika Vilása.—A treatise on Hindi composition by the poet Bhojarája, who attended the court of Rájá Vikramájita of Bundelakhanda. Rajá Vikrama was born in 1785 and died in 1828 A.D., consequently the time of Bhojarája may approximately be fixed at 1800 A.D.

Beginning.—श्रीकृष्णायनमः । ऋष रिषक विलास लिष्यते ॥ दे हा ॥ कलुष कदन साभा सदन इस हय बदन सुदेस ॥ बिसये प्रभु किव भाज के हृदय सरीज हमेस ॥ ९ ॥ ताजी ताजी रहु किये भाज हिये श्रुत सीव ॥ साजी साजी सुमत रच राजी बाजी ग्रीव ॥ २ ॥ रोज किव भाज उर चरन सरीज उद्घांह ॥ बिसये महरानी सदां बानी वानी माह ॥ ३ ॥

End.—प्रथ दिसाबन्द दोहा। नाइका परिकया प्रोपित पितका ॥ बाय बहत ईसान हिय प्रिणन नई रित देत ॥ पूरब सुष उत्तर सुषद पत दचन के हेत ॥ २९ ॥ समभ रीभ हें रिसिक कर वदन सरीज प्रकास ॥ रिसिक को रिसम्य सरस कोन्हों रिसिक विलास ॥ २२ ॥ सिष्ध प्रतिक विलास भी वर्ती विविध विचार ॥ भाषत होई जु भूल कहुं लीजी सुकवि सुधार ॥ २३ ॥ सिष्धकी बुंदेलवंसावतंस श्रीमान महाराजधिराज श्री राजा विक्रमाजीतज्ञ देवाणिए भोज राज सुकवि विरचित रिसक विलास काव्ये संपूर्त श्रुभमस्तु ॥ मंगलं ददात् ॥ सी राम ॥

Subject.—काव्य नायिकादि ॥

Note.—ग्रंथकर्ता पुकवि भोजराज हैं। इनके लेख से मालूम देता है कि ये बुंदेल-खंड के राजा विक्रमाजीत के श्रामित थे श्रीर उन्हों की श्राचा से इसे बनाया। समय श्रादि का कुछ पता नहीं॥

No. 60—हितापदेश उपपाणां बाबनो Verse. Substance — country-made paper. Leaves—8. Size—10½×5¼ inches. Lines—11 on a page. Extent—160 slokas. Appearance — old. Complete. Generally correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Hitopadesa Upaşánán Bávaní.—A collection of 54 Kundaliyas dealing with moral instructions by Swámi Agra Dása (Fl. 1575 A.D.). The manuscript copy was probably made in Samvat 1753 as this book is bound in the same volume with Alamkeli (No. 33) and is in the handwriting of the same man.

Beginning.—श्रीगयेशायनमः ॥ श्रगदास जी की कुंडलीया लिणतं ॥ महती दुखी बयार मे की किंह बेरी होइ ॥ की किंह बेरी होइ जीव माया जिन राचे ॥ हिर हीरामिष त्यागि कहा कांचिह किंज नांचे ॥ मृगतृष्या संसार श्रमरपुर ली जी धाविह ॥ सीपित पद विमुख सुषे सुपने निहं पाविह ॥ श्रगदास भूठी कहे ती हृदय नैन निज जोइ ॥ महती। दुखी ०॥ ९॥

End.—उपषाणां उपदेश हित च्यें दुम शाषा चंद ॥ च्यें दुम शाषा चंद दुतिय दिन दरम दिषात्रे ॥ यह कथन श्रवण श्रनुमेद हृदे हिर चरण बसात्रे ॥ विष्णु पदी बावनी खुद्धि बावन विस्तारा ॥ भव सागर षुरधेनु ताहि तिर लगे न वारा । श्रय श्रटल पावे भगित संत संग सदानंद ॥ उपषाणां उपदेश हित । ॥ ॥ ॥ इति हितापदेशमुपषाणां बावनी संपूर्णे ॥

Subject.—उपदेश ॥

Note.—श्री श्रगदास कृत । निर्माणकाल नहीं है। लिपि काल भी इसमें ता नहीं है परंतु श्रालमकेलि श्रीर ये दोना पुस्तकें एकही लेखक की लिखी हैं श्रीर दोनां एकही जिल्द में बंधी हैं ग्रातः लिपिकाल संवत् १०५३ है॥

No. 61.—काट्यानियोग Verse. Substance—country-made paper. Leaves—171. Size—10\(\frac{3}{4}\times 6\(\frac{3}{4}\) inches. Lines—14 on a page. Extent—2,423 slokas. Appearance—old. Complete. Generally correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Kávya Nirnaya—A treatise on Hindi composition written by Bhikharí Dása of Bundelakhanda in the name of the prince of Bundelakhanda whom he calls Hindúpati Babú Sáhib. The poet gives his nom-de-plume as Dása only. He flourished in 1750 A.D. The manuscript is dated Samvat 1871 (1814 A.D.).

Beginning.—श्रीगगोशायनमः ॥ छपे ॥ यक रदन द्वे मातु तृ चष चे। बाहु पंच कर । षट श्रानन वर वन्य सेव्य समाचि भालवर ॥ श्रष्ट सिद्धि नव निधि प्रदानि दस दिसि जस विस्तर । स्द्र इगारह शुष्ट द्वादसादित्य वोजवर ॥ जो चिद्रश वृंद बंदित चरन चोद्रह विदानि श्रादि गुरु । तिहि दाश पश्चदस हू तिथिन धरिय बोडशो ध्यान हर ॥ ९ ॥

End.—जाने। भिक्त न ग्यान की सिंक हो टास अनाय अनाय के स्थामिलू। मागे। हतो वर दीन दयानिथि दीनमा मेरी चिते भरे। हामि लू ॥ च्या विच नाम के नेह की व्यार है अंतरजामी निरंतरजामि लू। मे। रसना के रुचे रसना तिज राम नमामि नमामि नमामि लू ॥ इति श्री सकल कलाधर कलाधर वंसावतंस श्री मन्महाराज कुमार बाबू हींदूपित विर्चित काव्य निनेये रस देश देशिद्धार वर्ननं नाम ण्चवींसितमाल्लासः ॥ ९५ ॥ यंथ समाम सुभं भूयात् ॥ ॥ संवत ॥ ९००९ ॥

Subject.—काञ्य के सबं श्रंग, उनके लक्षणादि ॥

Note. — ग्रन्थकर्ता का नाम श्रंत में महाराज कुमार हिंदुपति बाबू साहब लिखा है परन्तु किंवतों में इस ग्रन्थ में दास नाम हो मिलता है। एक जगह भिषारीदास भी लिखा है। इससे ग्रह निश्चय होता है कि यह ग्रन्थ भिषारीदास का बनाया है। समय के विषय में श्रंत में केवल संवत् १८०१ है जो लिपिकाल जान पड़ता है।

No. 62.— No. 12 Verse. Substance—country-made paper. Leaves—44. Size—6½×4½ inches. Lines—14 on a page. Extent—750 ślokas. Appearance—old. Incomplete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Sringára. — Description of the different kinds of heroes and heroines written in the crotic style by the poet Bení of Asní in Samvat 1817 (1760 A.D.) under the patronage of one Nihachala Sinha. The manuscript is dated Samvat 1820 (1763 A.D.). Dr. Grierson mentions only one Bení Kavi of Asaní and he gives his date of birth as 1633 A.D. If he is the same poet as the author of the book under notice, his date of birth must be fixed a century later.

Beginning.—श्री गयोशायनमः ॥ प्रथम गयोशहि वर्षिये याते सब मुभ होत ॥ सित कर्डें जग मुजस के बढ़े मुकृत में गीत ॥ १ ॥ लस्यो कुंभ सेंदुर घृस्यों बिलसे नीली कीर ॥ एक रदन रिव शिस मना गस्यों राह बर जार ॥ २ ॥ कीना निहचलसिंह जू बेनी किव सी नेहु ॥ लीला राधा कान्ह की भाषा में करि देहु ॥ ३ ॥ वरणनु राधे कान्ह की सज्जन यो मुनि लेहिं॥ ७ यो मिसिरी के साथ ते कामें दामें देहिं ॥ ४ ॥ करियतु रस मय यन्थु यह रिस्कन की स्वि पाइ ॥ वरणनु राधे कृश्न के। सब विधि कविन सुनाइ ॥ ५ ॥

End.—... पु है श्रमनी वर मुभ यान ॥ बसत सबै पटुकुल जहां करें बेद के। गान ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ श्रष्टादस सत वर्ष गत सबह श्रोरो जानि ॥ फागुन दशमी सित मुभग चंद्रवार श्रमुमानि ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ सत्य मुकुल सब दिन्नन के छोट नाथ के हाथ ॥ लिपि पुस्तक पूरन भई कीनी कविन सनाथ ॥ ४० ॥ दोहा ॥ बिनती कीजतु कविन सें भूल परो जो होइ ॥ सेपि मुधारी बरन धरि यन्थिह नीके जोइ ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ भाषा के। समुदाउ बहु परे कहां लगु जानि ॥ मूछम याते में कह्यो श्रपनी बुधि श्रमुमानि ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ चरन परिस जगदम्ब के गनपति के सिरु नाइ ॥ यन्थ रच्यो श्रृंगार मुभ दीन्हों कविन बताइ ॥ ४५० ॥ श्रुभमस्तु ॥ श्री संवत् ॥ १८२० ॥ समें नाम ॥ श्राषाठ कृष्टन पन्न ॥ ० ॥ वासरे श्रुक्रवार ॥ ली: धानसींह वासी मोरजापुर : ॥ श्रो राधे कृष्टन० ॥ ॥ राम०

Subject.—मुंगार रस के कवित्तों में नायिका भेद श्रादि ।

Note.—किव बेनी कृत—यह याम असनी के रहने वाले थे और निहचलिंह के आिया जान एड़ते हैं। उन्हीं की आज्ञा से इन्होंने यह यण्य बनाया जैसा कि आदि के लीसरें दोहें से स्पष्ट होता है।

निर्माण काल मंवत १८९० फाल्गुण शुक्त १० चन्द्रवार श्रीर लिपि काल संवत् १८६० श्राषाठ कृष्ण २ शुक्रवार है ॥

No. 63.— उदितकीतिप्रकाश Verse. Substance — country-made paper. Leaves -4. Size -- 104 × 64 inches. Lines -- 23 on a page. Extent -- 50 slokas. Appearance — old. Complete. Correct. Character — Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Udița Kirți Prakáša. Praises of Makárája Udița Náráyana Singha of Banáras (1785-1835 A.D.) by the poet Braja Lála, who wrote this manuscrpt copy himself in Samvaț 1879 (1852 A.D.).

Beginning.—श्री हनुमते नमः ॥ अद्य उद्वितकीर्तिप्रकास लिष्यते ॥ दोहा ॥ अमल कमल विय कर लसत दिच्याभरन विसाल ॥ जय श्री मुत्ररन चरन किया अपि किया १ ॥ गंग बंस अवतंस हुत्र मान तने युजलाल ॥ उदित कीर्तिप्रकास मय भाषा कियत रसाल ॥ २ ॥ आसीर्वादिक छ्प्पे ॥ किप करिह तप जलिंग धरन धर जलिंग धरिह धर ॥ जलिंग अवन आकास जलिंग केलास वास हर ॥ जलिंग सृष्टि विधि रचिह जलिंग जग बचिह देव वर ॥ जलिंग राम जस लसिंह जलिंग मुर वसिंह मेम पर ॥ कियराज भनत निसि पति जलिंग जलिंग रैन दिन उग्गवय ॥ उद्योतनरायन भूष मिन तलिंग भाग भुव भुगंवय ॥ ३ ॥

End. — विक्रम श्रंचित मान कवि दै करिंद मर मुद्ध ॥ ता मुतने यह प्रति लिखी सीयहु मुद्ध श्रमुद्ध ॥ २६ ॥ इति श्री महेद्र संभार उतार काम्री मुर उदित नारायणस्य श्री मान कविंद्र तनय वृज्ञलाल भट्ट कविराज विरचिते कीर्ति प्रकामे संपूर्ण शुभं भूयात् ॥ १ ॥ मिती कार्तिक वदी ९९ मने संवत् ९८०६ मुर महा रामनगर लिपितं स्वहस्त ॥

Subject.—काशिराज महाराज उदितनारायणसिंह जो का यश वर्णन ॥

Note: — ऋवि वृजलाल कृत। संवत् १८०६ मिती कार्तिक बदी १९ शनिवार के। यह

No. 64.—श्रोलाल मुजुंद्विलास Verse. Substance—country-made paper. Leaves — 99. Size — $8\frac{7}{4} \times 5\frac{3}{4}$ inches. Lines — 14 on a page. Extent — 1,380 slokas. Appearance — ordinary. Incomplete. Correct. Character—Kaithí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Śri Lála Mukunda Vilása.—Description of the different kinds of heroes and heroines by the poet Mukunda Lál, who was a contemporary of Raghunátha (1745 A.D.) of Banáras.

Beginning. -श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा ॥ करि जग प्रतिविंग्यो तुहीं तो मैं जग बहु भेव ॥ दरमनीय तूंहीं सदा नमी नमी श्री देव ॥ १ ॥ दरमु कहावे जानिबी चारि भांति से। जान ॥ इक प्रतिच्छ अनुमान पुनि शब्द निपुन उपमान ॥ २ ॥ ग्यानेदिश्व अरु जिहि विखे तिहि संग भय जुग्यान ॥ से। परितच्छ कहावही सकल यन्य परमान ॥ २ ॥

End.—मुग्धा उत्तमा स्वाधीन प्रियतमा ॥ जया ॥ सुंदरी स्यानी रस मंदिर समोप आड़े रोकता पित्रा से ग्रेसी कैसी दोसु लीजिग्रे ॥ भावरी कराइ ल्याइ गई है। पन्नादे पाइ यों मुकुद लाल कहे न्नापे न्नाप मीजिग्रे ॥ मेरेही संदेहिन प्रसेद होत प्यारो के चलता कपर नवा चलाइ पाइ दीजिग्रे ॥ चेतु चाहती हैं। तो गरंधि मांद चूनरी की खेलिते ही पेही से। भरोसी

भारो की जिम्रे ॥ ३॥ मृग्धा मध्यमा स्वाधीन प्रियतमा जथा ॥ चीश्री चार चेक बीच होता क्या । उदास पाया पूरे भाग मेन माना सेवके सीनाहरी ॥ बांगें कर बीजना च · · · · · · · · · · (म्रागे कुळ नहीं है) ॥

Subject.—काष्य यण्य नाग्रिकादि ॥

Note.—ग्रन्थकर्ता मुकुंदलाल—यह किन रघुनाथ का समसामियक था ॥

No. 65.—कमण्डीणं हुलास: Verse. Substance — country-made paper. Leaves—60. Size—103 × 63 inches. Lines—15 on a page. Extent—1,100 slokas. Appearance—old. Complete. Correct. Character — Devanagari. Place of deposit.—Library of the Maharaja of Banaras.

Kamaruddin Khán Hulása.—An account of Delhi, the emperor, his ministers, etc., and a short description of the different kinds of heroes and heroines by the poet Ganjana, who wrote this book in Samvaṭ 1785 (1728 A.D.) under the patronage of Náwab Kamaruddina Khán whom the poet describes as the Vazir Azama of the Emperor Mohammad Śáha (1719-1748 A.D.) The original name of Kamaruddina Khán was Mira Muhammad Fázil. He was appointed minister of Muhammad Śáha after the resignation of Âsafjáh. He was killed in the opposition of Ahamad Śaha Abdáli at the battle of Sarahind in 1748 A.D. There are two copies of this manuscript in the possession of the Maháraja of Banáras. One is dated Samvaṭ 1856 (1799 A.D.), and the other Samvaṭ 1861 (1804 A.D.).

Beginning.—श्रोगगोशायनमः ॥ सरस्वत्येनमः॥ छूपे ॥ करि प्रथम मंगलिन बहुरि बहु बुद्धि प्रकासि ॥ जगत मुजप कहं देहि नाम मुख लेत हुलासि ॥ रिद्धिसिद्ध कहं कर्राह ठरिह थारेहि गुन निजु जन ॥ माल देहि ऋति मुजन कान मानिह भूपित मन ॥ सङ्कर सपूत मुणदाय हित हुव असरन कहं ऋति सरन ॥ बड़ भाग राग गंजन मुकवि हियहि धर्मा गनपति चरन ॥ १ ॥

End.—अध कृषी कलस ॥ चैसिठ कला प्रवीन चैदिही विद्या जाने ॥ सुन्दर सुधर उदार दच सब के मन माने ॥ स्वामिकाज अनुराग जसी अति तेज बली है ॥ रस निधान गुन बीर बड़ी जगमाह बली है ॥ सुनि सुजान मरदान मिन आजम उजीर सब जग कहइ ॥ कमसद्वीषां नवाब सी अष्ट सिद्ध गंजन लहइ ॥ २८ ॥ इति श्री सुकवि गंजन विरिचतायां कमस्त्वीषां हुलास संपूर्ण शुभमस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ संवत १८५६ मिती ज्येष्ठ कृष्ण ८ चंद्र वासरे लिषितं इस्वरी प्रसाद गोड़ कासी जी मधे पठनाथ ॥

(दूसरी प्रति जा इमी की नक्षल मालूम पड़ती है "श्री संवत् १८६१ श्रावण शुक्र चियादस्यां ॥ १३ रविवासरे ॥" की लिखी है ॥)

Subject.—पूर्व में जमुना दिल्ली पादशाह महल वज़ीर बंध ऋतु नव रसादि फिर नायिकादि का वर्णन है ॥

Note.—ग्रन्थकर्ता गंजन किन गोड़ गुर्जर काशी वासी हैं। नवाब कमस्ट्वींपां ने इनके। श्रादर दिया श्रीर फिर ग्रन्थ रचना की श्राचा दो ॥ इनके लेख से मालूम होता है कि नवाब कुछ हिन्दी किनता का रिसक था ॥

निर्माण काल। संवत सब्ह से वरष वीते पंचासीत। बैसाषी सुदि पंचमी भृगु वासर विप्रीत ॥ २३ ॥ = संवत् १००५ बैसाष शुक्त ५ शुक्त वार है। इस यन्य की दा प्रतियां हैं। नं १ बड़ी श्रीर पीछे की लिखी श्रीर नं १ छीटी पूर्व की लिखी है। इसी से नकल ली हुई नं १ मालूम देती है ॥

No. 66.—मो कृपाकंद नियंघ Verse. Substance — country-made paper. Leaves—102. Size—11 × 7 inches. Lines—18 on a page. Extent—1,836 ślokas. Appearance — old. Complete. Correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Sri Kripákanda Nibandha.—448 Kaviţṭas written in the erotic style with special reference to the praises of kriṣṇa, by the poet Ghanánanda or Anandaghana, who was killed in 1739 A.D. in the capture of Mathurá by Nadira Śaha.

Beginning.—म्रो गयोशाग्रनमः ॥ म्रो कृपाकंद, निबंध लिष्यते ॥ नेक उर म्राये ही बहुत दुष दूरि जात ताप विनु ताहि म्राप चन्दन कृपा करे ॥ लगनि दे लागनि दे पाग मनुरागनिदे जागत जगाइ लेके मंदन कृपा करे ॥ बानी के बिलास बरसावे घन म्रानंद है मूठ रूप प्रगट गूठ छंदन कृपा करे ॥ म्रारित निकंदन मिलावे नंद नंदन सु म्रानंदन मेरी मिता बंदन कृपा करे ॥ १॥

End.—संग लगे फिरी है। श्वनंग लगे रहे। मोहुवै गेल लगावत क्यों नहीं ॥ निरूप राच निह्नि परमा रस मूरित प्रीति प्रगावत क्यों नहीं ॥ ठील पर्यो तुमते घन श्वानंद है। गुन रामि प्रवावत क्यों नहीं ॥ जागत सावत से है। कहा कहें। भावत मीहि जगावत क्यों नहीं ॥ ४४८ ॥

Subject.—शंगार रस की कविता॥

Note.—ग्रन्थकर्ता घन श्रानंद प्रिद्ध कवि हैं—ये सन् १०६६ में मथुरा में मारे गर थे ॥

No.~67.—लिललाम Verse. Substance—country-made paper. Leaves —46. Size— $10\frac{3}{4} \times 6\frac{3}{4}$ inches. Lines—16 on a page. Extent—720 ślokas. Appearance—old. Complete. Correct. Character—Devanágari. Place of deposit—Library' of the Mahárája of Banáras.

Lalifa Laláma.—A book on Hindi Prosody by the poet Mați Ráma (1650 A.D.) who wrote this book for Bháva Sinha of the family of Rája Surjana Rao Hádá of Búndí.

Beginping.—श्रीगर्थेशायनमः ॥ दोहा ॥ मुखद साधु जन को सदा गजमुख दानि उदार॥ सेवनीय सब जगत की जग मा बाप कुमार॥ ९॥ किव मितराम गनेस की सुमिरत मुख सरसात॥ श्रीन पैन लागे विचन तूल तूल उड़ि जाति॥ २॥ मद रस मत मिलन्द गर्य गान मुदित गननाथ॥ सुमिरत किव मितराम के सिद्धि निद्धि निधि हाथ॥ ॥॥

End.—क्चिर ऋरष्य भूषन जे रचि जाने मितराम ॥ ताकी बानी जगत में बिलसे ऋति ऋभिराम ॥ ३६४ ॥ जवलिंग कच्छप केल सहस मृष धर्रान भार धर ॥ जबलिंग ऋति दिस्ति दिग्घ सेहित दिग्गज वर ॥ जबलिंग कि मितराम सिगिर सागर मिह मंडल ॥ ऋतिल ऋतल जल बलय जेित मंडल ऋषंडल ॥ नृष सचुसाल नंदन नवल भावसिंह भूषाल मिन ॥ जग चिरंजीव तब लिंग सुखद कहत सकल संसार धिन ॥ ३६४ ॥ कंठ करे से सभिन में बिलसे ऋति ऋभिगम ॥ सकल भयो संसार हित कविता लिंत ललाम ॥ ३६६ ॥ (ऋगे इति नहीं है परन्तु कविता के ऋनुमान से यन्य पूरा जान पड़ता है स्यात् के इते यक कविता रह गई हो तो हो ॥)

Subject.—कविता के नियमें का ग्रन्थ ॥

Note. -- यन्यकर्ता कवि मितराम प्रसिद्ध हैं। इन्होंने इस यन्य की खूंदी के राजा हाड़ा सुरजनराव के वंशन भावसिंह के लिये रचा ॥

No. 68.—कोशलेन्द्रस्थ वा रामाहस्य Verse. Substance — country-made paper. Leaves—204. Size—9½ × 6 inches. Lines—19 on a page. Extent—4,845 álokas. Appearance—new. Complete. Incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Kansalendra Rahasya or Rámarahasya. A religious book dealing with subjects like spiritual knowledge and love of god, etc.; by Rama Charan Dása• (Fl. 1780). The manuscript is dated Sanvat 1886 (1829 A.D.)

Beginning.—श्रीमते रांमानुजाय नमः श्लोक ॥ श्रमलगुणपयोधि विश्वविश्वाम-देवं विविधविभवदेहव्यूहमचेवतारं ॥ चिद्रवृष्ट्रजायुठं दिष्यलेकाधिनायं मिखल जन-निवासं रामचंद्रं नमामि ॥ ९ ॥ श्वजिनगुणं ज्ञानसत्यादिणेसदायं कृपासिधुमादां परेश.॥ सुचेदांतरामानुजं विश्वेषं प्रसाम्पाद्भृतं सद्धिभाषाकरोमि ॥ देश्हा ॥ श्वीपति श्रीसेनाधिपति सठरिपुनाथ कृपाल ॥ पदुम नयन श्रीराम पद वंदी भूधिर भाल ॥

End.—देाहा । विभुवन संपति लमित जित टंपित सीताराम । ध्यानहु उर त्रावत छनक रामवरन विश्वाम ३६ इति श्रीमद्रामवरनदास विरचित विभवेद्रमालिकासलेंद्र रहस्ये चतुर्ये। प्रवंधः ॥ संतत् १८८६ मिती फागुन वार सामार संपू : सुभः ॥

Subject.—जान भित्त प्रेम श्रादि का वर्णन ॥

Note.—ग्रंथकता रामचरणदास है। इस ग्रंथ का लिपिकाल संवत् १८८६ है।

No. 69.—बाजनामा वा देखितनामा Prose. Substance — country-made paper. Leaves—82. Size—8¾×5 inches. Lines—18 on a page. Extent—385 slokas. Appearance — very old. Complete. Correct. Character — Kaithí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Bázanáma or Daulatanámá.—An account of the birds of prey such as eagle, etc. The name of the author and the date of composition are not given. In one place it is said that Fíroza Sáha once asked the physicians of his court to prepare a treatise dealing with the kinds and treatment of the birds of prey and this book was accordingly written by them. There have been 3 Firoza Sáhas who were connected with the Royal family of Delhi. The first, who reigned from 1282 to 1296 belonged to the Khilji dynasty. The second, who reigned from 1351 to 1390 A.D. belonged to the Tughlak dynasty. The third belonged to the Mogal dynasty and was the son of Bahádur Sáha II. If by Firoza Sáha is meant one of the these princes, then it must be the last one as the language of the book will bear testimony and consequently the time of this may be approximately fixed at 1850 A.D.

Beginning.— बिर्मामल्लाहिर्हमानिर्हीमि ॥ बहुत तारीफ़ ख़ुदाइतग्राला को के पीछे ॥ जी पैदा करन वाला है रात ग्रीर दिन का जिसने इशारतं कुन के जुन को से हु ज़द हज़ार ग्रालम ग्रीर ग्रासमान बे सितून पैदा की या ॥ ज़मी को बैल पर रपा बैल का मछलो को पीठ पर रपा ॥ मळलो हवा पर रापी ॥ याने वह कादिर पाक ने इनसान के। एक मूठी पाक सें ग्रीर गर्रादस ग्रासमान सें ग्ररस व कुरसी व लीह व कलम व पैदाइस ग्रादम को ऐक साइत में। पेता सब किया ॥ तमाम ग्रालम तेरी ज़ात में। हैरान है तें नीचे परदे के हिया है तिस ग्रुदाइ का शुक्रुर बेशुमार ॥ तारीफ़ हज़रत महम्मद मसतफ़ा ॥

End.—इलाज कुलंज । तिल का तेल लेके नए बासन में। नई रुई की बती डालके किराग जलावे स्वाही ताई तब जा तेल बने सा एवं छोड़े मरोज़ जानवर की देवे तामा तर

करके ऐक हफ़ता बिलावे ॥ तिस पीछे घोरा सा गुलाब लेवे जिसमा एक पानगी तर होवे ॥ ऐक साता बिलावे चंगा होइ ॥ रिसाला से कामलुल मनमूर का तमाम लिया छ ॥

Subject.—बाज इत्यादि शिकारी पित्रयों की पिहचान उनकी श्राद्त मिलाज़ बीमारियां इत्यादि की पहिचान उनके रचाने श्रीर सिखाने की तरकी बें उनके इलाज इत्यादि॥

Note. कर्ती के न!म का पता नहीं लगता न समय मिलता है। पुस्तक प्राचीन है। यक जगह किताब में लिखा है कि फ़ीरे!ज़शाह ने हक़ीमा से कहा कि यक जानवरीं की पहिचान व इलाज मुक़रर करे। श्रीर उन्होंने इस किताब की बनाया।

No. 70.—खटमल वाईसी Versc. Substance — country-made paper. Leaves — 8. Size—11×7 inches. Lines — 18 on a page. Extent—130 ślokas. Appearance — old. Complete. Correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Khatamala Bátsi.—Praises of bug by Ali Muhiba Khán of Agrá, who composed this book in Samvat 1687 (1630 A.D.) when he was going from Agra to Delhi on some private business and had put up at an inn where he was sorely troubled by bugs.

Beginning.—श्रोगगोशायनमः ॥ ज्ञान दृष्टि करि देख लै एव से रामहिं राम। कारो पीरो भूलि के राखि लिया एक नाम ॥ १ ॥ नगर श्रागरे बस्तु है श्रलीमुहिबखां नाम। एक बार दिल्लो चला हता माहि कछु काम॥ २ ॥ हो डेरा ते दुक निकट बरस पस्त्रो श्रित मेह। उंट लाग पाछे रहे काहू किया न नेह ॥ ३ ॥

End.—बाधन के गन भाजि बन में बसे है दबे व्यालन के गन भुव तरे हर बरके । गज सिर डारे छूरि कक्षु न बसाय यातें ग्रेसी देह पाई ग्रीर ग्रेसे बल धरि के ॥ इनकी कि हा है ये ते। पसु हैं विचारे तिहूं लेकिही में जा बली से। डरे हैं भे भरि के । भूमि पे उतारे तब ग्राय प्रान हरे मीच पाट पे न ग्रावे घटमलिन के डिर के ॥ २२ ॥ इति श्री प्रोतम कविराज विरक्ति घटमल बाईसी समाप्रः॥

Subject:- खटमलें को प्रशंसा ॥

Note.—त्रागरे के रहने वाले ऋलोमुहि व्वखां उपनाम प्रीतम कवि ने संवत १६८० (रिपि वसु दोपक चन्द) में इस ग्रन्थ का बनाया।

No. 71.—ਸ਼ৢৄৄৄਜ਼ਫ਼ੑੑੑੑੑੑਸ਼ੑੑੑੑੵਜ਼ਫ਼ੑੑੑੑੑੑਸ਼ੑੑੑੑੑੑ —105. Size—10½ x 6½ inches. Lines—20 on a page. Extent—2,000 ślokas. Appearance ordinary. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Suvrițtahâra. —A book on Hindi Prosody by the poet Gajarâja of Banâras. He composed this book in Samvaț 1903 (1846 A.D.) Dr. Grierson says that he was born in 1817 A.D.

Beginning. -- श्रीगर्थेशायनमः ॥ श्रष्ट मुवृत्तहार लिख्यते ॥ देश्वि ॥ सिद्धि कर्रानः जग जननि के यामें नाम सनाय ॥ राजति वृत्त मुकतानि में मिन सरोज सित गाय ॥ १ ॥ गोद लिये गिरिजा गन नायक है श्रपने जनका प्रनपाली । क्रूटी लर्से श्रलकों सुकपोल पें माने। विधुंतुद को परनाली ॥ पान के हेतु. वितुंड भया गजराज पयाधर पे मित साली । कंचन

कुंभ ग्रमी सें भरें मने। रक्षक बेठा है तक्षक ताली ॥ २ ॥ सारठा ॥ गनाधि पे,१६०३ गति वाम । वरस माध सुद्धिं पंचमी ॥ गुरु वासर श्राभिराम । पूर्व भाद्र उडु परिघ जुनि ॥ ३ ॥

End.—सेरठा ॥ ईस्वर गुरू दयाल । सानी बानी श्रमृत की ॥ कविवर गर की माल कही मुकवि गजराज सें ॥ ९० ॥ देहा ॥ तेरी कविता पेषि के मा दिसि श्रावित लाज। एक वचन बहु बचन की समुक्ति घरो गजराज ॥ ९९ ॥ क्रिया भूत व्रतवान की सहित भविष्यं विवेक ॥ नारी नर वाची सवद समुक्ति रचा तिज टेक ॥ ९२ ॥ जुक्ति उक्ति दरसनका दरसाये सब देशि ॥ निर्धि पंच सुकवीन की भये। ग्यान तब मीहि ॥ ९३ ॥ इति श्री गजराज विगुंकित सुवृत हार संपूर्णम् ॥

(इसके ग्रागे इसी कवि की एक पच में कुछ ग्रीर कविता है)।

Subject.—काञ्य के नियम ॥

Note.—यन्यकर्ता कवि गजराज है। इस ग्रंथ का निर्माण काल संवत् १६०३ माय मुर्दा भ गुरुवार है। लिपिकाल नहीं दिया है॥

No. 72.—हामि। কিবিলাধ पूर्वाई Verse. Substance—country-made paper. Leaves—286. Size — $9\frac{1}{2} \times 6$ inches. Lines — 14 on a page. Extent — 3,500 slokas. Appearance—ordinary. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Haribhakļivilāsa Pūrvārdha.—Translation of the first half of the 10th canto of the Bhágavat Purāṇa by Rājā Vikrama Šāhi of Bundelakhanda, one of the descendants of Chhatṭra Sāla (B. 1649 and D. 1731 A.D.). Vikrama Šāhi was born in 1785 and died in 1828 A.D. (See No. 73.)

Beginning.—श्रीगणेशायनमः ॥ त्रय श्री हरि भिक्त विलास लिप्यते ॥ दोहा ॥ एक रदन गज बदन वर गिरिजा तनय सपूत । चहै। सुमित हरि भजन हित गहै। बाह मजबूत ॥ ९ ॥ कृष्ण कथा जमना बिमल गोवरधन मन मेदि ॥ प्रेम प्रेगट बंदा विपन राधा रवन विनाद ॥ २ ॥ सेरठा ॥ नारायन नर पास । सुक्र सनकादिक सारदा ॥ तिन पद पंकज त्रास । जन विक्रम हरि जस कहत ॥

End.—ऋंद हरिगीतका ॥ यह कृष्ण चरित श्रपार पारावार की कि कि सके । सुक सेप संभु स्वयंभु नारद कहत सारद मित यके ॥ कि कहा हृद्य बिचार मित अनुसार श्रुति संमत यही। जो सुने गावे मुदिति मन से। परम पद पावे सही। १५॥ से।रठा ॥ अपनी गित श्रनुसार। उड़त बिहंग श्रकास जिमि। पावत नाहीं पार। तिमि विक्रम हरि जस कहत ॥ इति श्रीमन महाराज ऋष्माल वंसावतंस नृपित विक्रमादित्य कृते हरिभिक्तिविलासे हत-नापूरी भवने। नाम येके।नपंचासतमे। श्रध्याय: ॥ ४६॥

Subject.—श्री कृष्ण की व्रजलीला। श्रीमद्भागवत दशमस्त्रंथ का छंदोबद्ध भाषानुवाट प्रवेद्धि ॥

Note.—ग्रन्थकरी क्षचसाल वंशज राजा विक्रमादित्य हैं। ये सन् १९८५ में जन्मे

No. 73.— হামেনিবিভাষ ভন্মাই Verse. Substance — country-made paper. Leaves—357. Size—9½×6 inches. Lines—14 on a page. Extent—4,370 ślokas. Appearance — ordinary. Complete. Correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárájá of Banáras.

Haribhakţivilása Uṭṭararaha.—Translation of the second half of the 10th canto of the Bhágavaṭ Purán made in Samvaṭ 1880 (1823 A.D.) by Rájá Vikrama Sáhíb of Bundelkhanda (See No. 72). The manuscript is dated Samvaṭ 1883 (1826 A.D.).

Beginning.—श्री गयोशायनमः ॥ श्रय हरिभक्त विलासको उत्तरार्थ लिम्यते ॥ दोहा ॥ पंचासत श्रध्याय कहि जरासंध धमसानि। पूनि पठये प्रभु वंधु निजद्वारावित सुष्मानि ॥ ९ ॥ निजु लोला नर तन धरी जदुकुल कृषा निकेत । भूर भार भी भूम पे ताहि उतास्न हेत ॥ उनंचास श्रध्याय कर पूरव कथा वणन। श्रव हरि की उत्तर चरित सुनिये न्याति सुजान ॥

End.—दोहा ॥ नहिं कितता सनवंध कहु नहिं बल बुद्धि तिचार। जन विक्रम प्रभु चिरित कहि निज मत की अनुसार ॥ २९ ॥ इति श्रीमनमहाराज छच्छालवंसावतंसे नृपति विक्रमादित्य कृत हिर्मित्तिविलासे नव्वे अध्याय: ॥ ६० ॥ दोहा ॥ संवत् अधादस असी माध मास गुण वार। किय हिर भित्ति विलास यह सकल श्रुतिन की सार ॥ ९ ॥ आपाठे मासे शुभे शुक्त पछे चये। दस्यां रिव वासरे ॥ अस्मिन संवत् १८८३ मुकाम महराज नगरे ॥ संपूर्न सुभमस्तु मंगलं ददाति ॥ श्री ॥ श्री ॥

Subject .-- श्री कृष्ण कथा। श्रीमद्वागवत दशम स्कंध उत्तरार्द्ध का भाषा छंदे। मे ऋनुवाद ॥

Note.—यन्यकर्ता छ उसालवंशज राजा विक्रमादित्य हैं । निर्माण काल संवत् १८८० माघ मास गुम् वार सार लिपिकाल संवत १८८३ स्त्राणढ शुक्र १३ रविवार है ॥

No. 74.—স্মান্ত্রাহা Verse. Substance—country-made paper. Leaves—51. Size—10½ × 6¾ inches. Lines—15 on a page. Extent—850 ślokas. Appearance—ordinary. Complete. Generally correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Amaruprakáśa.—The translation of the Amarakosa by the poet Khumána, made in Samvat 1893 (1836 A.D.). He lived under the patronage of Vikrama Śahi of Charakhári (1785-1828 A.D.). There is no doubt that he is the same poet who according to Dr. Grierson composed Lachhamana Śaṭaka and Hanumána Nakhasikha.

Beginning:—श्री गर्णेशायनमः ॥श्री राधाकृष्णाय नमः ॥श्री मते रामानुजाय नमः ॥ श्री हयर्थावाय नमः ॥श्री सारदाये नमः ॥श्रय लिप्यते श्रमर प्रकास ॥ दोहा ॥श्री वामीपुर एद पदम रच वंदी सानंद ॥ मंदाकिनि मकरन्द चह परिमल परमानंद ॥ ९ ॥ हिनहिनाट ह्य वदन के वंदी जिन मुमिरंत ॥ वियनन घर के घाट के हाट हाट भटकंत ॥ २ ॥ बंदी वाजी वदन की ताजी गरज सतार ॥ सुभ राजी साजी फिरै भाजी विधन कतार ॥ ३ ॥

End.—कमल के कंसरा उड़ फेटा मुरारि के दो दो नाम ॥ वारिज केसर किंजलक तासु दंड नल नाल ॥ सिफाकंद करहाट ग्रम तिहिजर विस सुमृनाल ॥ ६३ ॥ वीज कोस पुनि वराटक छतिया भाषत जाहि ॥ ग्रम् नव दल संवर्तिका जे नवीन दल ताहि ॥ ३४ ॥ इति भी मुक्कवि पुमान कृत भाषां ग्रमर प्रकास ॥ नोर वर्ग यह नाम किर पूरन दसम विलास ॥ ६५ ॥

Subject.—श्रमरकाश का श्रनुवाद ॥

Note.—ग्रन्थकर्ता खुमान कवि हैं। ये द्वचाल वंशन ुंदेलखंडीय विक्रमादित्य के ब्रायित थे। निर्माण काल संवत १८६३ (रस गुन वसु सिस) वैशाख शुक्र नृसिंह चतुर्देशी बुद्ध वार है।

No. 75.—शक्ताला नाटक Verse. Substance — country-made paper. Leaves—48. Size — 10½ × 6¾ inches. Lines — 15 on a page. Extent — 1,500 slokas. Appearance—old. Complete. Generally correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Sakuntalá Nátaka.—Translation of the Sakuntalopákhyána by the poet Nivája (1680 A.D.). He made this translation under the orders of Azama Sáha, son of the Emperor Aurangazeb. The manuscript is dated Samvat 1891 (1834 A.D.).

Beginning.—श्री गयीशायनमः ॥ राष्त न सूरज सभी की परवाहि निसि वासर प्रफुः . ल्लित रहत एक बानी के । ध्यानहू किये ते देत ज्ञान मकरंद वास नाक में लहेया जिनकी कहानी के ॥ कैसे त्रार पानी के सरोज सिर करें सीचे मान मेजे सिव सीस सुरसिर पानी के । सिद्धि की सुगंधि पाइ मेरे मन मधुकर पार पकरन पद पंकज भवानी के ॥ १ ॥

End.—देशा ॥ यो मुनि वैठि विमान में मुनि के करि परनाम ॥ सकुंतला मुत सहित नृष त्रायो त्रपने धाम ॥ चै। ॥ इहि बिधि भाग भाल में जाग्या । राजा राजु करन फिरि लाग्या ॥ नृष के मुष सब रैयत राजी । घर घर पल में ने। बत बाजोः ॥ सकुंतला त्रब भई पटरानी । इतनी यह हूँ जुको कहानी ॥ इति श्रो सकुंतला नाटक कथायां चनुर्थीयोक समाप्रं मुभमस्तु ॥ संवत् १९६१ मिती वैशाष कृष्ण पत्र सप्रमी ॥ ॥ श्रीरामायनमः ॥ श्रीराम ॥

Subject.—शक्तलापाख्यान ॥

Note.—यन्थकर्ता निवाज कवि हैं। ये श्राजिमशाह के श्राधित थे श्रीर उन्हीं की श्राचा से इन्हों ने शकुन्तला भाषा में बनाई। लिपिकाल संवत् १८६१ वैशाष कृष्ण ० है ॥

No. 76.—नाधिका भेद वर्षा इंद Verse. Substance—country-made paper. Leaves—20. Size—10 × 6½ inches. Lines—7 on a page. Extent—200 slokas. Appearance — old. Complete. Generally correct. *Character — Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Nayika Bheda Barva Chhanda.—A detailed description of the heroes and heroines. The name of the author or any other information regarding him or his work could not be ascertained

Beginning.—म्रो गयोशायनमः ॥ ऋष नारका भेद वरवा चंद दोहा लिप्यते ॥ दोहा ॥ कवित कहा दोहा कहा तुलै न ऋष्ये छंद ॥ विरची ग्रहो विचारिके ग्रह बरवा ग्सकंद ॥ ९ ॥ बेधक म्रानिमारो बड़ो समुभी चतुर मुजान ॥ मुनत जात चित चाव पे यह बरवे के बान ॥ २ ॥

End.—परिहास बरवा ॥ विहसत भीह चठार धनुष मने। ज ॥ लावत उर उपटनवा मेिंठ उरोज ॥ १६५ ॥ दोहा ॥ लचन दोहा जानिरे उदाहरन बरवान ॥ दूने। के संग्रह भर रस मृंगार निर्मान ॥ १६६ ॥ र्याह नवीन संग्रह सुने। जो देपै चितदेह ॥ विविध नाइका नास्कान जानि भली विधि लेह ॥ १६० ॥ इति म्री नास्का विभेद संपूर्ण ॥ शुभ मस्तु ॥ सिद्ध रस्तु ॥ ॥ म्रीराम ॥

Subject.—नाधिका भेद दोहा तथा बरवा छंद मे ॥

Note.—इसके श्रंतिम दोहे से यह संग्रह जान पड़ता है परन्तु संग्रहकर्ता का नाम कहीं नहीं मिला न कोई कालही इसमें है।

No. 77.—মান ধান নিছমন কলা Verse. Substance — country-made paper. Lèaves—59. Size—10 x 4¾ inches. Lines—7 on a page. Extent—735 slokas. Appearance—ordinary. Complete. Incorrect. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Aguna Saguna Nirúpana Kaṭhá.—A book dealing with the doctrines of Sivánanda, who wrote it in Samvaṭ 1846 (1789 A.D.). The manuscript is dated Samvaṭ 1890 (1833 A.D.).

Beginning.—श्रीगयोशायनमः ॥ दोहा ॥ रघुवर जी गुरघाल होय हियो नाम उपदेस ॥ शिवानंद पुमिरन करे। मेटा परब कलेप ॥ १ ॥ ऋस्तुति श्री हनुमानजी के ॥ दोहा ॥ यक दिवस पितु कहेड श्रम शोव जा मुनह विचारि ॥ हनूमान श्रम गंग की स्तुति करहु मुधारि ॥ २ ॥ श्रांषर श्रवर न जानंड रामचरण से नेह ॥ शोव कहत कर जोरि के पितु श्रजा भव यह ॥ ३ ॥

End.— सहस छवित निठइंग्रां हो होत मुहांस ॥ शिवानंद गित जानल सुषदेव घ्यास ॥ ६ ॥ घटसे सहस ग्रठारह हो ग्रव तिनि मानु ॥ शिवानंद ग्रह ग्रजपा निसु दिन जान ॥ ९० ॥
शिवानंद जेहि गुर मिल हो तिन्ह गित जानु ॥ कपा कल्प तरु निश्चे मनु ग्रनुमानु ॥ ९९ ॥
॥ दोहा ॥ ग्रवद १ ग्रक वसु ६ वेद ४ रस ६ माधव बदि सामवार ॥ हिर तिथि गंगा के
निकट शिवानंद भा पार ॥ ९ ॥ दोहा ॥ मृगु ग्राण्यम के पूर्व दिश पंचकास परमान ॥ हरदो
याम हरि नाम जिप शिवानंद सुरधाम ॥ २ ॥ इति ग्री शिवानंद विरचितायां ब्रह्मज्ञाना॰
दिकं ग्रगुन सगुन निरूपणं नाम कथा समाप्रा ॥ गुभं भूयात् ॥ संवत् ॥ ९६ ॥ ६० ॥ लिखिन्तं काश्याम् ॥

Subject.—वेदान्त ब्रह्मचान ॥

Note.—ग्रंथकर्ता शिवानन्द हैं। इस ग्रन्थ का निर्माण काल संवत् १८४६ क्रीर लिपि काल संवत् १८६० है।

No. 78.—মান্তব্যকাষ Verse. Substance — Káśmír-made paper. Leaves—127. Size—10 × 4¾ inches. Lines—11 on a page. Extent — 3,032 ślokas. Appearance — old. Complete. Correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Mokṣapanṭha Prakása.—A book dealing with the doctrines of Vedánṭism by Gulába Singha of Amriṭsar. He wrote this book in Samvaṭ 1835 (1778 A.D.) and the manuscript is dated Samvaṭ 1837 (1780 A.D.). Dr. Grierson says that he was born in 1789, which is decidedly wrong. The date of his birth must be fixed at the earliest between 1750 and 1760 A.D.

Beginning.— डों मितगुरु प्रसादि ॥ डों श्रोगरोशायनमः । डों श्री रामाय नमः ॥ सबैया ॥ या जगमे जिनके पद पंकज सेवत नीत सुरेश्वर भारी ॥ श्रीर सुरांगन सेवत है श्रम जांहि भजे भवमे मुण्चारो ॥ तात भजे जगमात भजे पुनि जांहि मनाय जिते चिपुरारो । सा गणनायक होइ प्रसन्न गहे पद बंदन भेट हमारी ॥ ९ ॥

End.— सवैगा ॥ शत अष्टादस शुभ संवत में पुनि विंशत पांच भगे अधिकाई ॥ सुभ भा माध मुदी मुभ सीम समे शुभवासर सेम महा मुखदाई ॥ तिथि पंचम नाम बसंत कहें सभ लोकन की मुजने हरखाई ॥ दिन तांहि सु पूरन ग्रंथ भगे। हरिके पद पंकज भेट चढाई ॥ ६२ ॥ मबेगा ॥ गणनायक सारस्वती रघुवीर मुनानक श्री गुरु आदि उदारे ॥ गुरु गोविंदिसिंघ उदार बड़े पुनि की गुरु में भवसागर तारे ॥ तिन कीन उपायन पाइयरी कछु लाइक नाहिं पिखी जग सारे ॥ कर कीर भली विध दंड समें पद पंकल में बहु बंद हमारे ॥

इति श्रीमन्मानसिंह चरण शिवत गुलाबसिंधेन गारी रामात्मनेन विर्चित मेाचपंथ-प्रकाशे विदेहमुक्तिनिर्णयो नाम पंचमिनिवासः ॥ ४ ॥ शुभं भूयात ॥ * ॥ श्रीरामाय नमः ॥ * राम रामिति रामिति रमे रामे मनारमे ॥ सहस्र नाम तनुल्यं राम नाम वरानने ॥ संवत ॥ १८३० ॥ शुभमस्तु सर्वेनगतां ॥

Subject.—वेदांत ॥

Note.—यन्यकत्ती गुलाबसिंह श्रमृत्सर निवासी है। यह यंथ संवत् १०३५ माधशुक्र बसंत पंचमी सामवार के। श्रमृत्सर मे पूर्ण हुआ। इसका लिपिकाल संवत् १०३० है।

No. 79.—जानकोमंगल Verse. Substance—country-made paper. Leaves—32. Size—11 x 5 inches. Lines—5 on a page. Extent—260 ślokas. Appearance—new. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

. Jánaki Mangala. — Description of the marriage of Ráma and Sítá by Tulasi Dása. There are two manuscript copies of this book in this library. The text of the other copy is mostly incorrect.

Beginning.—श्रोगयोशायमः ॥ गुरु गनपति गिरजापति गैरि गिरापति ॥ सारद शेष सुकवि श्रुति संत सरल मित ॥ हाथ जारि करि विनय सबिहं सिर नावजं ॥ सिय रघुबीर विवाह जथामित गावजं ॥

End.—छंद विकर्षाहं कुमुद जिमि देषि विधु भई श्रवध मुष मुष सेाभा मई ॥ यहि विधि विवाहे राम गावहिं मुकवि कल कोरित नई ॥ उपवीत व्याह छ्छाह ने सियराम मंगल गाइ हैं ॥ तुलसी सकल कल्यान ते नर नारि श्रनुदिन पाइ हैं ॥ २४ ॥ इति श्रो गुसाई तुलसीदास विरचितं जानकी मंगल संपूर्णम् ॥ मुभमस्तु ॥ सिद्धि ॥ रस्तु ॥

Subject.—म्बी राम जानकी का विवाह ॥

Note.—यह यन्य प्रसिद्ध श्री गोस्वामी तुलसीदास कृत हैं।

No. 80.— द्वारामाय Verse. Substance—country-made paper. Leaves —23. Size—13×5 inches. Lines—7 on a page. Extent—460 slokas. Appearance—old. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Baravá Rámáyana.—The story of Rama Chandra's life in the Barvá metre by Goswámi Pulasi Dása. The manuscript is dated Samvat 1873 (1816 A.D.).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ ऋष बरवा रामायन लिप्ते ॥ बरवा गननायक वर-दायक देव मनाय ॥ विद्य विनास वरन प्रसक्त होड सहाय ॥ ९ ॥ श्री गुरु पद ऋंबुज रस हृदय संभारि ॥ । बरनन करीं राम जस कृषा मुधारि ॥ २ ॥ श्री रघुवर ऋंग सोभित ऋतुलित काम ॥ भक्त चकेार पुर्ण विधु करें। प्रनाम ॥ ३ ॥

End.—भजन प्रभाव भाति बहु बरनेउ वेद ॥ तुलसी गाएउ हरि जस मिटि भव षेद ४०३ ॥ करन पुनीत हेतु निज बचन विवेक ॥ तुलसी ऐसे हु सेवत रापत टेक ॥ ४०४ ॥ सीता राम लघन संग मुनि के साज ॥ तुलसी चित चिचकूटिह वस रघुराज ॥ ४०५ ॥ इति म्री उत्तर कांड बरवा रामायन संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् ॥ ९८०३ ॥ इति बरवा रामायन ॥ संपूरन ॥ कीसुने पछे माध्यावु ॥ सीवं प्रणद के पोछी ॥

Subject.—बरवा छंद में संचिप्त रामायण ॥

Note.—प्रसिद्ध श्री गेस्वामी तुलसीदास कृत-्लिपिकाल संवत् १८०३ है ॥

• No. 81.—वेराग्यसंदोगिनो Verse. Substance — country-made paper. Leaves—11. Size—9 × 4¼ inches. Lines—5 on a page. Extent—85 slokas. Appearance — new. Complete. Generally correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Vairágya Sandípiní.—Moral lessons on worldly renunciation by Goswámí Tulsí Dása.

Beginning.—श्रीगयेशायनमः ॥ दोहा ॥ राम वाम दिसि जानको लखन दहिनी त्रे। । ध्यान सकल कल्यान मय सुर तक तुलसी ते। । १ ॥ तुलसी मिटै न मोह तम कीये केटि गुन याम ॥ हृदय कमल फूले नहीं विनु रिवकुल रिवराम ॥ २ ॥ सुनत लपत श्रुति नैन बिनु रसना विनु रस लेत ॥ वास नासिका विनु लहै परसत विना निकेत ॥ ३ ॥

End.— फिरी दोहाई राम को गै कामादिक भाजि ॥ तुलसी न्यों रिव के उदै तुरत जात तम लाजि ॥ ६९ ॥ यह विराग संदीपनी मुजन मुचित सुनि लेहु ॥ अनुचित बचन विचारि जहं से। सुधारि तहं लेहु ॥६२ ॥ इति श्री वैराग्य संदीपिन्या मीहांध विध्यासिन्यां श्री गोस्वामी तुलसीदास कृतायां शांत वर्णनं नाम तृतीय: प्रकाश: ॥ ३ ॥

Subject.—उपदेशयुक्त ज्ञान ।

Note.—कर्ता प्रसिद्ध गास्वामी तुलसोदास जी हैं ॥

No. 82. শুরাবলী বাদায়া Verse. Substance — country-made paper. Leaves — 12. Size — 9 × 4 inches. Lines — 7 on a page. Extent—125 ślokas. Appearance—new. Complete. Incorrect. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Chhandávalí Rámáyana.—The story of Ráma Chandra's life in several metres by Goswámí Tulsí Dása.

Beginning.—श्री मते रामानुजायनमः ॥ श्री रामायन की इतिहास लिखते ॥ दोहा ॥ दशकंघर घटकनं श्रघ भार घरा दुख होइ ॥ गई गगन गा देह धरि कहि पुर- पित में रोइ ॥ १ ॥ छंद चै।पइश्रा ॥ पुरपित गुर बूका मुनु मित्रमूका गे विधिलाक तुरंता ॥ विधि पुर समुकाये संग सिधाये जहं से।वत श्रीकंता । दशमुष की करनी बहु विधि बरनी धरनी जेहि विधि रोई ॥ मुनि सारंग पानी भई नम बानी विधि जाना निह कोई ॥ विधि बचन मुनाये पुर समुकाये तजहु से।च मन देवा ॥ जे जन हितकारी प्रभु श्रमुरारी करिह पार से।इ खेवा ॥ वानर गो पूछा तनु धरि रोहा बसहु जाइ महि माही ॥ श्रवधेस निकेता ध्रम मेता प्रभु श्रावत तुम पाही ॥ दोहा ॥ इहि विधि विवुध विरोधिंगे गे पुर निज निष्ठ धाम ॥ कछू काल बीते श्रवध प्रगट भये श्रीराम ॥ ४ ॥

End.— छंद ॥ नित प्रात सरित अन्हात बंधुन सहित प्रभु भोजन करें ॥ गंज बाजि राज समाज लिंब सब देखि बन उपबन फिरें ॥ बेठे सभा महं जाइ ग्री रघुबीर दुख सब के हरें ॥ करि ग्याव स्वान उल्ला को लिंब लेग सब विसे करें ॥ मांडवी ग्रुति कीरित ठिमेला से। सबिन मृत दें दें बने ॥ जानकी मृत जुगल जाये सबिन मन ग्रावंद चने ॥ सनकादि नारद ग्रादि मृनिवर सकल ग्रवधिह ग्रावहों ॥ लिंब जाह रघुबर के चरित सब बिधिहि जाह. मुनाबहों ॥ इक बार कहु महिदेव की मुत सभा मह ग्रायों मन्त्रों ॥ गुरु बूकि तपते मारि मुद्रहि तबिह सो उठि जिय परयों ॥ इहि मांति रामर्चार परम पविच नित नूतन करें ॥ कि दास तुलसी मुनत सब के बचन मन पातक टरें ॥ १६ ॥ दोहा ॥ मुनि सीता के जुगल सुत्र रामकीन्ह ग्रनुमान ॥ लोक सिषावन देन हित बोले ग्री भगवान ॥ हित ग्री उतर कांड समाप्र: ॥ ० ॥ ग्री गुसहै तुलसोदास कृत छंदावित रामायनसः ॥

Subject.—विविध छंदों में संविप्न रामायण सप्नकांड ॥

Note.—कत्ती प्रसिद्ध गोस्वामी तुलसीदास जी है ॥

No. 83.—शतप्रधानरो Verse. Substance—country-made paper. Leaves—14. Size—10½×5¼ inches. Lines—13 on a page. Extent—500 ślokas. Appearance—ordinary. Complete. · Incorrect. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Satuprasnottari.—A book on the knowledge of the creator according to Vedántism by Manohara Dása Niranjani.

Beginning.—श्री गयोशायनमः ॥ श्रय से प्रश्नोत्तरी लिघ्यते ॥ सेरठा ॥ वाच्य लव करि जान निर्मुण सर्मुण जे। कह्यो ॥ करि नमसकारि बखानि बाच्य त्याग करि लव के। ॥ १॥ चे। ॥ श्रञ्जान शक्ति श्रात्मा की कहिये ॥ श्रात्म श्रज्ञान श्रनादि मिले लढीये ॥ श्रज्ञान श्रमिल रह्यो शुद्ध बषाना ॥ तांका ब्रह्म करिके सा जाना ॥ १ ॥ श्रज्ञान मिल्या सा साची कहीये ॥ देाइ भाग श्रज्ञान से। लहीये ॥ जीवेश्वर कहीये पुनि तामहि ॥ साची नाम कह्यों है जा महि॥ ३॥

End.—लवा श्रर्थ कहा यह सेहं ॥ जामहि द्वेत भान नहिं होई ॥ द्वेत भान बाधा कहा तामहि ॥ फल फलनाम दोइ नहिं तामहि ॥ १९ ॥ फल विदाभास परमाता ॥ श्रहं ब्रह्म फल कह्यो विखाता ॥ स्वह्रपमंह दोइ फल नाही । विकल्प रहित रहे से माही ॥ १२ ॥ से सारा ॥ है। में है। तू नाहि है। तूं हो में हे कही ॥ एव हैं है। तूं माहि है। तूं है। तूं एक है ॥ १३ ॥ इति श्री शतप्रक्नोत्तरी भाषा मने। हरदास निरंजनी कथ्यते नवमे। पंड: ॥ ह ॥ समाप्र ॥ श्रुभमस्तु ॥

Subject.—वेदान्त ब्रह्मज्ञान ॥

Note.—यंश्रकती मनेहर दास निरंजनी है ॥

No. 84.—বান মবন ব্যাকা Verse. Substance — country-made paper. Leaves—14. Size—10 x 5 inches. Lines—13 on a page. Extent—550 ślokas. Appearance—old. Complete. Incorrect. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Gyana Vachana Chúrnika.—The doctrines of Vedántism by Manohara Dása Niranjani. The manuscript is dated Samvat 1831 (1774 A.D.).

Beginning.—श्रीगयोशायनमः ॥ श्रथ श्वान वसन चूर्यिका लिप्यते ॥ दोष्टा ॥ रिव गुरु द्वे सम तुल्य च्यो तम श्रज्ञान करैं दूर ॥ जग उर में प्रकाश करि बंदन की निज पूर ॥ ९ ॥ जीवेश्वर चैतन्य महि कहिए है द्वे नाम ॥ सर्वश्वता श्रल्पज्ञ पुन संसारी सुषधाम ॥ २ ॥ कर्म सहित पुनि रहित है सहित कर्म कह्यों जोव ॥ संसारी ताते भया रहित भया से १ स्वीव ॥ ३ ॥

End.—तम नीर चूरण भषे उदर रोग सब जाय । त्यों साधन सहित विचार ते संसार रोग नसाय १ संसय रोग संसार सब नासे करें विचार कहें मनेहर निरंजनी यह निहचें निरंघार ॥ ३ ॥ इति श्री ज्ञान चूरण बचनिका समाम्म शुभभवति ॥

(इसके आगे कुछ पंस्कृत क्लोक पंस्कृत टीका प्रहित ६ पंक्तियो और पंचत् १८३१ अष्ठ वदी ५ भृगुवापरे लिखा है)

Subject.—भाषा वेदान्त ॥

Note.—कर्ना मनाहरदाप निरंजनी है—लिपिकाल पंवत् १८३१ श्राषाक बदी ४ भृगुवार है ॥

No. 85.— गाउदार Prose. Substance—country-made paper. Leaves—17. Size—6\(^4\) \times 4\(^4\) inches. Lines—17 on a page. Extent—300 ślokas. Appearance—ordinary. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Gorakhasara.—The principles of Yoga philosophy by Gorakha Nátha. For particulars about Gorakha Nátha see Report for 1903. The manuscript is dated Samvat 1859 (1802 A.D.).

Beginning.—श्रीरामचंद्रायनमः श्रीगयेशायनमः श्री गुरुपरमात्मनेनमः श्रीलद्मीपत्रये नमः ॥ श्रीवालमुकुंदाय नमः श्रीवासुदेवायनमः श्री राधावल्लभायनमः ॥ श्री सीतापत्रयनमः श्रय गोरण्सार लिष्यते ॥ मंगलाचरन ॥ श्री गुरु परमानंद तिनिको दंडवत है ॥ है केसे परमानंद श्रानंद स्वरूप हे ॥ सरीर जिन्हिको जिन्हिको निक गयै ते सरीर चेत्रनि श्रव श्रानंदमय होतु है ॥ में जु हो गोरिष से मळंदरनाथ को दंडवत करत हो है केसे वे मळंदरनाथ ॥ श्रातमा जीति निश्चल है ॥ श्रंतहकरन जिनिको ॥ श्रव मुलद्वार ते छह चक्र जिनि नीको तरह जाने ॥ श्रव जुगकाल कल्प इनि को रचना तत्व जिनि गायो ॥ ग्यान मुगंध के समुद्र तिनिको मेरी दंडवत ॥ २ ॥

End.—से। वह पुरुष संपूर्न तीर्थ श्रस्नान करि चुकी ॥ श्रर सपूर्न प्रथ्वो ब्राह्मनिन की। दे चुकी ॥ श्रर सहस्र जग्य किर चुकी ॥ श्रर देवता सर्व पुजि चुकी ॥ श्रर पितर्रान की। संतुष्ठ किर चुकी ॥ स्वर्ग लोक प्राप्त किर चुकी ॥ जा मनुष्य के मन द्वन माच ब्रह्म के विचार वैठी ॥ श्रर थिर हो ॥ ६० ॥ इति श्रो गेरिष मत जोग सास्त्र सपूर्ण समाप्रम् ॥ श्रगः हन मुद्दि ९ संवत् ॥ ९८५६ ॥

॥ इत्या क्रिया क्रिया

Note.—यन्यकत्तां गारखनाय है। इस प्रति का लिपिकाल संवत् १८३६ है।

No. 86.—কবিন ইনী কুন Verse. Substance — country-made paper. Leaves—63. Size — 10×61 inches. Lines — 15 on a page. Extent—935 slokas. Appearance — new. Complete. Correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Kavitta Bent Krita.—A collection of 267 kavittas of the poet Bení (1760), written in the erotic style.

Beginning.—श्रोगयेशायनमः ॥ भींनी फुलेल घुली श्रलके मुकुली श्रीखश्रा बतियां तुतरोहें ॥ बेनी चलो डिंठ के श्रंगिराइ डठाइ भुजा जमुहाइ पिकेहिं ॥ पीक की लीकें कपोलन मंडित घंडित से श्रधरा मुरभेहिं ॥ भार की भारी सी बानि मड़ी चितये चित में चढ़ीं वे चढ़ीं भोहें ॥ ९ ॥

End.—पावत कान मुनेही परो से सहप भरोसा पर श्रांखिया स्वै॥ बेनी चवाउ रहे। पसरो से मुभाउ बरोसे। न त्रार इसे क्वे ॥ कान्ह परो से रहे इतही चित जातु हरो से विसूरि कलावे॥ श्रंगनहू की भरोसा न है क्षणरो से। रहे दई मारे न में हू ॥ २६०॥

Subject.—शुंगार रस की कविता ॥

Note.—यन्यकती बेनी कवि है। इस प्रति में २६० कविनी का संग्रह जान पड़ता

No. 87.—तामाचा समनातो Verse. Substance — country-made paper. Leaves—30. Size—10½ × 4½ inches. Lines—8 on a page. Extent—334 slokas. Appearance—new. Complete. Incorrect. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Ramagya Saganauti.—Consideration of auspicious moments for doing anything, by Goswami Ţulasi Dasa.

Beginning.—श्रीमते रामानुनायनमः ॥ प्रथम सर्ग निष्यते ॥ पहिली दाहाई ॥ बानी विनायक श्रंब हर रिव गुरु रमा रमेस ॥ सुमिरि करहु सब कान शुभ मंगल देश विदेश ॥ १ ॥ गुरु सारदा सिंधुर बदन सिंस सुरसिर सुरगाई ॥ सुमिरि करहु मंगल मृदित मन होईहि सुकृत सहाई ॥ २ ॥ गिरा गैरि गुरु गनपति हिर मंगल मंगल मूल ॥ सुमिरत करतल सिद्धि सब होड देश श्रनुकूल ॥ ३ ॥

End.—ने के निह का जिह अनुसरे से दोहा जब होई ॥ सगुन समे। य सब सत्य फल कहब राम मित से इं॥ ६॥ जन विस्वास विचित्र मिन सगुन मने हर हार ॥ तुलसी रघुबर भित्त उर विलयित विमल विचार ॥ ६॥ इति श्री तुलसीदास कृत सगने ती रामाग्या संपूर्ण ॥ एक से बाठ कमलगठा अरन तीन मूठी धरे सात का भाग दे गने पहिलो मूठी को सर्ग ॥ दूसरी मूठी को दहाई ॥ तीसरी मूठी को दोहा ॥ श्रीसे दे गने याको विधि ॥ ॥

Subject. -शकुन चिवार ॥

Note. - गंधकर्ता भी गास्वामी मुलसीदास है ॥

Vinayasára.—Praises of God by the poet Sundara Dása (1800). (See No. 57.)

Beginning.—श्रीगणेशायनमः ॥ त्रष्ट विनयसार लिष्यते ॥ चौषाई ॥ श्री हरि गुरु को पृतिसन करूं ॥ संतन चरनन पर सिर धर्छ ॥ हरि श्री गुर के बिल बिल जाऊं ॥ पल पल किन किन जपे जपाऊं ॥ हमहूंम से करों परनाम। भनें। श्रहिनिसि कृष्ण श्री राम ॥ श्री प्रभु के नित गुण गावा। गाय गाय गुण श्रीत मुख पावा। जिनके सेस सहस मुख गावां॥ गाय गाय कहुं श्रत न शावां॥ जिनको चतुर्मुख ब्रह्मा ध्यावां॥ शिव शनकादिक पार न पावां॥ नारद सारद ध्यान मे मगन ॥ व्यास श्री शुक भीने दोने मन ॥ रिषि मन्वादि श्रहनिसि जावां॥ गोणी तिनको रस में नावां॥ कोउ रसिक कहें यह बैन ॥ ताके लिषत होत श्रीत चैन ॥

End.—चीपाई ॥ मुंदर नाम की निस दिन गावै ॥ जग के पार अपार ही जावै ॥ अपनी देख कुमित मित हीनी ॥ केवल पितताई में भीनी ॥ वुद्ध मुद्ध सब होनी होनी ॥ ताते हिर से बिनती कीनी ॥ मेरी बिनती की मुनि लीजी ॥ पावन पितत विरद चित दोजी ॥ अपनी दास विचार विचार ॥ अधम उधारनता उर धार ॥ हिर कृपा ते कुंज में पंधारें ॥ सुंदर दांड मुंदर की निहारें ॥ तब कर्ना किर हिर वर दिया ॥ विनती मुनि अति उमग्ये। हिया ॥ जी कीड या विनती की गावै ॥ से मूधा मेरी पद पावे ॥ दोहा ॥ मुंदर हिरकी प्रीति से विनती करी पुकार ॥ हित चित से गावे मुने हो । । । । । अप पच सादा कूटा है और कुछ नहीं है । यहां से पुस्तक छोड़ दो है । कुछ थोड़ा सा शेष जान पड़ता है) ॥

Subject.—प्रार्थना श्रीर दीनता ॥ Note.—कर्ता मुंदरदाम हैं ॥

No. 89.— र्राक्किप्रा Verse. Substance—country-made paper. Leaves — 90. Size—9\frac{9}{3} \times 6 inches. Lines — 16 on a page. Extent—1,620 ślokas. Appearance — old. Complete. Incorrect. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rasika Priya.—A book on Hindi composition by Kesava Dása, who wrote this book at the request of Indrajíta Sinha, younger son of Madhukara Sáha of Orchhá in Samvat 1648 (1591 A. D.) This is one of the standard books on Hindí Sáhitya.

Beginning.—श्रीगयेशायनमः ॥ श्री गोपाली जयित ॥ श्रय रिस्त प्रिया ॥ यट पद ॥ यक रदन गज बदन सदन बुधि मदन कदन मुत ॥ गोरि नंद श्रानंदकंद जगदंब चन्दजुत ॥ मुख दायक दायक मुकृति गन नायक नायक ॥ बल धायक घायक दिद सब लायक लायक ॥ गुक् गुन अनंत भगवंत भव भक्तिवंतं भव भय हरन ॥ जे केशीदास निवासिनिधि लंबोदर श्रमरन सरन ॥ प्रथम सिंगार मुहास रस करुणा रीद मुवीर ॥ भय वीभत्स बणानिये अद्भुत शात मुधीर ॥ ९ ॥ • • • • (निर्माण काल) सबत सेरह से बर्ण बोते श्रव्हतालीस । कार्तिक मुदि तिथि सप्रमी वार वर्शन रजनीस ॥ ६ ॥

End.—दोहा ॥ केशव करना हास्य महं त्रक विभाग सिंगार ॥ बरनत वीर भया। नकहि संतत वैरु विचार ॥ भे उपने वोभाग ते त्रक सिंगार ते हास ॥ केशव ब्रह्मत वीर ते करना की प्रकास ॥ पहि विधि केशवदास रस जनरस कहे विचारि ॥ बरनत भूलि परी जहां कविकुल लेहु मुर्थारि ॥ नेसे रसिक प्रिया बिना देखि ब्रह्मि दिन दीन ॥ त्योहीं

भाषा कवि सबै रिसक प्रिया बिनु हीन ॥ बाढ़ै रित मित श्रित बढ़ै जाने सब रस रिति ॥ स्वारण परमारण लहे रिसक प्रिया की प्रीति ॥ २२८ ॥ इति श्री मन्महाराज कुमार सी इंद्र- जोत विरिचतायां रिसकप्रियायां अनरस वर्ननं नाम बेडिस प्रभाष: संपूर्ण ॥ सुभमस्तु श्री शम्बत् ॥

Subject.—रम काव्य ॥

Note.—कर्ता प्रसिद्ध किन केशवदास है। इन्होंने खेड़के के राजा मधुकरसाहि गहरवार बंसो के किनष्ठ पुत्र इन्द्रजीतसिंह की बाद्या से इस मंघ की रचा। निर्माण काल संवत १६४८ कार्तिक शुक्र सप्रमी चंद्रवार है।

No. 90.— नविषय Verse. Substance — country-made paper. Leaves— 14. Size—64×5 inches. Lines—21 on a page. Extent—297 slokas. Appearance—very old. Complete. Incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Nakhazikha.—Detailed description of the body of a heroine by the poet Kanha, who, according to Dr. Grierson, was born in 1857 A.D.

Beginning.—श्रीगयेशायनमः॥ किव कान्ह कृत नष शिष लिष्यते॥ कः॥ मूषक सवारी वुष्ट दूषक स्यारी पृष्ट पूषक पहारी केाटि कियन की रंदा है॥ लंबोदर नाम पूजे कान्ह मन काम केाटि सूर के। से याम भाल बंदन की बंदा है॥ षड़े बरदानी सेवें सारद भवानी देवें मुक्ति मनमानी केवें पापन की फंदा है॥ सेहें गन मुंड पर चंदन भुसुंड पर सुंड पर कंज धेर मुंड पर चंदा है ॥॥

ितते.—चीपई: नष पद अंगुरी रही लाल। पारलेव पिंडुरी उर साल ॥ जंघा किंट किंकिनी अनकार। नामि चिबली रोमाविल आर ॥ जच्य उरल अस्ता भरे। जपर स्थाम कंचुकी करे ॥ नप अंगुरी कर चार हथेरी। कंकन चुरी भुजा सुभ हेरी ॥ मार पीठ योवा मतलरी। चिबुक अधर दसनार्थिल भली ॥ रसना बानी हसन सुमेध। नथ मुक्ता नासा सुभ वेध॥ गात कपोल लसे सुभ बस्ती। कीए पलक पूर्तरी बरनी॥ डेगरे लाल लसे अति काजर। पेनी डीठ नेन कृष्टि हालर ॥ भृकुटी टेठी बेंदा गोल। भाल बंदनी जटित अभील॥ करनफूल किलकाविल कान। सीसफूल मांग मुकतान॥ पाटी बेनीवार विराजे। अंग सुवास बसन हृष्टि क्राजे॥ ७९ इति श्री कान्ह कृत नय सिष समाप्त संपूरनं बनारस मध्ये लिघ्यते रूपचंद ब्राह्मन॥ (इसके आगे की पंक्त दोमक खा गई है और प्रत्येक पच की श्रन्तिम पंक्त का भी यह हाल है)

Subject. - नख शिख पर्यन्त प्रत्यंग की शाभा वंगेन ॥

Note.—किं कान्ह कृत । डाकृर यिग्ररसन के लेखानुसार ये किंव संवत् १६०४ में जन्मे थे ॥

No. 91.—प्रो हनुमत बाल चरिच Verse. Substance—country-made paper. Leaves—33. Size—11×7 inches. Lines—15 on a page. Extent—420 ślokas. Appearance—old. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Śri Hanumaja Válacharijra.—The story of Hanumana's younger days by the poet Brija Lála, who composed the book in Samvat 1876 (1819 A.D.).

Beginning. —म्बी गणेशायनमः मीहनुमते नमः ॥ ऋथ हनुमत बाल चरित्र लिष्यते ॥ दोहाः॥ ऋमल कमल विय कर लग्नत ॥ दिव्याभरन विश्लाल ॥ जय जय मी मुवरन बरन ॥

बंदत कि मुजलाल ॥ १ ॥ जयित जानकी नाथ प्रभु बंदहु पवन कुमार ॥ जिनकी किंचित क्रिपाकर ॥ बाढ़त यन्य भ्रपार ॥ २ ॥ रामानुज पद बंद कर ॥ गुरु चरनन चितुलाइ ॥ हनुः मत जन्म कथा रचहु ॥ हिये ध्याइ सुष्पाइ ॥ ॥ संवत षट रितु बसु ससी ॥ माह क्रटे शनिवार ॥ बाल कथा वृजलाल रिच भादि सुकाव्य विचारि ॥ १६ ॥

End. - अब किं तिन कहं नम्र यों ॥ निहं हर हिर के दास ॥ भक्तमई बानो लषत करत सकल उपहास ॥ ५८॥ चेच कृष्ण कुज चीष भन संवत श्रंक प्रमान ॥ बाल चरित पूरन भया ॥ से। प्रताप हनुमान ॥ ५६॥ दोलित नृपित श्रली जहां राज श्री महराज ॥ सिषिन स्वहस्त सुमान सुत सुकविराज वृजराज ॥ ६०॥ इति श्री मन रामचन्द्र प्रश्नोत्तर श्रगस्त मुनि-संवादे श्रीमद्रामायण उत्तर कांड कथान्तर्गत श्री हनुमत बाल चरित्र गृंधेन श्रीमन मान कवींद्र तन्द्रय वृजलाल भट्ट किंवराज विरजते सूर्य तट सास्त्राध्यने ऋषोत्पाता द्रवदािष सुगीष नित्रकृति षुष पंचमाध्याय:॥ ५॥ संपूर्ण सुभे भूग्रात् ॥ श्री हनमते नमः॥ रामायनमः॥

Subject.—म्बो हनुमान जी के बालपन के चरित्र रामायग उत्तर कांड से अनुवादित ॥
Note.—कत्ती वृजलाल कवि है ॥ निर्माग काल इसका संवत् १८०६ माघ ६ शनिवार है ॥

No. 92.—पाहित्यपुधाकर Verse. Substance — country-made paper. Leaves—135. Size—10½×4ई inches. Lines—7 on a page. Extent—1,880 slokas. Appearance—new. Complete. Incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Súhitya Sudhákara.—Hindi prosody and composition by the poet Saradára of Lalitpur, who composed this book in Samvat 1902 (1845 A.D.) under the patronage of Mahárája Isvarí Prasáda Náráyana Singha of Banáras.

Beginning.—श्रीगयोशायनमः श्रीगुरवे नमः श्री गुरु पद रज बंद के कर कर मुरन प्रनाम। करत एक हें यन्य मुचि कुवि कुल मन विम्राम १ पठन चहें पाहित की श्रयवा पिं जब लेह। तब सरसी साहित की देषन की मन देह २ किवत समुद के चंद चन्द्रमा के जैसे वुधवर विधन हरन गनपति जैसे हर के। पवन के हनुमंत वल की न जाके श्रंत दान की करन देषियत भासकर के। कवि सरदार चेता रामचन्द्रजू के लब किल में न दूजी उपमा की श्रीर नर के। भया वैरोचन के बल सी सपूत जैसी इस्वरीप्रसाद उद्घतिस दान धर के॥ २॥

End.— संवद इक घट बीस सत ताके उपर दोइ। पुरन कीय सरदार किव राम जनम तिणे जाइ॥ ॥ नगर लिलत पुरवास है कासीपित के पास। कीना हरिजन नद जह हरिजन हेत विलास॥ ॥ इति श्रो साहित सुधाकर॥

Subject.—पिंगल ॥

Note.—ग्रन्थकर्ता सरदार कवि ललितपुर निवासी हैं। ये काशिराज महाराज हैश्वरी प्रसाद नारायणसिंह के श्राम्प्रित थे श्रीर उन्हींकी श्राचा से इन्हें ने यह ग्रन्थ बनाया ॥ निर्माण काल संवत् १६०२ चैत सुदी है है ॥

No. 93.—1414 12 Verse. Substance—country-made paper. Leaves—15. Size—7½ × 4½ inches. Lines—15 on a page. Extent—180 slokas. Appearance—old. Complete. Incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rasabhúsana Grantha.—A description of the different kinds of heroes and heroines by Rámanátha Upádhyáya.

Beginning.—मी राम जो सरन ॥ मी गयेशायनम:॥ प्रथम मनाउ गनपति कर्षं जो सुष चाहु ॥ बढे सकल सुष संपति मिटि है दाहु ॥ १ ॥ चरन तोरि चित सैरि सिव ठकुरानि ॥ कठिन सरल सब हूँ गा पर मुंहि जानि ॥ २ ॥ करहु नोक सिवरानी सब बिधि सेशि ॥ रचेहुं ग्रंथ तोरे बलसन प्रेम प्योधि ॥ ३ ॥

End.—श्रथ लित हाव की उदाहरन यथा। लागहु तक्ति फुलेलवा पिय रसमांति। पहिरचा द्यांह गहनवां भिल भिल भांति १४४ श्रथ कुटटिमितहाव की उदाहरन यथा। मिलेह मीत श्रव सुष्भा गा दुष भागि। जारित चेतु जान्हेया परसत श्रागि १४५ श्रथ विहित हाव की उदाहरन यथा। मिलिगा मीत दुश्ररवें लोगवन साथ। हेरि सकुचि निहं बोली तिय लिच माथ १४६ इति इति श्री बरवे बाजपेई रामनाथ कृत संपूर्ण शुभमस्तु रस्भूषन ग्रन्थ समा। श्री राम राम राम। बरवे रामनाथ कृत ॥

Subject.—नायिका भेद ॥

Note.—यन्यक्ती बाजपेयी रामनाथ है। इसमें कोई समय नहीं दिया है।

No. 94.— TAR ESITI Verse. Substance—country-made paper. Leaves —91. Size—9\(\frac{3}{4}\times 6\(\frac{3}{4}\) inches. Lines—13 on a page. Extent—1,007 ślokas. Appearance—ordinary. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rațana Hajárá.—A collection of one thousand couplets by Rasa Nidhi. Nothing more is known about this poet. The manuscript is dated Samvat 1894 (1837 A.D.).

Beginning.—श्रीगर्गशायनमः ॥ श्री सरमुती देव्येनमः ॥ दोहा ॥ लंधत सरस सिंध्युर बदन भालथली नषतेस ॥ विधन हरन मंगल करन गवरी तनय गनेस ॥ ९ ॥ नमा प्रेम परमारथी यह जाचत ही तोह ॥ नंदलाल के चरन सैं। दे मिलाइ किन मीहि ॥ २ ॥ नमे प्रेम जिने किया दिय लग बाइ प्रकास ॥ रगरत वासी नाक गो नाक गोपकृन पास ॥ ३ ॥ निंस दिन गुंजत रहतमे विरद गरीबनिवाज ॥ है निज मधकुर सुतन की कमल नैन तुहि लाज ॥ ४ ॥ वरन मधुर सुंदर ऋरथ हरि सीहित निरधार ॥ रसनिध सागर मथ लये दे हा रतन हजार ॥ ५ ॥

End.—श्रधम उधारन प्रभु कहूं करते। जो न सम्हार ॥ हो तो मोसी पतित क्यां या भवसागर पार ॥ ६०४ ॥ हेरत कहूं जु दीन तन वाहि श्रावती लाज ॥ प्रीतम तें व कहावती दीनबंद ब्रजराज ॥ ६०५ ॥ जदिप श्रकरनी हू करी में हर भांति मुरारि ॥ प्रभु करिनी करि श्रावही हरि विधि लेहु मुधारि ॥ ६०६ ॥ कहै श्रलप मित कीन विधि तेरे गुन विस्तार ॥ दोनबंध प्रभु दोन की ले हरि विधि निस्तार ॥ ६०८ ॥ इतिश्री महाराजाधिराज श्रीरसिनिधि क्रत रतन हजारा संपूर्न ॥ श्रीरस्तु मंगलं ददात् ॥ कार्तिक श्रुक्त ॥ संवत् ॥ ९८६४ ॥ श्रीराम ॥ श्रीराम ॥

Subject.—प्रेमरम के दाहे॥

Note. -- ग्रन्थकर्ता महाराज रसनिधि हैं। लिपि काल कार्तिक शुक्र ३ संवत् १८६४

No. 95.—্বালায়ন মন্তানাত্তক Verse. Substance — country-made paper. Leaves—109. Size—8¾ × 6¾ inches. Lines—20 on a page. Extent—3,000 ślokas. Appearance—very old. Complete. Incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rámáyana Mahánátaka.—The story of Rámachandra's life by Prána Chanda Chauhána, who composed this book in Samvat 1667 (1610 A.D.) when Śáha Salíma was the Emperor of Delhi. This Salíma cannot be of the Sûra family, being the younger son of Śora Śaha Súra, for he was dead in the year 1554. Probably it refers to the Mogal Emperor Jahángíra, who was called Prince Salíma before his accession in the year 1605. It is just possible that for some years after the accession Jahángíra, might have been popularly known as Śáha Salíma. The manuscript is dated Samvat 1775 (1718 A.D.).

Beginning.—शदाशिव परंब्रह्मय ॥ नम गुरु चित्र गुप्रन ॥ नस्तु तेज अतीव ली राम लक्ष्मन ॥ महाबली राजा ॥ जती सुपीवी ॥ राधवे नाम ॥ पालती ॥ प्रथम करें। ताही को सेवा। जेहो गुरु कह सब मानी देवा। गुरु गनेश कोइ जाने । इंद्र श्रादी सुर नाग बषाने। शोव सुत केली शीधु मन्हो। शुंड उठाचे शवे नल लीन्हो। घालो पेट मह काढी श्रठारा। कहउ मंक्र कहउ पवेउय हमारा। कहउ शेश कहउ शैनक करवा। ब्रह्मा कहउ ध्याम के घरना। शोव सुत पीके काठी अठाना। तेहो दिन शे। जल जो पारा ॥ अगमग सिर जानीक। रहे शोइ नरनाह शे। जल कीड़ा गनेश की। परी भीपति कन माह ॥ ॥

तीय पुने। साम कर वारा ॥ ताही दीन कथा की ह कातीक माम पद्घी उजीयारा संमत सेारह स सत साठा शाह सलेम दीलीपती धाना पुन्य प्रगास पाप चा सारद माता कर दाया बरना त्राद पुरुष की माया ब्रह्मा रहे कमले के फुला नीकस न सके माया के बाधा मनो जग भूला कवल नाल के रांघा माद पुरुष बरना कोही भांति चांद मुरन तहां दीवस न राती नीरगुन रूप रूप बहो शीव भ्याना चार बेद गुन नेशिर बपाना तीना गुन नानै शीरजै पाले अंजन हारा श्रवन बिना से त्रस बहु गुना मन म होइ सु पहले देपै सत पै श्राहो न श्राषी ग्रंथकार चार के सापी तीही कर दह की कर बणना माया शींधु भा कांड नपारा जोही कर ममें भेद नहीं जाना शंकर पवर बीच होइ हारा ॥

> शोरजे पलका एक मह भंजतु लागुन बार ॥ धरनी सर्ग पाताल तें मही माग्रा अगम अपार ॥

End.-

राम चरि च जो कहे बणाना स्रम् जो मुने स्रवन चीत लाई चे। भा स्रानक ऐह शंशारा नारद बालमीक दुवीमा चारी जुग जाने संसारा जेही नीति शङ्क धरही ध्याना मुनीस्रो तथा शीध मन्यामी उन मब मोली ऐह ब्रत राषा जा महीमा सारदु कह भारी स्रादी कथा ऐह ब्रेहे पुराना

वाढ़े धर्म पाप होंगे हाना शा जमपुर के नोकट न जाई राम नाम बोन होंगे न पारा तीन्हहु राम नाम की श्रामा श्रंत काल कह राम श्रधारा चारो बेद पढ़ि ब्रह्म भुलाना जल घल श्री श्रकाश के बासी राम नाम बोन श्रीर न भाषा तेही वरने कह सक्ती हमारी शो मे भाषा कीन्ह बंधाना

बालमीक हनीवंत मोली प्रथम कीण्ड श्रस्तुती भार भाषेउ प्रानचन्द गेह जेही तेनके उधार

इति श्री महानाटक संपूर्ण सुभमस्तु शोधीरस्तु जो की छु देषा से। लीषा मम देषो न दीयते । ४॥४॥४॥ ४॥ संवत् १००५ मास मागसीर वीदी गुर वासरे ली० मीष्यचंद्रे स्वरेण ठा० फकोरचदजी पाठनाथ ॥ सुभ—सुभं ॥ दीसत् गोवीद रामनाथजी नी पोथी छै॥

Subject. —रामचन्द्र की कथा ।

Note.—प्रानचंद चेहिन ने शाह सलीम दिल्लीपित के समय में इस यन्थ की बनाया। निर्माण काल संवत् १६६० ग्रीर लिपि जाल संवत् १६०५ है ॥

No. 96.—হিনাম্বল Verse. Substance—country-made paper. Leaves—194. Size—11×7 inches. Lines—15 on a page. Extent—2,900 ślokas. Appearance—ordinary. Complete. Correct. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Hitopadesa—Translation of the Sanskrit Hitopadesa by Prayaga Dasa, who lived at the court of Khumana Sinha of Charkhari (1830 A.D.). (See No. 74.) The manuscript is dated Sanvat 1889 (1832 A.D.).

Beginning.—श्री राधाकृष्णायनमः ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा॥ सीय सहित रघुनाथ कों नमह बारहो बार ॥ जिहि तें हित उपदेस यह होहि सरल सुषदाय ॥ १ गोर्पान जुत सुमन नित गो पालत बन के बीचि ॥ अधर मुरिलका धुनि उठत माथे मुकट मरीचि ॥ २ ॥ सत चित त्रानंद रूप धन श्ररिसय कुमुम सरीर ॥ वेद गीत नंद नंद प्रभु करहु कृपा रनधीर ॥ ३ ॥ सामे पूरन होइ वह करहु कृपा श्रीराम ॥ श्रुति हितकारी जहं कथा हित उपदेस सुनाम ॥ ४ ॥ सेरठा ॥ देत सबै मन काम ॥ है प्यारे श्री राम के ॥ याते शिवहि प्रनाम ॥ शिव बिन शिव न कहूं मिने ॥ ५ ॥ दोहा ॥ हर प्रसाद ते संत सब सिद्धे लहत सुपैन ॥ जाके सिर सिंस लसत जनु गंगा जू को फेन ॥ ६ ॥

End.—हप्य ॥ जलिंग धर धरिन जलिंग धुंव धाम धराधर ॥ जलिंग घेद विलि-यास जलिंग लोमस प्रकास वर ॥ जलिंग देव दिगपाल जलिंग गोपाल गनेसह ॥ जलिंग धनेस बनेस जलिंग श्रमरेस प्रदेसह ॥ कि प्रांग कहें कीतुक किलित जलिंग सरस सिंउ गाविह ॥ भूपित श्रमान पंचम प्रवल तलिंग राज्य भुव भुगाविह ॥ १६ ॥ इति श्री हिंतीपदेसे श्री मन्म-हाराजाधिराज महाराजा श्री राजापुमानसिंध जू देवाज्या श्री किव प्रयागदास विरंचिते सुंसुधि संग्रहो नाम चतुर्थ: ॥ सर्ग: ॥ श्रुभमस्तु ॥ संवत् ॥ १८८६ ॥ मीति कुशार विद ॥ ६ वार मंगर ॥

Subject.—संस्कृत हितापदेश की भाषा ॥

Note.—ग्रन्थकर्ता कवि प्रयागदास है—ये चर्खारी के राजा खुमानसिंह के प्राधित थे जीर उन्हों की प्राचा से इन्होंने यह यन्थ बनाया ॥ लिपिकाल संवत् १८८६ प्राधिवन कृष्ण ६ भीम वार है ॥

No. 97.—राम मृतावली Verse. Substance—country-made paper. Leaves—29. Size—7½ x 4½ inches. Lines—16 on a page. Extent—about 350 álokas. Appearance—ordinary. Complete. Generally correct. Character—Kaithí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rama Muktávali.—Spiritual lessons in regard to the worship and virtues of Ramanama by the poet Tulasi Dása. The manuscript is dated Samvat 1859 (1802 A.D.).

Beginning.—श्रीगगोशायनमः ॥ श्रीरामचंद्रायनमः ॥ पोश्रीराम मुक्तावली ॥ देशि ॥
राम नाम भनि दीप धरु जीह देहरी द्वार ॥ तुलसी भीतर बाहर जो चाही श्रीजित्रार ॥ ९ ॥
राम नाम के भीहड़े बेाइय बीज श्रशाद ॥ सरगहु जय मुखा पर तबहु न निह्नफल जाद ॥ २ ॥
राम नाम श्रुति सार है बूक्ति देखि सब कोइ ॥ राम नाम सम मंच निहं बुधि जन लेहिं
विलोह ॥ ३ ॥

End.—हनेमान से बोनतो करि श्रीस्त्र मांह ने ईस । दोन्ही दृढ़ करि वचना वाच बोस श्रह बीस ॥ नव गेसे बस पाद के तब कीन्ही परगास ॥ पिढ़ सुनि है ते निकसि है ने हि हि को हि हिर को दास ॥ इति श्रो हिर चिरच मानसे किलकनुष विधंसने नाम राम मुकुतावली तुलसीदास को कृत राम को श्रनुचर संपूरन शुभमस्तु संवत् १८५६ नेठ सुदी १५ मंगर लिखा कासी मद्धे श्रंतरगृही महं रामचरन मिश्र ने लिखा श्रपने वास्ते ॥ पंडित नन से। बिनती मेरी। टूटल श्रच्छर वांचव नेरो। दोहा ॥ मेह लहरि माने नहीं मन समुद्र श्रवगाह ॥ तुलसी धीरन के धरे सब पावहुंगे धाह ॥ हम हम हम हमार हम हम हमार के बीच ॥ तुलसी श्रलखिंह को लिंध राम नाम कह नोच ॥

Subject.—राम नामापदेश तथा नाम माहातम्य ॥

Note.—यन्यकर्ता गास्वामी तुलमीदास है। लिपिकाल संवत् १८५६ चेठ मुदी १५ मंगलवार है।

No. 98.— (14) Verse. Substance—country-made paper. Leaves—26. Size—6 × 4\frac{3}{4} inches. Lines—17 on a page. Extent—about 450 slokas. Appearance—ordinary. Complete. Incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Ráma Śalákú.—A small book dealing with the means of finding out the would-be consequences of actions by the poet Tulasí Dása. Such books are very numerous in Hindi and appear to me to be a later development of Hindu astrology. The manuscript is dated Samvat 1822 (1765 A.D.).

Beginning.—श्रीगयोशायनमः ॥ पेथि रामश्लाका की ॥ प्रथम १ वर्ग प्रथम दहाइ। अय देखा । गुर सहाइ ॥ वानो बीन एक पंजु रिवः गुर हर रमा रमेस । सुमिरि करह सब काज सुभः मंगल देश विदेश ॥ १ ॥ गुर सुर शैल सीदुर बदन ससी सुरसिर सुर गाइ। सुमिरि चलहु मंगल मुरतोः होइही सुकृत सहाइ॥ २ ॥ गोरा गारि गुर गनप हरः मंगल मंगल मुल । सुमीरत करत शीधी सबः होइ ही सब अनकुल ॥ ३॥

End.—सतवा सर्ग के सतइ दहाइ। दोहा ॥ युदीन सादी पेथी नेवती: पुकी प्रभात सप्रेम। समु बिचारब चारमती: सादर सत्य युनेम ॥ १ ॥ गुनि गनी दिन गनी धातु गनी: दोहा देशी बीचारि। देसक करता बचन वर: असगुन समे अनुहारि॥ १ ॥ सगुन सत ससी नेनगुन अवधी अवध ने।वान। होइ सुफल जसु आसु असु: प्रीती प्रतीती प्रमान ॥ ३ ॥ गुर गनेश हर गीरी सीअ: राम लग्न हनमान: तुलसी दसरथ सुमीरी सब सगुन बीचार नी-धान ॥ ४ ॥ हनामान सानुज भरष: राम सीआ उर आनी। लग्न सुमीरी तुलसी कहत सगुन बीचार वशनी ॥ ४ ॥ जो जेही काजही अनसरे: सो देशा जब होइ। सगुन समे सब सत्य फल; कहूव राम गती से।इ ॥ ६ ॥ गुनी वीसास वीचीच मनी: सगुन समाहर हार। तुलसी

रघुबर भग्तो डर: बोलवत वोमल बीचार ॥ ० ॥ इति यो वातो वर्ग संपुर्न शुभमस्तुः चा देवा सा लिया मम देवि न दोच्यते संवत् १८२२ मितो यावन वदी ॥ २ ॥ वार. गुरङ लोः भोमसेन कायस्य माकाम पचवनीचा परोगनकेया ॥

Subject.—श्रुनावली ।

Note.—कर्ना गोस्वामी तुलसीदाय जी है। इस प्रति का लिपिकाल संवत् १८२२ मावग बदी २ गुरुवार है॥

Bhásá Rámáyana.—A short story of Ráma Chandra's life by the poet Kapúra Chanda (alias Chanda only), who wrote it in Samvat 1700 (1643 A.D.)•when Sáhajahána was the Mughal Emperor in Hindustána.

Beginning.—श्री गयोशायनमः ॥ श्रष्ट रामायया भाषा चंद कृता लिप्यते ॥ दोहरा ॥
गुरु गयोश श्ररु गै।रिका सुमिरे होय श्रानंद ॥ कछुक हकोकत राम की श्ररक करत हे चंद ॥
१ ॥ श्राद श्रनादि जुगाद हे जाहि जये सब के।इ ॥ राम चरित श्रदभूत कथा सुन्य पुन्य
फल होई ॥ २ ॥ श्रादि पुरुष परमातमा निगंकार हे सोई ॥ भगत हेत सरगुन भयो राम कहत
सब कोई ॥ ३ ॥

End.—सबह से संवर्ग भूप विक्रम की गिनिये एक। हजार पंजा हजार सन हजार गिनिये ॥ फ २ वदी वैशाख चातुरन जाने चाता। साहिजहां पातिसाह दिल्ली श्रदल विचाता॥ एक सी ग्यारह किवत इहवेर की ये पठत मुनत हरषे हिया जस वरनन रघुनाथ की कपूरचंद लिथ्यो किया॥ १५५॥ चारि किवत पहिले व्याह समे राम जी के सुचे तिस् समेति एक सी ग्यारह पूरन हुवे॥ १५६॥ इति श्रो रामायन चंद कृत भाषा संपूर्ण ॥ श्रो:॥ शुभमस्तु॥ श्री सीतारामाभ्यां नमः॥ श्री:॥

Subject.—संचेप मे श्री रामचन्द्र की कथा ॥

Note.—यन्य के श्रम्तिम भाग से जान पड़ता है कि यन्यक्ती का पूरी नाम कपूर-चंद था तथा यह दिल्ली के बासी श्रीर शाहजहां के समय में हुए हैं। निर्माण काल संवत् १००० वैशाख वदी है॥

No. 100.—हमोरहें Verse. Substance—country-made paper. Leaves—30. Size—13×7 inches. Lines—12 on a page. Extent—725 slokas. Appearance—new. Complete. Correct. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Hamíra Hatha.—History of Hammíra Sinha Chauhána by Chandra Sesara of Patiálá. He composed this book in Samvat 1902 (1841 A.D.) under the patronage of Mahárája Narendra Sinha of Patiálá.

Beginning.—म्री गर्योशायनमः ॥ ऋष चन्द्रसेषर कृत हमीरहठ लिष्यते ॥ दोहरा ॥
गिरिवरधर ऋष गंगधर चरन सरन चितु लाइ ॥ या हमीर हठ की कथा कही सबिह विक्
नाइ ॥ ९ ॥ प्रसराम धुव भुव ऋचल ऋहिषन पर जिमि प्रच ॥ म्री नरेन्द्र मृगराज नृप तब

लिंग तब जम श्राम ॥ ११ ॥ श्री नरेन्द्र मृगपित नृपित दिन प्रति दया निधान ॥ दीन जान कीनी कृपा मेापर परम मुजान ॥ ३ ॥ निकट बोलि दीने। दुकुम यह हमीर हठ जीन ॥ छंद बंद करिके रचे। कथा मुहाविन ते। न ॥ ४ ॥ महाराज के दुकुम ते जहि विधि चिम चरित्र ॥ मे। मेथर भाषा करी दूषन करहु ने मिन ॥ ५ ॥

End.—महाराज के हुकुम ते सिद्ध होत सब काज ॥ भया यंथ जिनको कृपा परि-पुरन सूभ त्राज ॥ ३६८ ॥ कर नभ रस श्वर श्वातमा संवत् फागुन मास ॥ कृष्ण पद्ध तिथि चीष र्राव जेहि दिन यंथ प्रकास ॥ ३६६ ॥ राधावर के जगत में श्री नरेन्द्र मृगराज ॥ सेषर निज प्रभु लोक में तीजा लष्त न त्राज ॥ ४०० ॥ मेरिह भरोसे। रावरी महाराज सिरमेर ॥ करिय कृपा द्विल दीन पै निरिष श्रापनी श्रीर ॥ ४०९ ॥ जीलीं सिंस सूरल रहे सुरपुर सक स्माज ॥ ते। तो ने। राज करे। श्रवल श्री नरेन्द्र मृगराज ॥ ४०२ ॥ त्राघ गद्दि छंद ॥ स्वस्ति श्री मत्स्कल लेक लेचन चकार चिंतामणि मनेज मद भंजन पंजनायत विसाल नेचवर वितुंद संडोपमेय दैार दंड पल पंडन पर मंडली विहंडन विप्रक्ष तम तुंड दंडना पंडित, भारेंड प्रताप तापने हरन सरनागत सुबेस देसदेसाधिनाथ गन सेवित सुरेस सामाज्य सुब पूरन पुनीत वेद-प्रथ प्रतीत राजनीत अवलाकित विनीत वर बुद्धि वोर बंदीजन विमोचनादि ॥ विविधि विरदावली विराजमान मानबंसावतंस सामबंस के विभूषन विसद विद्या चतुर्दसचतुः षष्ट कलानिधान सकल नरेन्द्र वृंदाभु वंदनीय चरनारविंद चातुर्ध्य सिरोमणि सकल सूर सावंत मुष दाग्रक नरनायक दिलीसदल दमन प्रतक कल्पवृक्ष स्वरूप नरभूप कर्मसिंह कुलकेतु मीनकेत मन मेहिन सुधर मधुर धरन उदार सतगृह पदार्रावंदानुराग परिपूरित प्रकर्ष गुन ग्राहक गरीब नेवाज महाराजे श्री राजगान महाराजाधिराजेस्वर श्री श्री श्री श्री श्री श्रो महाराजी नरेन्द्रसिंघ त्राचाभिगामिनः चंदशेषर कवि विरचितां हमीरहठ कथानकः समाप्र: ॥ शुभमस्तु सर्वे जगतां ॥ ४ ॥

Subject.—चहुत्रान हमीर का दिल्ली के पादशाह से युद्ध ॥

Note.—कर्ना कवि चन्द्रशेषर हैं जो महाराज नरेन्द्रसिंह पटियाला वाले के श्राम्त्रित थे। इन्हें।ने इस हैतिहास की महाराज को श्राचा से छंदीवद्ध बनाया। निर्माण काल संवत् १६०२ फागुन बदी ४ रविवार है।

No. 101.— হামেনিবিলাম Verse. Substance — country-made paper. Leaves—60. Size — 12½×7 inches. Lines—12 on a page. Extent—1,775 slokas. Appearance—new. Complete. Correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Haribhakti Vilása.—A religious book dealing specially with devotion to God by Chandra Seshara of Patialá (1840 A.D.). (See No. 100.)

Beginning.—भी गयोशायनमः ॥ भी गुरु चरण कमलेभ्या नम ॥ देहा ॥ बुद्धि सदन वारन वदन वंदत विलत विसाल ॥ विघन हरन मंगल करन विमल वाल विधु भाल ॥ ९ ॥ ऋरून अमल कामल करत मंजु मुकुति मकरंद ॥ भी गुरु चरन सरोज वर बंदी आनंदकंद ॥ २ ॥ छप्पे ॥ इंदु कुंद करपूर गार विश्वेस ज्ञान घन ॥ आदि शिक्त अतुलित विद्वित प्रकाम तन ॥ मुंडमाल विष्ण्याल भाल विधु बाल विराजत ॥ नगन जटितः आभरन श्रंग नय सिष छवि छाजत ॥ दिग वास दिण्य श्रंवर अमल बरद विश्व मंगलं करन ॥ दुष हरन सरन सेषर नरन संतत सिव गिरिला चरन ॥ ३ ॥

End.—पु: वृजवासी कवर इंद्र भजत ने ताकी मनमे । करि जमुना जल पान । भ्रमत महि बृंदाबन मे । हिर जन पग की धूलि प्रेम से। ने तन लाये । तिनकी भंगर

कपुर वृथा चंदन लपटाये ॥ यह श्रांत पुनीत संकर कही सुनहु कथा गिरला सुमित ॥ ले कहत सुनत ते नर लहत श्रांत उत्तम बेकुंठ गित ॥ ६४ ॥ दोहा ॥ श्रायो बल श्राराग्यता मन भावत फ ' ' दोनि ॥ देत सुरग श्रावरग श्रव करत सु पातक हानि ॥ ६६ ॥ परम भित्त से। पटत जो हिर ततपर नर काय ॥ बहुरि न तिनको जनम लग विष्य काक ते हाय ॥ ६६ ॥ हित श्रीमन्महाराजे राजगान महाराजाधिराज श्री महाराज नरेंद्रसिंह महेंद्र बहादुर श्राग्यानुगामो कवि चंद सेषर कृते भित्त विलासे वारह मासे। सव वरनना नाम । श्रीदसीध्यायः ॥ ९३ ॥ समाप्राः ॥ श्रुभम् ॥

Subject.—भिक्त के लच्चा चीर कर्नव्य ॥

Note.—कर्ना कवि चंद्रशेषर हैं—ये पटियालाराजािश्वत थे ॥

No. 102.— विवेकविलास Verse. Substance—country-made paper. Leaves —61. Size — 13 × 7½ inches. Lines — 12 on a page. Extent—1;692 ślokas. Appearance—new. Complete. Generally correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Viveka Vilása.—An account of the Raja Álá Sinha and his descendants of Patiálá by the poet Chandra Sesara (1840 A.D.). (See No. 100.)

Beginning.—म्री गणेशायनमः ॥ म्रष्य ववेक विलास लिप्यते ॥ दोहा ॥ गनपति गिरला गंग धर गुर गेविंद गुन धाम ॥ विधन हुग्न सेषर सदा चरन सरन मिराम ॥ ९ ॥ दोहा ॥ भ्रमल मिना इंद्रकुल लादव वंस पुनोत ॥ लामे भी हरि म्रवतरे कृष्ण हरन भवभीत ॥ ९ ॥ को कब बरनन कर सके तान वंस बिस्तार ॥ कहित कछुक संद्येप से सेषर मित म्रनुसार ॥ २ ॥ प्रगट भया ता वंस मे भू को भूषन वेस ॥ म्रालम पर वर मिलिया मालासिंघ नरेस ॥ ३ ॥ म्रालम सिंघ नरेस को जिन भेटे पल माध ॥ मिलवे हेत सुरेस से रही न तिनके साथ ॥ ४ ॥ डिद्यत दान क्रियान मे मालासिंघ समय ॥ जीत जीत सब सम दलु करी धरा निज् हथ ॥ ४ ॥

End.—दोहरा॥ पद्मसैन भूपाल को जिन दुख दीना भूल॥ इंद्रसैन तिनकी हरी सेाधि सिंछ मूल॥ ४६॥ छन धर्म निज नोत से निस दिन चलत पुनीत॥ लिया आप निज बाप को इंद्रसैन पद जीत॥ ४०॥ याहीते हैं। कहत है। जो नृप चलत सुनीत॥ लीक सुजस पर लेक सुख से। नृप लहत पुनीत॥ ४८॥ इति श्रीमित महाराजे राजगान श्री महाराजाधिराजेश्वर महाराजे नर्द्रसिंह महेंद्र बहादुर सिय आग्यानुगामी किंव चंद्रसिंग कृते विवेक विलासे राज कृषा कथना नाम एकादशिध्याय:॥ १९॥ समाग्रं॥ दोहरा श्र सातर जो भुले तुमही लेहु सवार॥ हमकी दोस न दोजिन्ने हम छिन छिन भूलन- हार॥ १॥

Subject.—राजा ग्रालां पिंह की बंशावली ॥
Note.—कनी कवि चन्द्रशेषर ॥

No. 103.— रिविक विनाद ग्रन्थ Verse. Substance—country-made paper. Leaves—45. Size—12 × 7 inches. Lines—12 on a page. Extent—1,100 ślokas. Appearance—new. Complete. Correct. Character—Devánagari. Place of deposit—Library of the Maháraja of Banáras.

Rasika Vinoda Granfha.—A book on Hindi composition dealing with the seven styles (Rasas) by the poet Chandra Sesara of Patiala. He wrote

this book in Samvat 1903 (1846 A.D.) under the orders of Rájá Narendra Sinha of Patiálá. (See No. 100.) The poet says that he has based this book on the Sanskrit work on the subject by Bharata.

Beginning.—डों सित्गुरु प्रसादि ॥ श्रय चन्द्रसेषर कित रश्कि विनोद ग्रंथ लिषते ॥
देशहरा ॥ विद्य विद विनस्त सकल उलहित श्रमित धनंद ॥ जह दुलिह्दन ब्रिथमानजा
दिन दूलह नंदनंद ॥ ९ ॥ सजल जलद तन ताड़ित दुत पिय पीतम दित चेरि ॥ रमित
परस्पर नम सदन से जे जुगल किसोर ॥ २ ॥ जे कीरत कीरत करन के जसुमित जस पुंज ॥
जे जमुना विदा विपनि जे ब्रज केल निकुंज ॥ ३ ॥ जे ब्रथमान महीप मण जे नृप नंद प्रवीन ॥
जग जीवन जीवन सफल जिन श्रपने तप कीन ॥ ४ ॥ नव नकुंज नव राधका नव नागर नंद
नंद ॥ नित सेषर बंदत चरन उपजत नव श्रानंद ॥ ५ ॥

End.—दोहरा ॥ महाराज के हेत यह रिमक विनोद मुगन्य ॥ नवरम में सेवर कियो निरंघ भरत की पंच ॥ ४०६ ॥ संवत राम सकाम यह पुनि आत्मा विचार ॥ माध मुकुल सिन सम्मो भयो यन्य अवतार ॥ ४०० ॥ स्वामित श्रीमत सकल मिह मंडला पंडल वल मंडलो विहंडन विपळ तम पंडन प्रचंड मारतंड प्रताप्रापन हतन सरनागत मुध्य देस देसाधि नायगन सेवित मुरेस सामराजि मुख पूरन चंद्रवंसावतंस श्रीपति महाराजाधिराज कर्मसिंच कुल मंडन गरीब नेवाज महाराजे राजगान महाराजाधिराजेश्वर श्री श्री श्री श्री श्री श्री महाराजा नरेन्द्रसिंघ आग्याभिगामिन: ॥ चंद्रसेवर कित रिमक विनोद समाप्र ॥ श्रुभमस्तु ॥

Subject.—भरत मतानुसार नव रस वर्णन ॥

Note.—कर्ना चन्द्रशेषर कवि हें इस यथ्य का निर्माण काल संवत् १६०३ माघ शुक्र २ शनिवार है।

No. 104.— urinitalel Verse. Substance—country-made paper. Leaves—16. Size—9\(\frac{3}{4}\times 4\frac{1}{2}\) inches. Lines—12 on a page. Extent—550 slokas. Appearance—old. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit Library of the Mahárája of Banáras.

Alankáramálá—A book on Hindi rhetoric by Súraţa Miśra, written in Samvaţ 1766 (1709 A.D.). The manuscript is dated Samvaţ 1805 (1748 A.D.). This Súraţa Miśra is a noted author of several commentaries. There is another manuscript of thiş book in this Library, dated Samvaţ 1816 (1759 A.D.).

Beginning.—म्नी गर्गेशायनमः । दोहा ॥ तिंड घन वपु घन तिंड बसन भाल लाल प्रमार । वृज जीविन मूरित सुषद जय जय जुगल किशोर ॥ २ ॥ म्रलंकार कितानि के सवित समुभ बे हेत ॥ रच्यो यन्य मूरत सु यह लच्च लच निकेत ॥ २ ॥ उपमालंकार ॥ उपमां जहं इकसी प्रभा द्वि पदारथ की होइ ॥ प्रभु तुव कोरित गंग सी विहरित विपुर निसोइ ॥ ३ ॥

End.— त्रलंकार माला करी प्रत मन पुण्दाइ ॥ वरणत चूक परी लणे लोने पुक्षि वनाइ ॥ ३० ॥ सूरत मित्र कने जिया नगर शागरे वास ॥ रच्या यन्य तिह्न भूषिन बलित विवेक विलास ॥ ३८ ॥ संवत सच्ह से वरष च्यासठ सावन मास ॥ सुरगुरु दिन एकादशो की ने। यन्य प्रकास ॥ ३६ ॥ इति श्री सूरतिसंह मिश्र विरचितालंकार माला समाप्र शुभमस्तु श्री रस्तु ॥ संवत ऋष्टादश सतरु ऋधिक पांच परमान ॥ श्रगहन वदि रवि पंसमी भीषम लिप्यो पुनान ॥ ९ ॥ जियने पुरी पुनीति मिह्न भुरसरि उत्तर कुल ॥ द्विज भीषम बस हरि सरण सेवत सब मुख मूल ॥ ९ ॥

Subject. -- आलंबार 1

Note.—कर्ता कवि पूरतिसंह मिन्न है जिन्हों ने संवत् १०६६ सावन ११ गुस्कार की यह ग्रन्थ लिखा। इसका लिपि काल संवत् १८०५ ग्रगहन वदी ५ रविवार है।

No. 105.— पार्कित पिरामणो Verse. Substance — country-made paper. Leaves—120. Size—12×71 inches. Lines—12 on a page. Extent—2,880 slokas. Appearance—new. Complete. Correct. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Sáhita Siromaní.—A book on Hindi composition by the poet Nihála of Patiálá. He wrote this book in Samvat 1893 (1836 A.D.).

Beginning.— डों ग्री गगेशायनम: ग्रथ साहित सिरोमणी कवि निहाल कृत लिख्यते॥ .
देश्चा ॥ श्रमल रदन गल बदन मिंद्र बोजुली जु घनस्याम ॥ बिघन विमुख सब होत हैं ग्री गणेश ले नाम ॥ १ ॥ कवित ॥ बदन रदन इक कदन विघन घन सदन सुखन सदा संपति सहाई है ॥ मंडत सिंधूर भाल खंडत कलुख काल डंडत दुखन जाल सुक्तित सदाई है ॥ वरन विमल देहु बानी सु ग्रमल देहु चार भुन लंबोदर गिरलत नाई है ॥ सुकवि निहाल कहे कर जार विनी यहे यन्थ यहे किया किर दीजिये बनाई है ॥ २ ॥

End.—दो०॥ ममट मत जे काब के कठू पदारण छीन॥ ग्रन्थ बांध पूरन करों। कांव निहाल मतिहीन॥ ३३६॥ दो०॥ पुष निह्म सुभ योग में नृपति चन्द्रमा नाम॥ षष्ट्रम काब को जानिय सुभ तिथ वासर सेम॥ ३३०॥ राम नाथ वस नभ गने। संमत अंक मिलाइ॥ ग्रावन सपतम सुकल पष ग्रन्थ पूर सुखदाइ॥ ३३८॥ काव्य भेदरस नाइका भाव दे। बलंकार॥ साहित सिरोमण ग्रन्थ में तत्व पंच निरधार॥ ३३६॥ कव्य सरोर सु वाध्यो। ग्रन्थ पुरातन हेर॥ पढ़े काव्य लक्षन लपे भारचे भीर न फेर॥ ३४०॥ इति श्री मन महाराजाधिराज महाराज राजेस्वर करमसिंघ महिंदर बहादर हित कवि निहाल विरचितं साहित सिरोमण ग्रन्थ भलंकार बरननी नाम पंचता प्रकास:॥ ५॥०॥ संपूरणं०॥ समाप्रं॥०॥ शुभम् भूगात्॥

Subject.—साहित्य।

Note.—कर्ता कवि निहाल है। ये महाराज पिटयाला कर्मसिंह के श्राधित थे— निर्माण काल संवत् १८६३ श्रावण शुक्त सप्रमी २ है।

No. 106.—पुनीतपंश्रकास Verse. Substance — country-made paper. Leaves—59. Size—12 x 7 inches. Lines—12 on a page. Extent—1,440 ślokas. Appearance — new. Complete. Generally Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Suntta pantha prakáša.—Moral lessons by Nihála Dvija. He wrote this book for Rájá Karma Sinha of Patiálá in Samvat 1896 (1839 A.D.)

Beginning—डों श्रीगयोशायनमः । त्रष्य पुनीत पंच प्रकास लिख्यते ॥ दोहरा ॥ श्री
गुरु नानक ग्रादि लख गेविंद सिंच गुर लान ॥ दस गुरु दस दिस किया कर बरने। नीत
पुरान ॥ १ ॥ दोहा ॥ देवी पुना सारदा भुवनिस्वरी मनाइ ॥ नमसकार सब कविन को करे।
सुना कि राइ ॥ २ ॥ दोहरा ॥ लग सागर भ्यानक महा पार न पावत को इ ॥ नीत नां बुपर
सर नुपत पार होत सभ को इ ॥ ३ ॥ दोहरा । तां हो ते यह नीत वर रची सकल गह सार ॥
याके मग पग बा धरे से। नृप उत्तरे पार ॥ ४ ॥ कवितु ॥ जल बिनु सर लेंसे फल विनु तर

मुल बिनु घर जैसे गुन बिनु हूप है। सस्छं विनु बीर जैसे भाल विनु तीर जैसे खांड विनु खीर जैसे दिन विनु घूप है। दया जिन दांन गुन विन एयां क्रमांन जैसे तान बिन गान जैसे नीर हीन क्रूप है। बुध विन नर जैसे पंछी विन पर जैसे सेवा विन डर जैसे नीत विन भूप है। १॥

End.—दोहा । गुह नानक गोविंद हरि मुफल कीनिये यन्य । मुनीत पंथ पर-काम को पड़े बालमा पंथ । ६८५ ॥ पंथ बालमा गुरूने कीने सिंघ भूपाल ॥ करे। यन्य हित तिनोके दार्पन दाम निहाल । ६८६ इति श्रोमनमहाराजाधिराज राजराजराजेश्वर करम-सिंघ महिंद्र बहादुर हित विरिचतं राजनीत मुनोत. पंथ परकाम गरंथे उत्तरारथ मुकवि नि-हाल दिज बंसे मुनीत पंथ प्रकास संपूर्ण ॥ दोहा ॥ दरसन निध सिध हित प्रगट मधसर सित रिव दुज ॥ मुनोत पंथ परकास ग्रह रव निहाल दिज पूज ॥ १ ॥ शुभम ॥

Subject.—राजनीति ॥

Note.—कत्ता सुकवि निहाल द्विज हैं जा परियाला राज्यात्रित थे। इन्होंने महा-राज कर्मसिंह के लिये यह यन्थ संवत् १८६६ में बनाया॥

No. 107.—धुनोत रवाकर Verse. Substance — country-made paper. Leaves—57. Size—6 × 4½ inches. Lines—6 on a page. Extent—370 slokas. Appearance — new. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Sunița Rațnákara.—Moral lessons by the poet Nihála of Patiálá, who wrote this book for Rájá Narendra Sinha of Patiálá in Samvat 1902 (1845 A. D.). The manuscript copy was also made in the same year.

Beginning.—श्री सिंत गुरु प्रसादि ॥ श्रय सुनीति रतनाकर यन्य सुकवि निहाल कृत लिखते ॥ दोहा ॥ गनपति गैरी नंद को नमस्कार कर जीर ॥ विधन हरो सभ सुख करो यन्य पूरीय मार ॥ १ ॥ दोहा ॥ कविन सभन को बंदना सुकवि निहाल बषान ॥ नीत सु रतनाकर रन्ते। किमा करी निज मान ॥ २ ॥ दोहा ॥ देवी श्रो भुनेश्वरी मन की मनसापूर ॥ यन्य यहै पूर्ण करो सकल विधन कर चूर ॥ ३ ॥ दोहा ॥ उन्नीसे दो साल में पौष द्वादसी श्रादि ॥ गुरु दिवस गुरु कृषा कर कीनी यन्य मृजाद ॥ ५ ॥ देवि ॥ नरेंद्रसिंह महाराज हित रस्यो नोत को पंग्र ॥ नीत सु रतनाकर यहै श्रद्धत यन्यन मंग्र ॥ ६ ॥

End.—दाहा ॥ नीत रतनकर हु मध्या रतनजूष गहलीन ॥ राम भरत उपदेस्या नीतरीत परवीन ॥ १०३ ॥ देा० ॥ विप्र पिट्याले नगर की मुक्कि निहाल विचार । यंथ यह पूरन कर्या मुक्कि विचार मुधार ॥ १०४ दो ॥ लघी नीत महाराज सा लघ कीनी नीत ॥ किवत छंद बरनन किया नृप हित धर्म न प्रीत ॥ १०५ उन्नीसे देा साल में पाष मुकल पच दूज ॥ जुध वार मुभ जुध दे जे जे जो जग पूज ॥ १०६ ॥ कबन सभन की बंदना करही वारंबार ॥ छंउ बंद निह जानहूं लीजे नाथ मुधार ॥ १९९ ॥ हित श्रीमन महाराजाधिराज राजराजेश्वर महाराज श्रो नरेंद्रसिंघ महिंद्र बहादर हित मुक्कि निहाल विर्वित मुनीत रत्नाकर नीतसार बरननं यन्थ समाप्रं ॥

Subject.— नीति॥

Note.—ग्रन्थ कर्ना मुकवि निहाल है इन्होने पटियाले के महाराज की नरेंद्रसिंह के लिये यह ग्रन्थ संवत् १६०२ में बनाया । इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि भी इसी संवत् में लिखी गई थी ॥

No. 108.— মুখান বিশার Verse. Substance—country-made paper. Leaves—40. Size—9½ × 4 inches. Lines—10 on a page. Extent—1,125 slokas. Appearance—old. Complete. Incorrect. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Sujana Vinoda.—A book on Hindi composition by the poet Deva Datta of Mainapuri (1620 A.D.). This manuscript is dated Samvat 1857 (1800 A.D.). There is another incomplete copy of this book in this library.

Beginning.—श्री गयेशायनमः ॥ दोहरा ॥ श्री राधा हरि प्रेम वस सरस सिंगार उ-दार ॥ हरितु बारहे। मास गुण बृन्दा विपिन विहार ॥ १ ॥ श्री वृन्दा वन श्रस्तुति ॥ प्रेमी हिता ॥ होही वृज वृंदावन मेहि में वसित सदा जमुना तरंग स्थामरंग श्रवलीनि की ॥ देव वेह सुंदर सघन बन देवियत कुंजन में सुनियतु गुंजन श्रलीनिकी ॥ वंसीबट तट नट नागर न चतु मोमें द्वास के विलास में मधुर धुनि बीनकी ॥ भरि रह भनक बनक तार ताना की तनक सनक तामें भनक शुरीनि की ॥ २ ॥ श्रष्ट वृन्दावन समय गुण दंपती वर्णनं ॥ दोहा ॥ रितु तींश्यो समे दंपति तीनि सहुए ॥ रस डत्पित बिलास श्रह प्रकास सुरस श्रनूप ॥ ३

End.—तन मन बाट पट कपट घूचट वेलि ठर सें लगाये इतने पे अरसात हैं। । धाकी अपन्याड अपने न सपने ही थिर होते नहीं नम पिछ थिरात हैं। ॥ कोधी किहि गैल खेल खित्या छपाइ जिक बिरह बेगाने देव बोलत न बात है। ॥ प्यारे परजंक हूं में सास ले ससंक अंक हमें अजुलात है। ॥ ४८ ॥ में।तीसो आरती हिय जानिक प्रभात दग ठीले कि प्रीतम के गात सु लफलफिन को ॥ उत्तरत सेज ते सपीनि सुष देत नाथ नहीं वैंनी लाबी लये लाख मेरे लफिन की ॥ दासी देवता सी पग दंपित के दािव चली दावे पग बसन · · · लाल की चरन सेव बाये दास देव रगमगी अंगजेब जगमगी सु लफिन की ॥ ५०॥ इति श्री सुजनिक्नोदे देव कि कि बार रितु विलास वर्षोंना नाम सममें। विलास: ॥ ० ॥ इति सुजन विनोद संपूर्ण सुभं संवत् शर्म कि बाव सुदी ह बुध वासरे लिपितं श्री दिमान दुर्जनिसंह गार उत्तन इंद्रगठ नदी सिंधु नदी तट परगनी तहाहिर सरकार येरिक सूबा अक्बरबाद याद दुरेषी पेश्री लियी मिनकि योका तटे ॥

Subject.—काव्य साहित्य॥

Note.—कवि देवदम रचित। लिपिकाल संवत् १८५० मिती यावण मुदी ६ बुध धार है।

No. 109.— केट्रापंचाकाष Verse. Substance — country-made paper.

Leaves—71. Size—12½ × 7 inches. Lines—12 on a page. Extent — 2,725 slokas. Appearance — new. Complete. Correct. Character — Devanágarí.

Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Kedára pantha prakása.—An account of the journey of Rájá Narendra Nátha Sinha of Patiálá by the poet Dása. He wrote this book in Samvat 1910 (1853 A.D.).

Beginning.—श्री गयोशायनमः ॥ श्रथ केदार पंथ प्रकास लिख्यते ॥ दोहा ॥ गुर गन पति पितु मात के पद बंदी जु भात ॥ जिनकी कृपा कटाइ रिव तुरत हरत भव रात ॥ ९ ॥ नर नारायन सुमर पुन द्वीपाइन मन लाय ॥ जिनके मग पत परत नर पाराइन है जाय ॥ २ ॥ जिह गुन गाइन सुनत नित नारायन मुद होत ॥ तिह नारद मुनि वंद श्रव जन भाव बारध पेत ॥ ॥ तिह वानीं पद द्वंद के। वंदत श्रव डर श्रांन ॥ जिह करनाहित हपाकर जन कुवलन सुषदांन ॥ ४ ॥ जन कुबलन को सुषद जो बल कमलन को नास । सांचे रघुबर दंद लहु ये। वंदे किव दास ॥ १ ॥ End.—सेरठा । लियी जुन्य निज हाथ वहे लगी में जया मित ॥ तुम छमवी किया मूल पक्षल कविदास की ॥ ७८ ॥ पून्यों कातक मास संवत् नम सिंस महि॥ पूरन की कविदास कथा किदार प्रकास कर ॥ ०६ ॥ पान करह कत कूर बिना उपवर पुन्य ते ॥ कथा अभी रस मूर नारायन संबंधनी ॥ ६० ॥ इति श्री राजाधिराज श्री नरेंद्रसिंध केदार ग्राचार्य किदार पंथ प्रकास पंच किदारी नाम पंचमी विसराम ॥ १ ॥ सुभम ॥

Subject.—बेदार याचा वर्षन ॥

Note.—कर्ता कवि दास है। ये भी पिटियाला राज्यात्रित थे बीर महाराज नरेंद्र सिंह ने केदार बदीनारायण की याचा करते समय जैसा वहां के मार्ग का वृत्ताना लिखा था लदनुसार इन्होंने इस यन्य में ठसे छन्दोबद्ध किया है। निर्माण काल संवत १६९० कार्तिक सुदी १५ है।

No. 110.—द्वारियानंद्रश्वाप Verse. Substance—country-made paper. Leaves—37. Size—12 x 7 inches. Lines—12 on a page. Extent—950 slokas. Appearance—new. Complete. Generally correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Dala Singhánanda prakása.—A collection of 727 couplets on different subjects by the poet Dása (See No. 111). It appears that the poet completed this collection in Samvat 1890 (1833 A.D.) From the opening lines of this book it appears that the poet's full name was Dala Singha and his nom-de-plume was Dása.

Beginning.— डों श्री गयेशायनमः ॥ श्रष्ट दलसिंघानंद प्रकास ॥ सतस्या लिघ्यते ॥ कृत कविदास श्री दलसिंघ ॥ मंगलाचरन ॥ दोहा ॥ सिमर गुरू गेविंद सिंह सिगर सुषन को सिद्धि ॥ जां पद पदम सुग्रेम हे बुद्धि वृद्धि नव निद्धि ॥ ९ ॥ गुष्ट गोविंद सिंघ पद पदम करत सारदा ध्यान ॥ कर सुकंच राषित भलें याते लोंचे जान ॥ २ ॥ श्रीत ध्वज गुष्ट पद बदम सो पदम कीना नेह ॥ पदम सुपद श्रनुकरन कर बेठी करवर गेह ॥ ३ ॥

End.—श्रय यग्य जनम वरननं ॥ देा० ॥ संवत नभ निध वसुरविधु वासर बुध विचार ॥ साढ़ सुदी दुतिया भले भया यग्य श्रवतार ॥ २२५ ॥ गुहू वाल से सीस सुभ इच विराजत निरुप ॥ पुर पटियाले मा रची यह रचना वर्षित्य ॥ २२६ ॥ श्रीता वकता से कहीं मन वच क्रम कर नीत ॥ श्रिस्वल गोजिंदसिंघ पद सदा बसे मम चीत ॥ २२० ॥ इति श्री दलसिंहानंद प्रकास सत्य से सताई दोहरा समाप्रं ॥

Subject.—श्रनेक विषयों के ०२० दोहों का संग्रह 1

Note.— यन्थकती कवि दास है। श्रारम्भ में इसके लिखा है कि "कृत कविदास श्री. दलसिंह" इससे यह श्रनुमान होता है कि इनका पूरा नाम दलसिंह श्रीर उपनाम कवि दास था। १८६० श्राक्षा सुदी २ खुध वार इस यन्थ का जन्म समग्र लिखा है।

No. 111.— पुंद्रस्त रिंगार Verse. Substance — country-made paper. Leaves—57. Size—9½ × 6½ inches. Lines—16 on a page. Extent—900 slokas. Appearance—ordinary. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Sundara Safa Singára.—Praises of Krisna Chandra by one Sundara, who composed this book in Samvat 1869 (1812 A.D.).

Beginning.—श्री कृष्णायनमः ॥ श्रध युंदरसतिसंगार लिख्यते ॥ चौपाद ॥ हरि दन वन भोरही पधारे ॥ भूषन वसन श्रंग श्रंग युधारे ॥ मन मेश्वन जन जन मन मेश्वन ॥ साम लजावन नख सिख सेश्वन ॥ बीतांबर कर मुरली धारे । इंम इंम बरवत है युधारे ॥ अधुर श्रंत बोलत बतियां ॥ सेश्वे मन मेश्वे युभा दित्यां ॥ पेश्वे मानी मुक्ते मेशती ॥ रीक रोक गई लिख लिख जेशती ॥ श्री दृषमानु लली की गली जे। ॥ युंदर हिली मिली भावे चली से॥ श्रवही तो भाषते दे गय बोहनी ॥ डारिंग श्रागे सब पर मेश्वनी ॥

End.—कवित ॥ भावे ठमंग से दीप पे पतंग सफूलें मतंग सी माना पतंग सी भुक भुका है है । बांकी पीत चंग को बागे पीत रंग को भूवन पीत चंग चंग सो सोही को सोहां है है । कपत चंग चंग गरें तपत चंग चंग है भरी हुप रंग मने वंग सी उड़ाई है । सरस्त चंग चंग बर्ग वंग दंग दंग तन मन सा सुंदर विल जाई है ॥ १०९॥ चापाई ॥ संवत चठार है समझतर ॥ वैसाख मास मिल मास पवित्तर ॥ गुक्र पत्त नोमी यतवार ॥ मुन्दर पीछी करी मुरारि ॥ इति घी सुंदरसतसिंगार संपूर्णम् ॥ यन्यकत्तां को प्रार्थना ॥ देशहा ॥ में ता अपनी जान में कोन्हा गुद्ध बखान ॥ पर लेवक के लिखन को कछू नहीं परमान ॥ १ ॥ चापाई ॥ पिंगल छंद भेद नहि जाना ॥ काव्य यन्य मन में निहं चानी ॥ केवल हरि एस गायो ॥ हरि रिसक्त को मन को भायो ॥ पिंगल दृष्टिते यह न लखागे ॥ जिय में हरि को चान लिखागे ॥ में ताकी बल हरि जस गांजे ॥ जीरन सी चपराध हिमाऊं ॥ देशहा ॥ कियो हरि जन मुख कारने सुंदर सत सिंगार ॥ संत जनन जन सेती मांगा मिता प्रकार ॥ १ ॥

Subject.—श्री कृष्णचन्द्र के विषय में किसी भक्त की भावना ।

Note.—यन्थकर्ता के।ई युन्दर नामक भक्त हैं, जिन्होंने इस यन्थ के। संवत १८६६ में बनाया ॥

No. 112. - जातमाञ्च Verse. Substance country-made paper. Leaves—400. Size—10¾×7 inches. Lines—17 on a page. Extent — 9,900 slokas. Appearance—new. Incomplete. Correct. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Jagaṭa Mohana.—A book dealing with several branches, of Hindi composition and such other subjects as Vedánta, Nyáyá, astrology, medicine, etc. The name of the author is Raghunátha Bandíjana, to whom some villages were given by Rajá Barivanda Singha (alias Balavanta Singh) of Banáras. He composed this book in Samvat 1807 (1750 A.D.). There are several blank pages in this manuscript. Probably some portions of it have not been copied out.

Beginning.—श्री गयोशायनमः ॥ युफल होति मन कामना मिटत विधन के पुंद । युद्ध सरसत बरसत हरष मुमिरत लाल मुकुंद ॥ १ ॥ दोहा ॥ ब्रह्मा के। युत मानसिक गैतिम मस्य प्रसिद्ध । ताके कुल कोट्ट मिसिर प्रगट भयो तप निद्धि ॥ १ ॥ वेद कंठ चारे। कर श्रष्टादसे। पुरान । उपनिषदी श्ररु सास्य एव श्री एव कला निधान ॥ २ ॥ प्रवेषध चंद्रीदय करे नाटक परम श्रन्थ । जामे दरसनु हे सदा ब्रह्मचान के। हृष् ॥ ३ ॥ [श्राणे काशिराज की वंशावली गैतिम मुनि से महाराज वरियंडसिंह तक । फिर निमाण काल] दोहा ॥ श्रष्टारह से मुनि श्रिथक संवत श्रित श्रिमराम । माध श्रुक्त श्री पंचमी तिथि मिति एव सुख धाम ॥ ४ ॥ वन्य जगत मेहन भया ता दिन एव सुखरास । नवरस मध सब जगत में श्रपंनी किया प्रकार ॥ ॥ ॥

End.—श्रथ मूरळ्ना ॥ जहां होत श्रारोह श्री जहां होत श्रवरोह । स्वर की मुनिगन मूर्ळना तहां कहत करि छोह ॥ १२० ॥ ऊरध की सुर जाह जो से। कहिंशे श्रारोह । श्रथ की स्वर श्रावे जहां तहं कहिंगे श्रवरोह ॥ १२० ॥ यामाश्रित हे मूर्ळना तिन की संख्या सात तिन के सुनिग्ये नाम श्रव सब स्वर संग विभात ॥ १२० ॥ प्रथम मुर्ळना यह की ताकी मंद्रा नाम । हे नियद की दूसरी से। रजनी श्रमिराम ॥ १३० ॥ धेवतादि की श्रायता हे तिसरी गुण रास । सुद्ध यह हे मुर्ळमा चीथो पंचम पास ॥ १३० ॥ परियमदि को पांचह मध्यम स्वर के पास । श्रव्यां की छुई स्वर गंधार के श्रास ॥ १३० ॥ रियमदि स्वर से। भई प्रगट मूर्छना जीन । नाम उदग्ता कहत है श्रस मुख दायक तीन ॥ १३३ ॥ (बस ग्रहीं पृष्ट का श्रंत है श्रामे सुद्ध नहीं लिखा है सादा पन्ना १ छूटा है इति मिति कुळ नहीं है) ॥

Subject.—इसमे अनेक विषय है, वेदान्त, न्याय, सामुद्रिक, क्यातिष, वेदक, कोक, पिंगल, चिषकाव्य, अलंकार, नायिका, संगीत आदि ॥

Note.—इसके यन्थकती काशी निवासी बंदीजन कवि रघुनाथ है। ये महाराज काशीनरेस बरिवंडसिंह जी के श्रामित थे। इन्होंने इनकी कई याम दिए थे। इंस यन्थ का निर्मायकाल संवत १८०० माध् शुक्त ४ है॥

No. 113.—1919 Verse. Substance—country-made paper. Leaves—56. Size — 10½ × 6¾ inches. Lines — 13 on a page. Extent — 444 ślokas. Appearance—new. Incomplete Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rasa Múla.—The detailed description of heroes and heroines by the poet Lála of Banáras who flourished in the time of Rájá Cheta Singha (1770-1781) of Banáras. He composed this book in Samvat 1833 (1776 A.D.).

Beginning.— भी गर्गेशायनमः ॥ दोहा॥ गिरी गनपति वंदि के श्री संकर की ध्यान॥ भाषा कविता करत है। दीने यन्य बनाय॥ १॥ नाके पढ़े सुने सबे नगत चहे सब कोइ। कि कोविद में। हित रहे भूपित की जम्म होइ॥ २॥ कवित। ध्याद गजबदने सदाई सक रदने सुपुन्य करे एदने देवेया बहु धन के। संकर सुग्रन विभुवन में प्रगट ऐसे भुग्रन भुग्रन में रेषेया जन नन के। कहे कविलाल कलाधर भाल भलकत छविजाल प्यारे कुलि गन के। कविता नुगृति के सुमित के प्रकास है नासन कुमित के विनासन विधन के॥ इ॥

(पृष्ठ ह) रितु वसंत दिन फाग के गंग जमुन के कूल। रामनगर में मीद भरि कखी यन्य रसमूल ॥ ३३ ॥ संवत ठारह में वरष गए बोति तेतीस ॥ मास फागु तिथि पंचमी भया यन्थ रस ईस ॥ ३४ ॥

End.—त्रय त्रधमा लक्ष्म ॥ पिय त्रनुरागी रहतु है त्रापु न रागी नेतु । त्रधमा तासी कहतु है मानु कर किर टेक ॥ २२९ ॥ नाहक हो जिक्क जाति है जाको है यह चानु ॥ ठन गन ठानित पूर्व से त्रनगन तनगन रेज़ि ॥ २२२ ॥

(इति नहीं है। आगे ३ पचे सादे हैं) ॥

Subject.—नायिका भेद ।

Note.—यह यन्य कवि लाल रचित है जो काशीनरेश महाराज चेतिसंह के आ-

No. 114.—कवित्र महाराजा महोपनारायण बहादुर तथा श्रेष्ट काशो राजें के Verse. Substance—country-made paper. Leaves—33. Size—10½ × 6¾ inches. Lines—13 on a page. Extent—290 ślokas. Appearance—new. Incomplete Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Kaviţta Mahárája Mahipa Náráyana Bahádura ţaţha aur Kásirájon ke.—Praises of the Rájas of Banáras and of Rájá Cheṭa Sinha specially, by the poet Lála of Banáras (1775 A.D.). The book does not appear to be complete.

Beginning.—श्री गणेशायममः ॥ रामः ॥ कवित राजा महीप नारायन बहादुर के ॥ यणन उद्यणन विदित महिपालन की जाहिर जहांन प्रतिपालक दुनी की है। जब्बर भुज-ब्बर गब्बर बचत जासे सब्बर मिटावे ध्याल गातम धनी की है ॥ कहे कविलाल टान भाज बली विक्रम सा जंबूदीप जपर करन करनो की है। नाती वरिवंडसिंह भूपति जसी की भी महीपति मही की नीकी टीकी राजसी की है॥ १॥

. End.—श्रंघा घूंध घूंधुरोत घूरि से धुरेटे रहे काल ही सपेटे है करेटे बल वाह के। श्रेडत श्रडत मद हरत भरत नद पगतर पब्बे चूर करत सराह के। कहे कविलाल बांधि कढ़त कतारे माना मेघ मध्यारे नभ तारे लें। उद्घाह के। हलत धरारे होत नगर हलारे जब चलत दतारे चेतसींघ नरनाह के।

Subject.—काशी नरेश के पूर्वज राजाग्रें। की प्रशंदा ।

Note.—याध्यकर्ता लाल कवि है। काल इसमें कोई नहीं है न इति हो है। इसी से इस याध के पूर्व होने में संदेह है।

No. 115.— तमाया Verse. Substance—country-made paper. Leaves—570. Size—124×64 inches. Lines—11 on a page. Extent—13,448 slokas. Appearance—new. Complete. Generally correct. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Máhárája of Banáras.

Ramáyana.—The story of Rama Chandra's life by Maharaja Visvanatha Singha of Rewah (1840). The manuscript is dated Samvat 1889 (1832 A.D.).

Beginning.—श्री गर्थेशायनमः । श्री मते रामानुजाय नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ श्री स्थितं बालकांड ॥ श्लोक ॥ तत्वं वेदांतशास्त्रस्पृतिनिगममहत्सं दितानाटकानां यत्तत्वं तािपनीनामुरगपितमते यत्पुराञ्चत्तजातं ॥ पौरायोियं च तत्वं कथयित नितरां काव्य रामान्याानां । साहित्यानां रहस्यं विमलमितमुदे विश्वनाथप्रवंधे ॥ १ ॥ सेरठा ॥ परहु ते पर प्रभु दांनि ॥ प्रियादास पद पदुम कहं ॥ कार्र प्रनाम उर ऋांनि ॥ कहीं चरित पर राम के ॥ बंदीं हित हरिवंस ॥ रिसक सिरोर्मिन रास रस ॥ करतिहिं जासु प्रसंस ॥ मगन मेर मन मोट मे ॥ १ ॥ चीपाई ॥ श्री हरिवंस कुलोदिध जायो । सकल तापहर राम सुहायो ॥

End.—देहि। । जैति जैति थी हिर गुरू प्रियादास रस गाय। रांमांयंन जिनकी कृषां कह मूल्ष विसुनाथ । जैति जैति वानी जयित त्राचारज करतार। परम परा गुर की जयित बरनन जेहि सुख सार ॥ सेरिठा ॥ जै जे सिम्म रघुनाथ । बसहु त्राप मेरे हियें ॥ गृह्यों सरन विसुनाथ । देहु नाथ निज प्रेम पर ॥ १०४ ॥ त्रथ कमलबंध छपद० ॥ विस्वनाथ कर नाथ राम जेहि हर उरवर धर। प्यार मार सिर मार बीर बर कर धर वर सर। बार बार हर भार पार कर नर वर हर वर ॥ चीर जार ठर बार पीर उर हर पर दर कर ॥ सा रच्छाः

रहे रस रसो रस रम्या रहे रत्तार वर ॥ है रहेणा रसे रम्ये रतीर राखे रिट रिट मुर नर ॥ # ॥ इति मी महाराज जुमार मी बाबू साहेब विश्वनाधिसहंजू देव कृत उत्तर कोड संपूर्न ॥

Subject.—श्री शमचन्द्र का इतिहास ॥

Note.—महाराज विश्वनाधिषंद्वजी देव रीवांधिपति कृत। यह यन्ध इन्हें ने भ्रपनी बाल्यावस्था ही में ल्युबा है, जब राज्याधिकारी नहीं हुए थे। लिपि बाल लंका कांड से मिलता है श्रीर कहीं नहीं है। वह संवत १८८६ है।

No. 116.—रामगुणादम Verse. Substance — country-made paper. Leaves—76. Size—9½×6½ inches. Lines—30 on a page. Extent — about 3,375 slokas. Appearance—old. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Ramagunodaya.—An account of the horse sacrifice performed by Rama Chandra. The poet, Dhani Rama, wrote this book in Samvat 1867 (1810 A.D.) at the request of Babu Devakinandana of Banaras, whose old palatial buildings may still be seen in Banaras in Mohalla Ramapura. Dr. Grierson says that this poet was born in 1831, which date appears to be incorrect. If the year 1831 may be taken to be of the Vikrama Samvat, it may be the correct date of the poet's birth.

Beginning.—मी गणेशायनमः । कवित । जाहि सुमिरत सहने हो सिद्धि पाइयत गाइयत मागम निगम मित सार है । शंकर परम प्रिय परम विसाल वर वदत गयंद गित मागम मात सार से । शंकर परम प्रिय परम विसाल वर वदत गयंद गित मागम माग मिन मान प्रन प्रतिपाल कर सकल मागल विनाशक विहार है । ईसुरी गजानन चरन चितु राखि है। कहत वर भाषि राम चरित प्रचार है ॥ १ ॥

End.—सेरठा। सीय सहित यहि भाति अश्वमेध चय राम किय। दियो प्रसारि द्विति ... तीनि लोक कीरति विमल ॥ १३ ॥ छंद तात मेसन पूंछियो मध की कथा। भाषियो सिव सेष तोहि भई जथा ॥ सेस भाषित की सुने सुष पाइयो। धन्य धन्य अनेक थो मुनि गाइयो॥ १४ ॥ दोहा॥ जाग कथा भाषा करयो अति छिठई मन पूरि। छमा करावन हेतु सब कविन निहेरत भूरि॥ १४ ॥ इति श्री राम गुयोदये यज्ञ समापनं नामेकपष्टितमः सर्गः॥ ६९ ॥ युस्तकोयं समाप्रिमगमत् धनीराम कविना स्वहस्तेन लिषिता॥ चंचरी छंद ॥ अब्धि दर्शन सिद्धि सम्मित चंद संवत राजहो। शुक्र श्री तिथि खद्र शुक्र सुपच्छ स्थामल साज हो॥ रेवती उड्ड मे प्रस्त महा दिनाग से। ठाइयो। चार तादिन यंथ पुरनता विशेषि से। पाइयो॥ १॥ संवत १८६० नेष्ठ वदी १९ शुक्रवार रेवती नचच ॥ छ छ छ छ छ छ छ छ छ

Subject.—श्री रामाश्वमेघ का वर्णन ॥

Note.—कर्ता कवि धनीराम है। ये बाबू देवकीनन्दनसिंह के श्रामित थे। निर्माण काल सं १८६० जेष्ठ कृष्ण ११ शुक्रवार है। यह पुस्तक यग्यकर्ता की हस्तिलिप मालूम पड़ती है।

No. 117.—Hunn Verse. Substance—country-made paper. Leaves—51. Size—7 × 4 inches. Lines—6 on a page. Extent—300 slokas. Appearance—new. Complete. Correct. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Bhúpa Bhúsana.—Moral lessons for kings by the poet Jaikehari of Patiálá. He wrote this book in Samvat 1890 (1823 A.D.).

Beginning.—डों त्रो गयोशायनमः ॥ श्रय भूपभूषया लियंते ॥ भूनंग र्खंद ॥ संदा सचिदा नंद हुपं श्रपारं । सुधासी खुधासी समासी श्रधारं ॥ श्रेने श्राद्धि श्रेत्री श्रधा कथ गामी । सवी बेहरी जे श्रहंतं नमामी ॥ १ ॥

End.—पृथीबाल के हेत ये यंथ कीना । भया जा समे विक्रमा साल चीना । नभं निद्ध सिद्धी घरा का घरीने । सुदी हाड की तीन का जान लीने ॥ १६० ॥ इति भी जेक्केहर विर्याचते भूपभूषयो नीति यंथे नवम रतनं समापतं । शुभमस्तु सर्वनगताम ॥

Subject.—राजनीति ॥

Note.—ग्रंथकर्ता जेकेहरि कवि है। ये पटियाले के राजा पृथ्वीपालिखंह के पाणित जान पड़ते हैं। इस ग्रन्थ के निर्माण का संवत् १८६० प्रापाठ शुक्त व है।

No. 118.—विनादचित्रका Verse. Substance — country-made paper. Leaves—9. Size—8½ ×.4% inches. Lines—15 on a page. Extent—300 slokas. Appearance — old. Complete. Generally correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Vinoda Chandriká. —The detailed description of heroes and heroines by Kavindra Udaya Nátha (1720), son of Kálí Dása Trivedí. The full name of this book is Rati-vinoda-rasa-chandriká. The manuscript is dated Samvat 1860 (1803 A.D.).

Beginning.—मी गर्थाशायनमः ॥ विनाद चिन्द्रका लिप्यते ॥ तपाब तत्व की सतागुन के सत्व की ममत्व महादेव पारवती पर किति को । वृद्धि को विधान की प्रधान गीरवानन को बीन किया विधान विनासीनी विमित्त को ॥ वंदन विलित सुंडा दंड सा मिसित केथा कामना प्रयाग का प्रयाग उप भ्रति को । वंदत कविंद्र इंद्रु कल्प सा विमल, महा सिद्धिन के सदन रदन गमपित को ॥ १ ॥ वोना पुस्तक धारिनी हंस चारिनी नाम । वानी वाक सरस्वती देहु बुद्धि भ्रमिराम ॥ २ ॥ ताते उपने गंध्र यह चले चहूं दिसि चार ॥ रित विनाद रस चंद्रिका सुनि रीभे संसार ॥ ३ ॥

End.—श्रागत पतिका ॥ दोहा ॥ पिछ श्रावे परदेष ते हरिषत हो इ. जो बाल । श्रागत पतिका कहत है ताकी सुमित रसाल ॥ १०९ ॥ श्रायो विदेस ते नाह नवेली की श्रानद कीड घरी सुघरी है। लाज लिये गुर लोगिन की गृह काज की श्राञ्ज मरी नकरी है ॥ ज्वाल खुकी बिरहामल की तिछ केल एकल हूँ श्रंक भरो है। बेलि दवागिनि की भुरसी जिमि दौगरे के पर होत हरी है ॥ १०९ ॥ श्रायञ्च ॥ श्राये परदेस ते सलोने स्थाम सुनी बाम श्रागि मिसु गई लेषे येसे नये हाल की। विवरन रंग भयी गरे सुर भंग भया पुलकित श्रंग भयो भूली गित काल की ॥ भनत कविंद येद स्वेद जल मीचे द्रग कंपत श्रधर मले दसा सेत जाल की। चीर से सरीर कर्पी छूचट से मुख देखी उधिर उधिर जात लगिन गोपाल को ॥ १०३ ॥ हित श्री रसिक रायमनी विनोदार्थ कविंद उदयनाथ वर्नितायां विनोद चिन्द्रकायां कुलवधू परवधू वर्ननं नाम तृतीयः प्रकासः ॥ ३ ॥ समाप्रम् भूयात् । श्री १८६० मिती कार्तिक शुद्ध २ चन्द्रवासरे लिखितं ईश्वरीप्रसाद गाह की ॥

Subject.—नाग्रिका भेद ॥

Note.—यन्थकर्ता कविंद्र उदयनाथ है जो १००० के लगमग हुए। १४ पुस्तक का लिपिकाल संवत् १८६० है ॥

No. 119.—पञ्चाइ दशन Prose. Substance—Kashmir made paper. Leaves —87. Size — 11 \(\frac{1}{2} \times 6 \) inches. Lines—15 on a page. Extent — 975 slokas. Appearance—new. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Panchánga Daršana.—The mode of preparing Hindu almanacs by Yadunátha Sukla who wrote it in Samvat 1857 (1800 A.D.). The manuscript is dated Samvat 1887 (1830 A.D.).

Beginning.—मी गयोशायनमः॥ नमः सरस्वत्ये॥ म्रथ पंचांग दर्शन यंथा लिख्यते॥ दोहा॥ सिद्धि समवस कर्म की होय विदित जग मांह। ताते ताहि विचारियत शस्त्र बुद्धि के छांह॥ १॥ नाम रूप है कर्प मनु युग संवत्सर मास। पचवार तिथि नषत युति करण लग्न सा रास॥ २॥ कल्पादिक नित एक से तिन की नित न विचार। वारादिक नित भ्रमत है ताते तासु प्रचार॥ ३॥

End.—गुह शुक्र मूर्य तीमरे चीथे शनि मंगल कठे इह याग लिया गया है सा

स्वाती भरगो श्लेषा धनिष्ठा हस्त श्रनुराधा तीना उत्तरा राहिगी	मूल शतभिषा ग्राद्रा ग्रभिजित	तीनें पूर्वे श्रियनी पुष्य मचा मृगशित श्रवण कृत्तिका चिषा धनिष्ठा
शनि रवि चन्द्र गुरु	बुघ	शुक्र भेाम
प्रतिपत् तोज पंचमी यकादशी द्वादशी	ऋष्टमी पष्टी द्वितीया	द्वादशी ऋष्टमी चाेष चतुर्दशी
त्रकुल गणई	कुलाकुल	कुल गगाइस
सगग्र से युद्ध की इच्छा करे तो विजय होय	गण इस गण में युद्ध करें ते। संधि होय	गण में युद्ध करें ते। स्थिर रहे

गिरि शर वसु शिश वर भइ मधु विदि रित्र बुध वार । दर्शन यह पंचांग की लिया नया अव-तार ॥ १ ॥ बाल वचन भाषा रचन जान नहीं अपमान । कीजे लीजे धिर हिये सञ्जन सरस सुजान ॥ २ ॥ इति श्री शुक्त मधुरानाध सुत शुक्त यदुनाध विरचितं पंचांग दर्शन समाप्रम् शुभं भूचात् ॥ संवत् १८८० शाव्या शुक्त पूर्ण पञ्चदशी दिन वुधवार सरे संपूर्णम् ॥ लिखितं महताबराम पिंडत काश्मीरी रामनगर विषे ॥ शुभं ॥

Subject.--च्यातिष ॥

Note.— ग्रन्थकर्ता यदुनाथ शुक्त हैं। इन्होने संवत् १८५० में इस ग्रन्थ की बनाया।

No. 120.— Extra Verse. Substance—country-made paper. Leaves—64. Size—10 × 6½ inches. Lines—17 on a page. Extent—about 850 slokas. Appearance—old. Incomplete. Incorrect. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Svarodaya.—The decision about the most auspicious moment for engaging in a battle by the breaths taken at that time. It is a common belief among Hindus that when they want to do a work they examine their breaths, i.e., they see whether the breath comes strongly from the right or the left nostril. The moment when the breath comes with a greater force from the right nostril is considered to be most auspicious. The name of the author is not given. In the opening Stanza the name Datta occurs which may be the nom-de-plume of the poet.

Beginning.—श्रोगगेशायनमः ॥ कवित वंदे पुर मुनि गंधर्वसु नाग नर कामद कृपानिधि एकल विद्धि को है घर ॥ श्रमर एरित को एरोज सूंड ग्रग होहे चास्त्रो भुज धरे
पास ग्रंकुस ग्रमेवर ॥ मींदुर न सुंड गज तुंड वक एक दंत लंबोदर भने दत एकल कलषू हर ॥
गनपित प्यारो ना दुलारा गिरिजा जू को सा सुमिरत देत सुष संपतिनि को निकर ॥ १ ॥
बीधन हरन तुम है। एदा गनपित होहु सहाइ । विनती कर जार करें। दोजे यन्य वनाई ॥
बीना पुस्तक धारिनी इंस चारिनी नाम । वानो वाक सरस्वती देष्ठु बुधि श्रमिराम ३
श्रोगगोशायनमः ॥ दो० ॥ वानि जू को सुमिर के देखि सुरोदय पथ । धर्मवंत राजानि के ग्रथे
कोजिग्रत यन्य ॥ १ ॥ मल्ल युद्ध भट यू पूर्नि जूप यूद्ध के काज ॥ वादो प्रतिवादो विषे
वरनत सभ कविराज ॥ २ ॥ दुष्ठु दिस गनक विचारि के कहत विने के हेतू । पे निदान
यह जानिबो धर्मवंत कर खेत ॥ ३ ॥

End.— सिन श्री राहु रिव भीम है कांसिन क्ष्म परि जाइ। जीने श्रासन विष श्रव विघ्न क्ष्यादिक पाई ॥ २० । जीन श्रासन विषे में परे बृहपित श्राइ। श्रानंद सदा माहार के करें से राज बनाइ ॥ २८ ॥ इति श्री सिंघासन विधि प्रकाश समाप्रम् ॥ ० ॥ (इसके श्रागे एक श्रीर चक्र बना है उसके श्रागे चार पांच सादे पन्ने कूटे हैं। इसी से यह ग्रन्थ पूरा नहीं जान पड़ता) ॥

Subject .-- राजात्री के लड़ाई पर चढ़ने के लिये स्वरों का विचार ॥

Note.—कती के नाम का पता नहीं है। कदाचित दत्त हो। कोई समग्र भी नहीं दिया है।

No. 121.—भोबाल्मिक रामायण Verse. Substance—Kashmir-made paper. Leaves—615. Size—14 × 12½ inches. Lines—24 on a page. Extent—about 37,000 slokas. Appearance—new. Complete. Generally correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Śri Válmiki Rámuyana.—Translation of Válmiki's Rámayana by Santoşa Sinha of Patiálá. He took two years to finish the translation, which was completed in Samvat 1890 (1833 A.D.).

Beginning.—डों श्रीगगोशायनमः ॥ अधरामचंद्राय नमः श्री मित बालमीक रामायन लिखते ॥ बालकांड परारंभते ॥ दोहा ॥ बानो वाक मुवरन में विसद बरन समचंद ॥ बीन दंड मंडत करा बंदो पद कर बंद ॥ ९ ॥ दोहा ॥ स्वल अजा अज सिर्जि तरु फल ब्रह्मंड अनेक ॥ व्यापक जड़ जंगम ब्रह्मन महा मही सिर टेक ॥ २ ॥ कर्वितु । श्री गुरु नानक अनूप ब्रह्महूप भये अंगद अमर भये रामदास दो सहर । सित गुहू अरजन श्री हिर गुविंद चंद हरीराय देत हैं अनंद की विलंद बर ॥ कसिट निकंद हरि कृष्ण मुकुंद जन तेग सुबहादर विसाद विग्यान तर । श्री गुविंदसिंघ ली अरिंदम पदारविंद बंदों ब्रिंदु दुंद हर दुहूं हाथ बंद कर ॥ ३ ॥

Subject.—बाल्मोकि रामायण का छन्दाबद्ध अनुवाद।

Note.—ग्रन्थकर्ता कवि सन्ते। पसिंह हैं जिन्हें ने १८६० त्रीर १९ की संधि में इस ग्रन्थ की पूरा किया ॥

No. 122.— रम्म य-घ Verse. Substance—country-made paper. Leaves—75. Size—9½ × 4½ inches. Lines—7 on a page. Extent—1,100 ślokas. Appearance—ordinary. Complete. Correct. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rasamaya Grantha.—The detailed description of heroes and heroines by the poet Bení of Asaní. He wrote this book in Samvat 1817 (1760 A.D.) The manuscript is dated Samvat 1818 (1761 A.D.).

Beginning.—श्रोगणेशीयनमः ॥ प्रथम गणेशिंद वर्णिये यातें सम सुभ होत । सेत कर्छें जग सुजस के बर्छें पुकृत में गोत ॥ १ ॥ लस्यों कुंभ सेंदुर घस्यों विलस्ति नीली कार । एक रदन रिव शिश मना गह्यों राहु वरजार ॥ २ ॥ श्रथ नृप वंस वर्ननं ॥ गौतम रिषि के वंम में कीटू तप में हद्र । धरम धुना सुभ करम के किल में भये समुद्र ॥ ३ ॥ कीटू के कुल में भये मनरंजन मनरंज । गंजबकस रण अकिस जिन गंजे श्रिर कुल गंज ॥ ४ ॥ मनरंजन के चारि मुत जैसे चारों वेद । जिनते मही प्रगट भये राज काज के भेद ॥ ४ ॥

End.—दोहा ॥ कीन्हा रसमय यन्य यह समुफ्ति कविन की रीति ॥ जे किव कीन्वित्र रिक्ति मन ते किर्हे सब प्रीति ॥ ४३५ ॥ लसत वंस उपमन्यवर बाजपेउ किर जञ्च ॥ सुकृती साधु कुलीन वर नवरस में सरवज्ञ ॥ ४३६ ॥ दोहा ॥ बेनो कि को बासु है असनो वर मुभणान ॥ बसत सब यटकुल जहां करें वेद की गान ॥ ४३० ॥ निहस्त सिंघ सुजान वर की अनुसासन पाइ । कीना रसमय यन्य यह बर्रान नाइका भाइ ॥ ४३६ ॥ अष्टादश शत वर्षगत सब श्रीरी जानि ॥ फागुन दसमी सित सुभग चन्द्रवार अनुमानि ॥ ४३६ ॥ बिनती कीजतु कितन सें। भूल परी जी होइ ॥ से।ि सुधारा बरन धरि यन्यहि नोके जोइ ॥ ४४० ॥ चरन परि जगदंब के गनपति के सिरू नाइ । यन्यु रच्यो एंगार शुभ दोन्हा किवन बताइ ॥ ४४० ॥ इति स्री रसमययंथ संपूर्ण शुभमस्तु ॥ रितु वसंत वैकाख सुदि इति तिथि सुभग रसाल ॥ वसु शिंग वसु शिंश संमत धरि लिखो सुलिप नंदलाल ॥ १८९८ ॥ शुभमस्तु ।

· Note.—यन्थकर्ता बेनी कवि अपनी निवासी हैं। इन्होने राजा जिह्नुल्सिंह की आचा से संवत १८९० में यह यन्थ रचा। इसका लिपिकाल संवत १८९८ है ॥

No. 123.— Tine Prose and Verse. Substance—country-made paper. Leaves—49. Size—11 × 7 inches. Lines—15 on a page. Extent—1,200 ślokas. Appearance—old. Incomplete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Pingala.—A book on Hindi Prosody by the poet Sukhadeva (1700 A.D.).

Beginning.—श्रीगयेशायनमः । गयपित गैरि गिरीश के पांद नाइ निज सीस । मिश्र सु कवि महाराज कें देत बनाइ असीस ॥ १ ॥ रजत खंभ पर मनहु कनक जंजीर बिराजित । विसद सरद घन मध्य मनहु छन दुति छिंब छाजत ॥ मान्रहु कुमुद कदं मिलित चंपक प्रमून तित । मनहु मध्य घनसार लसित बुंकुम लकीर श्रति ॥ हिमिगिरि पर मान्रहु रिव किरण इमि धनधीर अर्थंग मह । सुषदेव सदाशिव मुदित मन हिमतिसंघ नरेस कहं ॥ २ ॥

End. — हृप घनावरी ॥ श्रथ गद्यस्योदाहरणं ॥ जबर श्रार जेर करि सेर समसेर बहादुर वैरिवरवारण विटारणिंह ॥ समत्य हृत्य ॥ श्रथत्थवल ॥ हृत्य समान महाबोर ॥ समरधोर ॥ धरिण धुरंधर ॥ धराधोश ॥ धवल धाम ॥ धवल सुत्रस पुंज विचित सुर धुनी धार
धवलिम श्रो महाराजाधिराज हिंमितिसिंह चिग्जीव ॥ इति गद्यं ॥ श्रथेकाघरात्पादादारभ्य
बट्विशति वर्णय

(इसके आगे १। पृष्ट सादा छूटा है। इति आदि कुछ नहीं है। ४४ पच तक पुस्तक लिखी। पश्चात् पचें पर पिंगल के विषय के कई यंच से बने हैं)॥

Subject.—काव्य बनाने की रीति॥

Note. - कर्ता मुखदेवसिंह मिश्र हैं जा बमेठी के राजा हिम्मतसिंह के श्राधित थे।

No. 124.—मादान रमारनव Verse. Substance — country-made paper. Leaves—89. Size—104 × 6 inches. Lines—15 on a page. Extent—1,000 slokas. Appearance — new. Complete. Generally correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Maradána Rasáranava.—The detailed description of heroes and heroines by Sukhadeva (1700 A.D.) The manuscript is dated Samvat 1859 (1802 A.D.)

Beginning.—श्रीवक्रतुष डो जयितः ॥ कानन टूटें विधन के जानन के यह जान ॥ कज श्रानन की जाति मिटि गज श्रानन के ध्यान ॥ १ ॥ वैस बंस श्रवतंस मिन गुण गण को दिरश्राषु । कनकसिंच जाहिर भया जग मे रैशा राउ ॥ २ ॥ दिल्लोपित के काज जिन के। टिक करी फतूह । जगमगात जग पर श्रों जाके जस की जूह ॥ ३ ॥ जाहिर हिमित हद भया सब हिंदुन को भेंड । समृति जानि जग मे करी प्रगट पुग्य की पैंड ॥ ४ ॥ पृथ्वीपाल को अयो ताके पृथ्वीराज । मीज देन को भाज से बड़ा गरीबनेवाजु ॥ ४ ॥

End.—ऐसे नवहूं रचनि के भेद कहे हम जानि । रस्यम्यनि की रीति लिख सबे जानी हैं जानि ॥ २० ॥ यह मरदान रसारनी पूरी कोनी यन्यु । याके जाने जानियतु रस यम्यनि की पंषु ॥ ४१८ ॥ इति श्री मरदान रसारनी सुषदेव बीचि विरचितम् संपूर्णम् ॥ सम्वत १८५६ शाल आवाढ मासे कृष्यपद्ये षष्ट्रम्यां कुत्र वासरे ॥ लेखक वहीरणदास यामेतु धराउत ॥ शुभमस्तु राम ॥

Subject.—नायिका भेद ॥

Noté.— यन्थकर्ता मुख्देव कवि हैं। ये वैश्य राजा मरदान के श्राम्यित ये श्रीर उन्हीं की श्राचा से इन्होंने यह यन्थ रचा, इसो कारण मरदान रसार्थव इसका नाम रक्खा गया है। इसका लिएकाल संवत् १८५६ है।

No. 125.—কবিন নামতা Verse. Substance — country-made paper. Leaves—80. Size—9½ x 5½—inches. Lines—8 on a page. Extent—1,440 slokas. Appearance—ordinary. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Kaviţţa Rámáyana.—The story of Rama Chandrá's life in the Kaviţţa metre by Goswami Ţulasi Dasa. The manuscript is dated Samvaţ 1856 (1799 A.D.)

Beginning.—श्रीगयोशायनमः । कवितु ॥ सवधेस के द्वारें सकारें गई सुत गांद के भूपति ले निकसे। अवलेकिहाँ सेच विभाचन की ठिंग सी रहियों न ठग्या धिक से ॥ तुलसी मन रंजन रंजित अंजन नेन सुपंजन पातिक से। सजनी सिंस में समसील उभे नवनील सरी- रह से विगसे॥ १॥

Subject.—म्बी रामचन्द्र का संविप्न इतिहास ॥

Note.—ग्रन्थकर्ता गास्वामी तुलसीदास जो हैं। इस प्रति का लिपिकाल सं० १८५६ है।

No. 126.—ম্বান নহন্ত Versc. Substance — country-made paper. Leaves—6. Size—11 × 5 inches. Lines—5 on a page. Extent—50 ślokas. Appearance—ordinary. Complete. Generally correct. Character — Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Śri Ráma Nahachhú.—A collection of songs by the poet Tulsi Dása in honor of the nail-paring ceremonial of Ráma Chandra.

Beginning.—श्रीगणेशायनमः । श्री जानकी वल्लभा विजयते । श्रादि सारदा गन-पति गीरि मनाइ श्रहो । रामलला कर नहळू गाइ धुनाइ श्रहो ॥ जेहि गम्ये सिधि होइ परम निधि याइ श्रहो । केटि जन्म कर पातक दूरि से जाइ श्रहो ॥ १ ॥ केटिन बाजन बाजहिं दसरथ के गृष्ठ हो । देव लोक सब देखिंह श्रानंद श्रित हिय हो ॥ नगर सोहावन लागना वर्रान न जाते हो । केसिस्या के हर्ष न हृद्य समाते हो ॥ २ ॥ ं End.—दसरथ राउ सिंघासन बैठि विराजिह हो। तुलसिदास बिल जाहि देशि ग्युराजिह हो। जे ये नहळू गावे गाइ मुनावइ हो। रिद्ध सिद्धि कल्यान मुक्ति नर पावइ हो। २०॥ इति श्रो गुसाई तुलसोदास कृत नहळू राम जू के मुंडन समय का संपूर्णम्। शुभमस्तु सिद्धिरस्तु॥

Subject.—श्री रामचन्द्र के नहळू समग्र के मंगल गान॥
Note.—यह यन्य श्री गोस्वामी तुलस!दास कृत है॥

No. 127.—श्रोपार्चतोमंगल Verse. Substance — country-made paper. Leaves—24. Size—11 × 5 inches. Lines—5 on a page. Extent_195 slokas. Appearance — new. Complete. Correct. Character— Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Bamáras.

Sri Párvați Mangala.—An account of the marriage of Mahádeva and Parvati by Goswámi Tulasi Dása, who says that he composed this book in the Jaya Samvaț. There are 60 names of these Vikrama Samvațs, Jaya being the 28th. Consequently in the 16th century of the Vikrama era, Jaya Samvaț fell twice, i.e., in 1639 and 1699. It may, therefore, be concluded that Tulasi Dása wrote this book in Samvaț 1639 (1582 A.D.).

Beginning.—श्रीगणेशायनमः ॥ श्री हेरंबरपाष रामायनमः ॥ विनय गुरुहिं गुनि गर्नाहं गिरिहि गननाथित ॥ हृदय त्रानि सियराम धरैं धनु भाथित ॥ गावउं गैर्गर गिरीस विवाह सुहावन ॥ पाप नमावन पावन मुनि मन भावन ॥ कवित रोति निह जानउं कि न कहावउं ॥ संकर द्वरित सुसरित मनिह ऋहवावउं ॥ त्रपवाद विवाद बिद्धित वानिहि ॥ पाविन करो सुगाइ महेस भवानिहि ॥ जय संवत फागुन सुदि पांचे गुरु दिनु ॥ श्राधिवन विरचेउ मंगल सुनि सुप दिनु ॥ विरने ॥

End.—हंद ॥ मृगनैनि विधु वदनी रस्यो मिन मंजू मंगल हारसें। उर धरहु जुवती जन विलेकिति लोक सेभा सारसें। कल्यान काज उद्घाह व्याह सनेह सहित जो गाइ है। तुलसी उमां संकर प्रसाद प्रमेद मन जिय पाइ है। १६॥ इति श्रीमद्रोस्वामि श्री तुलसी-दास कृत सिवसिवा विवाह मंगल समाप्रम्॥ शुभसस्तु॥॥॥॥

Subject.—श्री महादेव पार्वती का विवाह ॥

Note.—यह यन्य प्रसिद्ध श्री गोस्वामी तुलसीदास कृत है। निर्माणकाल इसमें भी नहीं मिलता। त्रारम्भ के एक छंद से इतना मिलता है कि "जय नाम संवत्सर फागुन सुदी १ गुरुवार" इससे इस यन्य का बनना संवत् १६३६ में माना जा सकता है।

APPENDIX I.

APPENDIX I.

LIST OF THE BOOKS, THE FULL NOTICES OF WRICH ARE NOT GIVEN.

N.B.—The dates within brackets indicate the time of the author. Incomplete books are marked with asterisks.

No.	Name of author.	Name of book.	Date of composition.	Age of manuscript	Remarks.
128 129 130 131	Bali Rāma Besahu Rāma Bhadra Bhawānī Daṭṭa	Jhūlane Nāma Mālā Nakha Sikha Dughadiya Muhurta		1806	A kind of lexicon. Astrology.
132	Bhūpa	Bhāsa. Champū Sāmudrika		1662	Resident of Sahajād-
133	Bihāri Lāla	Bhàsa. Satasai	(1650)	1782	pur.) See Nos. 115 of 1900, } 27 of 1901 and 8
134 135 136	Charana Dàsa Chhema Rāma	Gyāna Swarodaya * Fațe Prakāsa	(1760)	1815 1815	See No. 70 of 1901. This book deals with Hindi rhetoric. Dr. Grierson mentions one poet of this name, who wrote on
137 138 139 140	Chințâmaņi Deva Dilípa	* Kavikula Kalpaţaru. Ada Jama . ,, Rāmāyana Tikā	(1650) (1620) (1859)	¥6¥	Nāyakā Bheda and who flourished in 1600 A. D. See No. 127 of 1900. See Nos. 53 of 1900 and 121 of 1902. He lived at Chain-
141 142 143 144 145	Ganesa Gokula Nāṭha Hansarāja Jasawanṭa Singha Jhāma Dāsa	*Ritu Varnana . Nāma Raṭua Mālā . Sancha Sāgara . Bhāṣā Bhūṣana . Rāmārṇava .	1800 1814 (1660) 1761	1806 1754 1801 1776-1800 1805 1806	pur. See No. 2 of 1900. See No. 135 of 1900. See No. 47 of 1902. See No. 21 of 1901.
147 148 149 150	Krisna Dāsa Lālaji Misra Malika Muhammada Jāyasi.	Dāna Lílā Koka Sāra Padmāv a ţí	1540	1826 1842 1761	A minor poet. See No. 54 of 1900 and Nos. 24, 25 and 53 of 1901.
$\begin{array}{c} 151 \\ 152 \end{array}$	Mani Rāma Manohara Dāsa	Sāra Sangraha Saṭa Prasní Satíka		17 9 3 1775	A collection. See No. 58 of 1901.
153 154	Niranjaní. Nanda Dāsa	Anekārtha Nāma Malā,	(1567)	1802	See No. 58 of 1902.
155 156	Nayana Sukha	Vaidya Manotsava Mantra Khanda Rasa	1592	1717 1799	See No. 34 of 1900. Tantra.
157 158	Nitya Natha Padmakara	Rațnăkara. Jagața vinoda	1815	1831	
159 160 161 162 163	Parasa Rāma Puhakara Sahajo Bāf Saradāpuṭra	Nakha Šikha Sahaja Prakāsa Kokā Sāra	1743 1700	 1794	See No. 6 of 1902. See No. 173 of 1902. Worm-eaten. See No. 129 of 1900.
164 165	Saradāra Sundara Dāsa	Rāma Līlā Prakāsa Sundara Singāra	$\begin{array}{c} 1849 \\ 1631 \end{array}$	1775	See No. 3 of 1902.
166 167 168 169 170	Syāma Sakhā Tulusi Dāsa	Rāma Dhyāna Sundarí Rāma Charita Mānasa * Hanumāna Bāhuka	1574 1623?	1767 1794 1796-97	See No. 1 of 1900 and Nos. 22 and 28 of 1901. See No. 60 of 1901.
171 172	Umā Daṭṭa Viswanaṭha Singha	Bāraha Másā Giṭa Raghunandana Satīka.	 1832	1833	See. No. 44 of 1900. The date, 1844, given in this note is of the ms. and not of the composition of the book.
		D1 - 1			

...

No.	Name of author.				Date of composition.	Age of manus-cripts.	Remarks.
174	Unknown	Authors	Bhāṣā Joṭiga Lag: Prakāsu.	ana		•••	
175	,,		Bhāṣā Samudrika] [•••	
176	٠,,	•••	* Fasta Nāmā	•••		•••	
177	,,	•••	Hitopadesa Satika	•••		1753	Commentary in Prose.
178	,, •	•••	* Indrajāla	•••	•••	•••	
179	19	• • •	* Javana Chikitsa	•••		•••	Prose.
180	*,	•••	* Kavitta Sangraha	•••	****	1000	
181	"	•••	Lilarasa Tarangini	• • •	•••	1833	
182	"	•••	* Pahelí	•••	•••	•••	T 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
183	"	•••	Sankāwalí	•	•••	•••	Explanation of disputed points in Tulasi Dasa's Ramayana.
184	,,	•••	Śrimada Bhāgavat	•••	.,,	•••	Prose.
185	,,	•••	Surya Purana	•••	•••		
186	70	•••	Ţulsí Sägara Setu	•••	1880	•••	Prose version of Ţula- ьі Dāsa's Rāmāyana.

INDEXES.

Index I 91 to 94
Index II 95 to 96

INDEX I.

NAMES OF AUTHORS.

[N.B.—The figures indicate the number of the notice.]

Abdura Rahamāna 50 Agra Dāsa 60 Klama 33 Ali Muhiba Khān 70 Ananda 37	Kcśava Dāsa
Aura Daga 60	Koguva Misea
Alama 33	Kesava Misra
Ali Muhiba Khān	Khumāna
Ananda	Kulanati Misaa
Anauda 37 Anauda Ghana 66 Bali Rāma 128 Beni 62, 86, 122 Besahu Rāma 129 Bhadra 130	Lala 119 11
Ananda Chana	1.51.55 37:
Ball Rama	Lālají Misra 14 Lāla Mukunda 6 Malika Muhammada 15 Mani Rāma 15 Manivāra Singha 4 Mauvāra Dāsa Niranjani 83, 84, 15 Maṭi Rāma 6 Mohana 1 Nanda Dāsa 153, 15 Narhari Bhāta 1 Nihāla 155, 156 Nihāla 105, 106, 107 Nitya Nāṭha 157 Niwāja 75 Padmākara 158, 158
Beni	Lata Mukunda
Besahu Kama	Manka Muhammada
Bhadra	Man) Rama
Bhadra 130 Bhawāní Daṭta 131 Bhikhārí Dāṣa 31, 32, 46, 61 Bhiṣama 12 Bhoja Rāja 59 Bhūpa 132 Bhūṣana 58 Bihārí Lāla 133, 134 Bikramādiṭṭa 72, 73 Brahma Datta 49	Maniyara Singha
Bhikhāri Dāsa 31, 32, 46, 61	Manohara Dasa Niranjani 83, 84, 15
Bhísama	Mati Rama 6
Bhoja Rāja	Mohana
Bhūpa	Nanda Dāsa
Bhūsana	Narhari Bhata
Bihāri Lāla 133, 134	Nayana Sukha
Bikramāditta	Nihāla 105, 106, 107
Brahma Datta	Nílakantha
Brija Lāla 63, 91	Nitya Natha
Chandra Sesara 100, 101, 102, 103	Niwāja
Charana Dasa	Padmākara
Chhema Rama	Parasa Rāma
Chintamani	Padmäkara
Dāsa 45, 109, 110	Prána Natha 29
Datta 39, 55, 120	Pratana
Bikramādiţţa 72, 73 Brahma Datţa 49 Brija Lāla 63, 91 Chandra Sesara 100, 101, 102, 103 Charana Dāsa 135 Chhema Rāma 136 Chintāmani 36, 137 Dāsa 45, 109, 110 Datţa 39, 55, 120 Deva 28, 41, 108, 138, 139 Dhani Rāma 116 Diggaja 38 Dilipa 140	Prayāga Dāsa 96 Puhakara 161 Purasoṭṭama 48 Raghunāṭba 14, 56, 112 Raghurāja Singha 17, 18 Rāma Charana Dūsa 44, 68 Rāma Nāṭha Upādhyāya 93
Dhani Pāma	Puhukara 181
Diamaia 38	Puracattana
Diggaja	Darkunitha 14 56 119
Diffipa A3	Dauburāja Cinaba 17 18
Dulana	Ding Channa Ding
Dwija	Dama Charana Dasa
rajaraja	Rama Natna Upadnyaya
Diggaja 38 Dilipa 140 Dulaha 43 Dwija 27 Gajarāja 71 Gangā Rāma 6 Gangā Rāma Tripāṭhí 16 Janesa 141 Ganjana 65 Calvale Mathe 15 23 35 142	Rasa Nidhi
Ganga Rama Tripathi	Rudrapratapa Singha.
fanesa	Sahajo Bai
Ganjana	Santosa Singha
Gokula Natha , 15, 23, 35, 142	Saradāra
Tomați Dăsa	Rāma Nāṭha Upādhyāya 93 Rasa Nidhi 94 Rudrapraṭāpa Singha 25 Sahajo Bāt 162 Santosa Singha 12f Saradāra 92, 164 Sāradāpuṭra 163 Sivānanda 77 Sukhadeva 123, 124 Sundara Dāsa 34, 57, 88, 111, 165
Forakha Nātha	Sivananda
Govinda Singha 5	Sukhadeva
Gulaba Singha	
Guru Datta Singha 42	Surata Singha 104
Hari Sahaya	Syama Sakhi 168
Hansarāja	The kura 24
Jai Kehari	Tulasi Dasa 13, 30, 79, 80, 81, 82, 87, 97, 98, 125,
lánakí Prasada 20	126, 127, 167, 168, 169, 170,
Igggwanta Singha 144	Ildaya Natha
Ganjana	11mg 11g(fg
Zanha 90	Viswanātha Singha . 22, 53, 54, 115, 172, 173
Capūra Chanda	Yadu Natha Śūkla
Capura Changa	Turn Traine Dawn

INDEX II.

NAMES OF MANUSCRIPTS NOTICED.

[N.B.—The figures indicate the number of the notice.]

Aguna-saguna-nirūpana-kathá	•		Kalki-churitra	•	•	•	•	65•
Alama-keli Alankāra-mālā	•	404	Kamarruddin-hulasa	: .			•	~
Alankāra-mālā	•	104 74	Kanaka-manjari . Kāvya-kalādhara Kāvya-nirnaya . Kedāra-pantha-prakāsa Khatamala-bāisi . Koka-sāra . Kosala-patha	.•	•	•	•	14
Amara-prakāsa	•	1	Vanya-Kalaunara .	• •	, •		•	R1
Amaresa-vilāsa	•	37	Kadāra puntha prakāta		•	•	•	100
Ananda-anubhava	٠.	17	Khatamala-hāja		•		•	70
Anandāmbunidhi Anekārtha-nāma-mālā	159	154	Vaka aim	•	•	•	140	163
Anekārtha-nāma-mālā	100,	22	Kosala-natha	•	•	•	170,	25
Anubhava-para-pradarsní-tíkā	122	139	Kosala-patha Kousalendra-rahasya	•	•	•	•	. 68
Astajāma Astāvakra Bāhū-sarvānga Bāja-nāmā Bālamukunda-lílā		4	Krinakanda-niyandha	•, •			•	66
Astāvakra	•	13	Kripākanda-nivandha Lāla-mukunda-vilāsa	•	•	•	•	64
Bāhū-sarvānga	•	69	Lalita-lalāma		'		•	67
Bāja nāmā	•	12	Lalița-lalăma Lâlițya-lață	•	•	•	•	55
Balamukunda-lila	•	121	Líla-rasa-taranginí				•	181
Bālamíki-rāmāyaņa Bālamíki-rāmāyaņa-slokārtha-prakāsa	•	$\frac{121}{24}$	Lila-rasa-tarangini Mantra-khanda-rasa-rat	nā kara	•	•	. '	157
Balamiki-ramayana-stokarina-piakasa	•	171	Maradana-rasarnava .		. '	_	٠.	124
Bāraha-māsa	٠.	80	Moksa-patha-prakāsa		٠.	•		78
Barawa-ramayana.		184	Moksa-patha-prakāsa Nakha-sikha	26, 50	. 90.	130.	160.	161
Barawa-ramayana. Barawa-ramayana. Barawa-ramahatmya Bajana Bajana Bharata-vilasa	٠.	18	Nāma-mālā			,	,	129
Bhagawat-manaimya		173	Nāma-mālā Nāma-ratna-mālā .			-		142
Bhajana milian	٠.	38	Nāyakā-bheda-barawā-c	hhanda				76
Bharata-vilasa		144	Padmāvatí					150
Bhāsā-bhūsana Bhāsā-jyotiga-lagana-prakāsa	٠.	174	Padmāvatí					182
Bhasa-jyonga-ragana-prakasa		99	Panchänga-darsana. Pāravaṭi-mangala Pingala Prāna-sukha Prema-ṭaranga-chandril Rādhā-krisṇa-vilāsa			,		119
Bhāṣā-rāmāyaṇa Bhāsa-sāmudrika		175	Pāravati-mangala .					127
201 2 2 (1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1	_	47	Pingala				. 36,	123
Bhayartha-chandrika Bhaya-vilasa Bhupa-bhusana Champu-samudrika-bhusa Chandi-charitra		41	Prana-sukha				•	3
Bhava-viiasa Dhara bhucana		117	Prema-taranga-chandril	kā, .				28
Ohaman aamudrika hhasa		132	Rādhā-krisņa-vilāsa					15
Chandi aboritys		5						
Chhanda neakāss		32	Rāga-viveka .					48
Chandi-charitra Chhanda-prakāsa Chhandārnava		31	Rāma-bhakţí-prakāsikā					20
Chhandawali-ramayana	1	82	Rāga-viveka Rāma-bhakţi-prakāsikā Rāma-chandra-chandri Rāma-chariţa-mānasa- Rāma-chariṭa-mānasa-	kā .	:			21
Dala singhānanda-prakāsa-saṭasaiyā	•	110	Rāma-chariţa-mānasa		. •	167	, 168,	169
Dāna-lilā	4	148	Rāma-charița-mānasa-n	nukțăva	lí			
Dāna-lilā Dipa-prakāsa		. 49	Rama-dhvana-windari		_	_		166
Du-ghadiyā-Muhūrta-bhāsā t		131	Rāma-gunodava .					116
Fasta-nāmā		176	Rāmāgyā-saganauti					87
Fatchs-prakass		136						164
Latona-brakame		172	Ramamuktawali				•	97
Cita rachunandana gatika			Tentille militarie ment			•		128
Fateha-prakāsa Gita-raghunandana-satika	٠.	85	Rāma-nahachhū .		v		- 40	4.4
Carakha-sara	•	85 84	Rāma-nahachhū Rāmārņava		u .	145	, 146	, 147
Gorakha-sara Gyana-hachana-chūrnikā	•	85 84 16	Rāma-nahachhū . Rāmārņava . Rāma-salákā .	• ;••		145	, 146	, 147 98
Gorakha-sara Gyāna-bachana-chūrņikā Gyāna-pradipa	•	85 84 16 . 34	Rāma-nahachhū Rāmārnava Rāma-salákā Rāmāyaṇa			145	, 146 9	, 147 98 , 115
Gorakha-sara Gyāna-bachana-chūrņikā Gyāna-pradipa	•	85 84 16 . 34 135	Rāma-nahachhū Rāmārņava Rāma-salákā Rāmāyaṇa Rāmāyaṇa-Mahānātak	a .	•	145	, 146 9	, 147 98 , 115 95
Gorakha-sara Gyāna-bachana-chūrņikā Gyāna-pradipa	•	85 84 16 . 34 135 100	Rāma-nahachhū Rāmārṇava Rāma-salákā Rāmāyaṇa Rāmāyaṇa-Mahānātak Rāmāyaṇa-tíká	a .		145	, 146 9	, 147 98 , 115 95 140
Gorakha-sara Gyāna-bachana-chūrnikā Gyána-pradípa Gyana-samudra Gyāna-swarodaya Hammíra-hutha	•	85 84 16 . 34 135 100 170	Rāma-líla-prakāsa Rāma-mukṭāwalí Rāma-nahachhū Rūmārṇava Rūma-salákā Rāmāyaṇa Rāmāyaṇa-Mahānātak Rāmāyaṇa-tíká Rūmāswamedha	•	-	-		() O
Gorakha-sara Gyána-bachana-chűrniká Gyána-pradípa Gyana-samudra Gyána-swarodaya Hammíra-hatha Hanumāna-báhuka Hanumāna-bāla-charitra	•	85 84 16 . 34 135 100 170 91	Rasa-bhūsana-grantha		•			93
Gorakha-sara Gyána-bachana-chŭrņikā Gyána-pradipa Gyana-samudra Gyāna-swarodaya Hammíra-hatha Hanumāna-báhuka Hanumāna-bála-charitra Hari-bhakti-vilāsa	•	85 84 16 . 34 135 100 170 91 101	Rasa-bhúsana-grantha Rasa-dípa-kávya	• •		•	•	. 93 42
Gorakha-sara Gyāna-bachana-chūrņikā Gyána-pradipa Gyana-samudra Gyāna-swarodaya Hammira-hatha Hanumāna-báhuka Hanumāna-bāla-charitra Hari-bhakţi-vilāsa Hari-bhakţi-vilāsa	•	85 84 16 . 34 135 100 170 91 101 . 72	Rasa-bhûsana-grantha Rasa-dípa-kávya Rasa-mālikā-grantha		•	•		93 42 . 44
Gorakha-sara Gyāna-bachana-chūrņikā Gyána-pradipa Gyana-samudra Gyāna-swarodaya Hammira-hatha Hanumāna-báhuka Hanumāna-bāla-charitra Hari-bhakţi-vilāsa Hari-bhakţi-vilāsa	•	85 84 16 . 34 135 100 170 91 101 . 72 73	Rasa-bhūsana-grantha Rasa-dípa-kávya Rasa-mūlikū-grantha Rasamaya-grantha	• • •	•	•	•	93 42 44 123
Gorakha-sara Gyána-bachana-chűrniká Gyána-pradípa Gyana-samudra Gyána-swarodaya Hammíra-hatha Hanumāna-báhuka Hanumāna-báhuka Hari-bhakti-vilāsa Hari-bhakti-vilāsa-pūrbārdha Hari-bhakţi-vilāsa-uṭṭarārdha	•	85 84 16 . 34 135 100 170 91 101 . 72 73	Rasa-bhùsana-grantha Rasa-dípa-kávya Rasa-mūlikā-grantha Rasamava-grantha Rasa-mūla			•	•	93 42 . 44 123 . 113
Gorakha-sara Gyāna-bachana-chūrņikā Gyána-pradipa Gyana-samudra Gyāna-swarodaya Hammira-hatha Hanumāna-báhuka Hanumāna-bāla-charitra Hari-bhakţi-vilāsa Hari-bhakţi-vilāsa-pūrbārdha Hari-bhakţi-vilāsa-uţţarārdha Hitopadesa	•	85 84 16 . 34 135 100 170 91 101 . 72 73 . 96	Rasa-bhùsana-grantha Rasa-dípa-kávya Rasa-mūlikā-grantha Rasamaya-grantha Rasa-mūla Rasa-rahasya	• • •	•	•	•	. 93 42 . 44 123 . 113
Gorakha-sara Gyāna-bachana-chūrņikā Gyána-pradipa Gyana-samudra Gyāna-swarodaya Hammira-hatha Hanumāna-báhuka Hanumāna-báhuka Hari-bhakţi-vilāsa Hari-bhakţi-vilāsa-pūrbārdha Hari-bhakţi-vilāsa-uţţarārdha Hitopadesa Hitopadesa	•	85 84 16 34 135 100 170 91 101 72 73 96 177 60	Rasa-bhùsana-grantha Rasa-dípa-kávya Rasa-mūlikā-grantha Rasamava-grantha Rasa-mūla Rasa-rahasya Rasa-sára			•		. 93 42 . 44 123 . 113 51
Gorakha-sara Gyána-bachana-chŭrnikā Gyána-pradípa Gyana-samudra Gyāna-swarodaya Hammíra-hatha Hanumāna-báhuka Hanumāna-bála-charitra Hari-bhakti-vilāsa Hari-bhakti-vilāsa-pūrbārdha Hari-bhakti-vilāsa-uṭṭarārdha Hiṭopadesa Hiṭopadesa Hiṭopadesa	•	85 84 16 34 135 100 170 91 101 72 73 96 177 60	Rasa-bhùsana-grantha Rasa-dípa-kávya Rasa-mūli kū-grantha Rasamava-grantha Rasa-mūla Rasa-rahasya Rasa-sára Rasi ka-mohana-kūvya					93 42 . 44 123 . 113 51 . 45
Gorakha-sara Gyāna-bachana-chūrņikā Gyána-pradipa Gyana-samudra Gyāna-swarodaya Hammíra-hatha Hanumāna-báhuka Hanumāna-báhuka Hari-bhakṭi-vilāsa Hari-bhakṭi-vilāsa-pūrbārdha Hari-bhakṭi-vilāsa-uṭṭarārdha Hitopadesa Hitopadesa Hitopadesa Hitopadesa-upasanā bāvanī		85 84 16 34 135 100 170 91 101 72 73 96 177 60 178	Rasa-bhūsana-grantha Rasa-dípa-kávya Rasa-mūlikā-grantha Rasamava-grantha Rasa-mūla Rasa-rahasya Rasa-sára Rasika-mohana-kāvya Rasika-priyā					93 42 44 123 113 51 45 56
Gorakha-sara Gyāna-bachana-chūrņikā Gyána-pradipa Gyana-samudra Gyāna-swarodaya Hammíra-hatha Hanumāna-báhuka Hanumāna-báhuka Hari-bhakţi-vilāsa Hari-bhakţi-vilāsa-utṭarārdha Hari-bhakţi-vilāsa-utṭarārdha Hitopadesa Hitopadesa Hitopadesa-upasanā bāvani Indiajāla Jagta-mohana		85 84 16 34 135 100 170 91 101 72 73 96 177 60 178 112 8, 159	Rasa-bhūsana-grantha Rasa-dípa-kávya Rasa-mālikā-grantha Rasa-mūla Rasa-mūla Rasa-rahasya Rasa-sára Rasi ka-mohana-kāvya Rasi ka-priyā Rasika-vilāsa					93 42 44 123 113 51 45 56 89
Gorakha-sara Gyāna-bachana-chūrnikā Gyāna-pradípa Gyana-samudra Gyāna-swarodaya Hammíra-hatha Hanumāna-bāhuka Hanumāna-bāhuka Hari-bhakṭi-vilāsa Hari-bhakṭi-vilāsa-pūrbārdha Hari-bhakṭi-vilāsa-uṭṭarārdha Hiṭopadesa Hiṭopadesa satíka Hiṭopadesa-upasanā bāvanī Indrajāla Jagṭa-mohana Jagata-vinoda		85 84 16 34 135 100 170 91 101 72 73 96 177 60 178 112 8, 159 40	Rasa-bhūsana-grantha Rasa-dípa-kávya Rasa-mūlikā-grantha Rasa-mūla Rasa-mūla Rasa-rahasya Rasa-sára Rasika-mohana-kāvya Rasika-priyā Rasika-vilāsa Rasika-vinoda-granth	B				93 42 44 123 113 51 45 56 89 59
Gorakha-sara Gyāna-bachana-chūrnikā Gyāna-pradípa Gyana-samudra Gyāna-swarodaya Hammíra-hatha Hanumāna-bāhuka Hanumāna-bāhuka Hari-bhakṭi-vilāsa Hari-bhakṭi-vilāsa-pūrbārdha Hari-bhakṭi-vilāsa-uṭṭarārdha Hiṭopadesa Hiṭopadesa satíka Hiṭopadesa-upasanā bāvani Indrajāla Jagṭa-mohana Jagaṭa-vinoda Jahāngīra-chandrikā Jának-f-mangala	15	85 84 16 34 135 100 170 91 101 72 73 96 177 60 178 112 8, 159 40	Rasa-bhūsana-grantha Rasa-dípa-kávya Rasa-mūlikā-grantha Rasa-mūla Rasa-mūla Rasa-rahasya Rasa-sára Rasi-ka-mohana-kāvya Rasika-priyā Rasika-vilāsa Rasika-vinoda-grantha	a .				93 42 44 123 113 51 45 56 89 59 103
Gorakha-sara Gyāna-bachana-chūrnikā Gyāna-pradípa Gyana-samudra Gyāna-swarodaya Hammíra-hatha Hanumāna-bāhuka Hanumāna-bāhuka Hari-bhakṭi-vilāsa Hari-bhakṭi-vilāsa-pūrbārdha Hari-bhakṭi-vilāsa-uṭṭarārdha Hiṭopadesa Hiṭopadesa satíka Hiṭopadesa-upasanā bāvani Indiajāla Jagṭa-mohana Jagaṭa-vinoda Jahāngīra-chandrikā Jánakf-mangala Javana-chikiṭsā	15	85 84 16 34 135 100 170 91 101 72 73 96 177 60 178 112 8, 159 40 79	Rasa-bhūsana-grantha Rasa-dípa-kávya Rasa-mūlikā-grantha Rasa-mūla Rasa-mūla Rasa-rahasya Rasa-sára Rasi-ka-mohana-kāvya Rasika-priyā Rasika-vilāsa Rasika-vinoda-grantha Ratana-hajārā Ritu-varnana	B				93 42 44 123 113 51 45 56 89 59 103 94
Gorakha-sara Gyāna-bachana-chūrnikā Gyāna-pradípa Gyana-samudra Gyāna-swarodaya Hammíra-hatha Hanumāna-bāhuka Hanumāna-bāhuka Hari-bhakṭi-vilāsa Hari-bhakṭi-vilāsa-pūrbārdha Hari-bhakṭi-vilāsa-uṭṭarārdha Hiṭopadesa Hiṭopadesa satíka Hiṭopadesa-upasanā bāvani Indrajāla Jagṭa-mohana Jagaṭa-vinoda Jahāngīra-chandrikā Jának-mangala Javana-chikiṭsā	15	85 84 16 34 135 100 170 91 101 72 73 96 177 60 178 112 8, 159 40 79 179	Rasa-bhūsana-grantha Rasa-dípa-kávya Rasa-mūlikū-grantha Rasamava-grantha Rasa-mūla Rasa-rahasya Rasa-sára Rasika-mohana-kāvya Rasika-priyā Rasika-vilāsa Rasika-vinoda-granth Ratana-hajārā Ritu-varnana Rukminí-mangala	B				93 42 44 123 113 51 45 56 89 59 103 94 111
Gorakha-sara Gyāna-bachana-chūrnikā Gyāna-pradípa Gyana-samudra Gyāna-swarodaya Hammíra-hatha Hanumāna-bāhuka Hanumāna-bāhuka Hari-bhakţi-vilāsa Hari-bhakţi-vilāsa-pūrbārdha Hari-bhakţi-vilāsa-uţṭarārdha Hitopadesa Hitopadesa satīka Hitopadesa-upasanā bāvanī Indrajāla Jagṭa-mohana Jagaṭa-vinoda Jahāngſra-chandrikā Jánakſ-mangala Javana-chikiṭsā Jhulane Kabi-kula-kalpa-ṭaru	15	85 84 16 34 135 100 91 101 72 73 96 177 60 178 112 8, 159 40 79 179 128 137	Rasa-bhūsana-grantha Rasa-dípa-kávya Rasa-mūlikū-grantha Rasamava-grantha Rasa-mūla Rasa-rahasya Rasa-sára Rasika-mohana-kāvya Rasika-priyā Rasika-vilāsa Rasika-vilāsa Rasika-vinoda-granth Ratans-hajārā Ritu-varnana Rukmini-mangala Sahaja-prakāsa	a .				93 42 44 123 113 51 45 56 89 59 103 94 111
Gorakha-sara Gyāna-bachana-chūrnikā Gyána-pradípa Gyana-samudra Gyāna-swarodaya Hammíra-hutha Hanumāna-bāhuka Hanumāna-bāla-charitra Hari-bhakti-vilāsa Hari-bhakti-vilāsa-pūrbārdha Hari-bhakti-vilāsa-uṭṭarārdha Hiṭopadesa Hiṭopadesa satīka Hiṭopadesa-upasanā bāvanī Indrajāla Jagṭa-mohana Jagaṭa-vinoda Jahāngſra-chandrikā Jánakſ-mangala Javana-chikiṭsā Jhlane Kabi-kula-kalpa-ṭaru Kabi-kula-kanthā-bharaṇa	15	85 84 16 34 135 100 170 91 101 72 73 96 177 60 178 112 8, 159 40 79 179 128 137	Rasa-bhūsana-grantha Rasa-dípa-kávya Rasa-mūlikā-grantha Rasamava-grantha Rasa-mūla Rasa-rahasya Rasa-sára Rasi ka-mohana-kāvya Rasika-priyā Rasika-vilāsa Rasika-vilāsa Rasika-vinoda-granth Ratana-hajārā Ritu-varnana Rukmini-mangala Sahaja-prakāsa Sāhitya-siromaņi	B				93 42 44 123 113 51 45 56 89 59 103 94 111
Gorakha-sara Gyāna-bachana-chūrnikā Gyána-pradípa Gyana-samudra Gyāna-swarodaya Hammíra-hatha Hanumāna-bāhuka Hanumāna-bāla-chariṭra Hari-bhakṭi-vilāsa-pūrbārdha Hari-bhakṭi-vilāsa-uṭṭarārdha Hiṭopadesa Hiṭopadesa satika Hiṭopadesa-upasanā bāvanī Indrajāla Jagṭa-mohana Jagaṭa-vinoda Jahāngíra-chandrikā Jánakſ-mangala Javana-chikiṭsā Jh lane Kabi-kula-kalpa-ṭaru Kabi-kula-kanṭhā-bharaṇa Kabi-nukha-mandana	15	85 84 16 34 135 100 170 91 101 72 73 96 177 60 178 112 8, 159 40 79 179 128 137 43	Rasa-bhūsana-grantha Rasa-dípa-kávya Rasa-mūli kā-grantha Rasa-mūla Rasa-mūla Rasa-rahasya Rasa-sára Rasi ka-mohana-kāvya Rasi ka-priyā Rasi ka-priyā Rasi ka-vilāsa Rasi ka-vilāsa Rasi ka-vinoda-granth Ratana-hajārā Ritu-varnana Rukminí-mangala Sahaja-prakāsa Sāhitya-siromaņi Sāhitya-siromaņi	B				93 42 44 123 113 51 45 56 89 59 103 111 162
Gorakha-sara Gyāna-bachana-chūrnikā Gyāna-pradípa Gyana-samudra Gyāna-swarodaya Hammíra-hatha Hanumāna-bāhuka Hanumāna-bāla-chariṭra Hari-bhakṭi-vilāsa-pūrbārdha Hari-bhakṭi-vilāsa-uṭṭarārdha Hiṭopadesa Hiṭopadesa satíka Hiṭopadesa-upasanā bāvani Indrajāla Jagṭa-winoda Jahāngíra-chandrikā Jánakí-mangala Javana-chikiṭsā Jhulane Kabi-kula-kanṭhā-bharaṇa Kabi-mukha-mandana Kabi-mukha-mandana	15	85 84 16 34 135 100 170 91 101 72 73 96 177 60 178 112 8, 159 40 79 179 128 137 43 35	Rasa-bhūsana-grantha Rasa-dípa-kávya Rasa-mūlikā-grantha Rasa-mūla Rasa-mūla Rasa-rahasya Rasa-sára Rasika-mohana-kāvya Rasika-priyā Rasika-vilāsa Rasika-vilāsa Ratana-hajārā Ritu-varnana Rukmini-mangala Sahaja-prakāsa Sāhitya-siromaņi Sāhitya-sudhākara Sajjana-vilāsa	8				93 42 44 123 113 51 45 56 89 59 103 11 116 105
Gorakha-sara Gyāna-bachana-chūrnikā Gyána-pradípa Gyana-samudra Gyāna-swarodaya Hammíra-hatha Hanumāna-bāhuka Hanumāna-bāla-chariṭra Hari-bhakṭi-vilāsa Hari-bhakṭi-vilāsa-pūrbārdha Hari-bhakṭi-vilāsa-uṭṭarārdha Hiṭopadesa Hiṭopadesa satika Hiṭopadesa-upasanā bāvani Indrajāla Jagṭa-mohana Jagaṭa-vinoda Jahāngíra-chandrikā Jánaki-mangala Javana-chikiṭsā Jhulane Kabi-kula-kanṭhū-bharana Kabi-mukha-mandana Kabi-mukha-mandana Kabi-ttas of Beni Kabiṭtas of Mahípa-nārāyana and oth	15	85 84 16 34 135 100 170 91 101 72 73 96 177 60 178 112 8, 159 40 79 179 128 137 43 35 86	Rasa-bhūsana-grantha Rasa-dípa-kávya Rasa-mūli kā-grantha Rasa-mūla Rasa-mūla Rasa-rahasya Rasa-sára Rasi ka-mohana-kāvya Rasi ka-priyā Rasi ka-priyā Rasi ka-vilāsa Rasi ka-vinoda-grantha Ratana-hajārā Ritu-varnana Rukminí-mangala Sahaja-prakāsa Sāhitya-siromani Sāhitya-sudhākara Sajjana-vilāsa Sakuntalopākhyāna	8				93 42 44 123 113 51 45 56 89 59 103 94 111 105 92 33
Gorakha-sara Gyāna-bachana-chūrnikā Gyána-pradípa Gyana-samudra Gyāna-swarodaya Hammíra-hatha Hanumāna-bāhuka Hanumāna-bāla-chariṭra Hari-bhakṭi-vilāsa-pūrbārdha Hari-bhakṭi-vilāsa-uṭṭarārdha Hiṭopadesa Hiṭopadesa satika Hiṭopadesa-upasanā bāvanī Indrajāla Jagṭa-mohana Jagaṭa-vinoda Jahāngíra-chandrikā Jánakſ-mangala Javana-chikiṭsā Jh lane Kabi-kula-kalpa-ṭaru Kabi-kula-kanṭhā-bharaṇa Kabi-nukha-mandana	15	85 84 16 34 135 100 170 91 101 72 73 96 177 60 178 112 8, 159 40 79 179 128 137 43 35	Rasa-bhūsana-grantha Rasa-dípa-kávya Rasa-mūlikā-grantha Rasa-mūla Rasa-mūla Rasa-rahasya Rasa-sára Rasika-mohana-kāvya Rasika-priyā Rasika-vilāsa Rasika-vilāsa Rasika-vinoda-granth Ratana-hajārā Ritu-varnana Rukminí-mangala Sahitya-siromani Sāhitya-siromani Sāhitya-siromani Sāhitya-sudhākara Sajjana-vilāsa Sakuntalopākhyāna Saneha-ságara	8				93 42 44 123 113 51 45 56 89 59 103 94 111

Śānta-śataka					,		54	Sūrya-purāņa
Sara-sangraha						1	51	Suvritta hara 71
Sata-prainf Satika .					,	1	52	Swarodaya
Sata-prasnottari							83	Ţualsí-sāgara-setu 186
Satasai					133	3, 1	34	Udditta-kirti-prakāša
Sinhasana-battisi							6	Uttama-kavya-grantha 53
Siţārām-guņārņava-rāmā	yan	a				- :	23	Vaidya-manotsava 155, 156
Sivarāja-bhūsana	•			٠,			58	Vairagya-sandipini 81
Bringara							62	Vingyartha-kaumudí 52
Bringara-nirnaya .							46	Vinaya-sāra
Sujana-vinoda							08	
Sundara-sata-singara .						1	11	Viveka-vilāsa 102
Sundara-sringara .							65	
Sundara-syāma-vilāsa					,		57	Vrihaspati-kānda 30
Sunita-ratnakāra-nijisār	R.					. 1	07	Yoga-vasistha 8
Suniti-pantha-prakasa							06	
•								